महा कुंडली

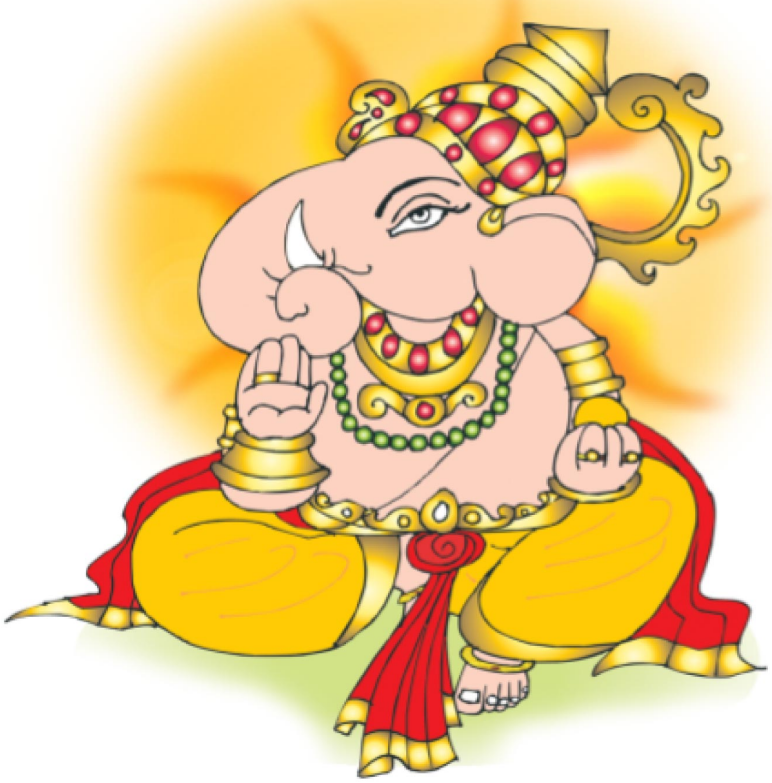

AstroSage

World's No. 1 Astrology Portal & App

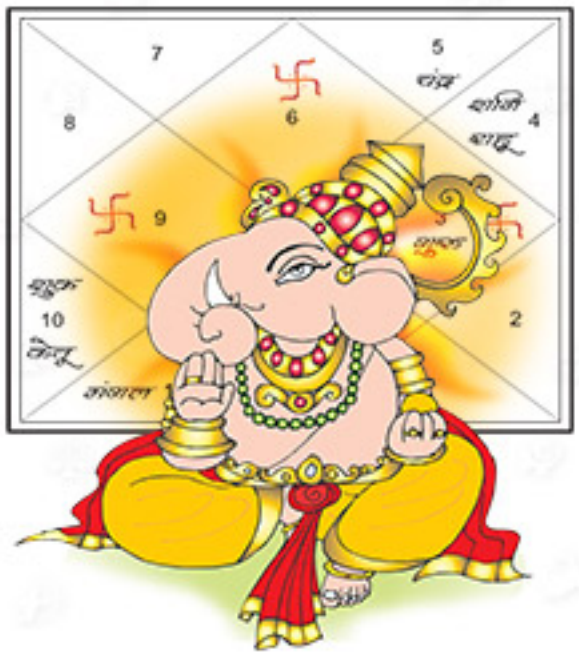

अवकहडा चक्र

पाया (राशि आधारित)	लोह
वर्ण	क्षत्रिय
योनी	गज
गण	मानव
वश्य	चतुष्पद
नाड़ी	मध्य
दशा भोग्य	Ven 15 Y 5 M 1 D
लग्न	वृषभ
लग्न स्वामी	शुक्र
राशि	मेष
राशि स्वामी	मंगल
नक्षत्र–पद	भरणी 1
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
जुलियन दिन	2443744
सूर्य राशि (हिन्दू)	सिंह
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
अयनांश	023.33.30
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023.26.31
साम्पातिक काल	21.38.53

व्यक्ति विवरण

लिंग	Female
दिनांक	23 : 8 : 1978
समय	23 : 53 : 18
दिन	बुधवार
इष्टकाल	044-57-39
जन्म स्थान	Delhi
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	28 : 40 : N
रेखांश	77 : 13 : E
स्थानीय समय संशोधन	00:21:07
युद्ध कालिक संशोधन	00:00:00
स्थानीय औसत समय	23:32:10
जन्म समय – जीएमटी	18:23:18
तिथि	षष्ठी
हिन्दू दिन	बुधवार
पक्ष	कृष्ण
योग	वृद्धि
करण	वणिज
सूर्योदय	05:54:14
सूर्यास्त	18:53:28
दिन अवधि	12:59:13

घटक (अशुभ)

दिन	रवि
करण	बव
लग्न	मेष
माह	कार्तिक
नक्षत्र	मघा
प्रहर	1
राशि	मेश
तिथि	1, 6, 11
योग	विषकुम्भ
ग्रह	बुध

अनुकूल बिन्दु

भाग्यांक	5
शुभ अंक	2, 7, 9
अशुभ अंक	4, 8
शुभ वर्ष	14,23,32,41,50
भाग्यशाली दिन	गुरु
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, चंद्र
मित्र राशियां	मिथुन, सिंह, धनु
शुभ लग्न	कर्क, तुला, धनु, कुम्भ
भाग्यशाली धातु	सुवर्ण
भाग्यशाली रत्न	लाल, मूंगा

पारम्परिक

नाम	Pooja Sharma	**जुलियन दिन**	2443744	**लग्न स्वामी**	शुक्र	**दशा भोग्य**	Ven 15 Y 5 M 1 D
लिंग	Female	**अयनांश नाम**	लाहिरी	**लग्न**	वृषभ	**करण**	वणिज
दिनांक	23.8.1978	**अयनांश**	023.33.30	**योग**	वृद्धि	**नक्षत्र स्वामी**	शुक्र
दिन	बुधवार	**जन्म स्थान**	Delhi	**तिथि**	षष्ठी	**नक्षत्र–पद**	भरणी–1
समय	23.53.18	**रेखांश**	77.13.E	**सूर्यास्त**	18.53.28	**राशि स्वामी**	मंगल
साम्पातिक काल	21.38.53	**अक्षांश**	28.40.N	**सूर्योदय**	05.54.14	**राशि**	मेष

लग्न चक्र

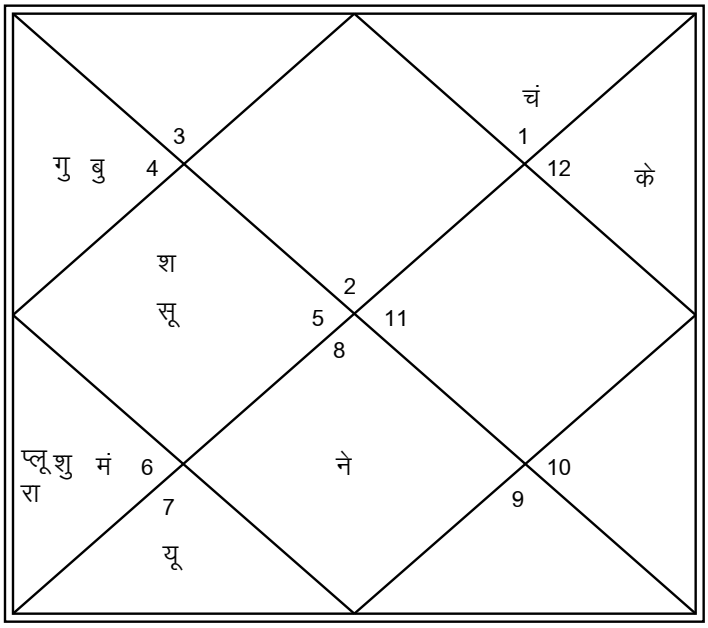

नवमांश चक्र

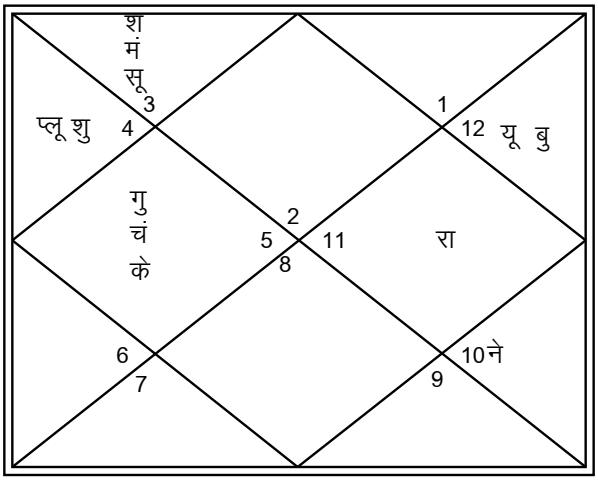

विंशोत्तरी दशा

शुक्र –20 वर्ष 23/ 8/78 से 25/ 1/94	
शुक्र	00/00/00
सूर्य	25/5/78
चंद्र	25/1/80
मंगल	25/3/81
राहु	25/3/84
गुरू	25/11/86
शनि	25/1/90
बुध	25/11/92
केतु	25/1/94

सूर्य –6 वर्ष 25/ 1/94 से 25/ 1/00	
सूर्य	13/5/94
चंद्र	13/11/94
मंगल	19/3/95
राहु	13/2/96
गुरू	1/12/96
शनि	13/11/97
बुध	19/9/98
केतु	25/1/99
शुक्र	25/1/00

चंद्र –10 वर्ष 25/ 1/00 से 25/ 1/10	
चंद्र	25/11/00
मंगल	25/6/01
राहु	25/12/02
गुरू	25/4/04
शनि	25/11/05
बुध	25/4/07
केतु	25/11/07
शुक्र	25/7/09
सूर्य	25/1/10

मंगल –7 वर्ष 25/ 1/10 से 25/ 1/17	
मंगल	22/6/10
राहु	10/7/11
गुरू	16/6/12
शनि	25/7/13
बुध	22/7/14
केतु	19/12/14
शुक्र	19/2/16
सूर्य	25/6/16
चंद्र	25/1/17

राहु –18 वर्ष 25/ 1/17 से 25/ 1/35	
राहु	7/10/19
गुरू	1/3/22
शनि	7/1/25
बुध	25/7/27
केतु	13/8/28
शुक्र	13/8/31
सूर्य	7/7/32
चंद्र	7/1/34
मंगल	25/1/35

गुरू –16 वर्ष 25/ 1/35 से 25/ 1/51	
गुरू	13/3/37
शनि	25/9/39
बुध	1/1/42
केतु	7/12/42
शुक्र	7/8/45
सूर्य	25/5/46
चंद्र	25/9/47
मंगल	1/9/48
राहु	25/1/51

शनि –19 वर्ष 25/ 1/51 से 25/ 1/70	
शनि	28/1/54
बुध	7/10/56
केतु	16/11/57
शुक्र	16/1/61
सूर्य	28/12/61
चंद्र	28/7/63
मंगल	7/9/64
राहु	13/7/67
गुरू	25/1/70

बुध –17 वर्ष 25/ 1/70 से 25/ 1/87	
बुध	22/6/72
केतु	19/6/73
शुक्र	19/4/76
सूर्य	25/2/77
चंद्र	25/7/78
मंगल	22/7/79
राहु	10/2/82
गुरू	16/5/84
शनि	25/1/87

केतु –7 वर्ष 25/ 1/87 से 25/ 1/94	
केतु	22/6/87
शुक्र	22/8/88
सूर्य	28/12/88
चंद्र	28/7/89
मंगल	25/12/89
राहु	13/1/91
गुरू	19/12/91
शनि	28/1/93
बुध	25/1/94

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अक्षांश	नक्षत्र	पद
लग्न	वृषभ	15.30.14	रोहिणी	2
सूर्य	सिंह	06.42.30	मघा	3
चंद्र	मेष	16.23.10	भरणी	1
मंगल	कन्या	18.40.48	हस्त	3
बुध (व)	कर्क	28.16.43	आश्लेषा	4
गुरू	कर्क	03.54.40	पुष्य	1
शुक्र	कन्या	22.40.42	हस्त	4
शनि	सिंह	09.57.57	मघा	3
राहु (व)	कन्या	04.33.40	उ0फाल्गुनी	3
केतु (व)	मीन	04.33.40	उ0भाद्रपद	1
यूरे	तुला	19.15.30	स्वाती	4
नेप (व)	वृश्चिक	21.58.28	ज्येष्ठा	2
प्लू	कन्या	21.19.34	हस्त	4

अष्टकवर्ग तालिका

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	5	5	5	2	4	5	2	4	3	1	5	7
चंद्र	3	5	6	5	0	2	7	3	2	7	6	3
मंगल	4	5	5	3	2	3	3	2	4	1	4	3
बुध	5	7	6	5	2	5	3	4	6	3	4	4
गुरू	4	6	4	5	5	4	8	3	4	4	5	4
शुक्र	4	7	5	5	3	3	2	6	5	3	3	6
शनि	1	4	6	3	4	2	2	3	3	2	6	3
योग	26	39	37	28	20	24	27	25	27	21	33	30

चलित तालिका

भाव	राशि	भाव आरंभ	राशि	भाव मध्य
1	मेष	27.43.16	वृषभ	15.30.14
2	वृषभ	27.43.16	मिथुन	09.56.17
3	मिथुन	22.09.19	कर्क	04.22.21
4	कर्क	16.35.23	कर्क	28.48.24
5	सिंह	16.35.23	कन्या	04.22.21
6	कन्या	22.09.19	तुला	09.56.17
7	तुला	27.43.16	वृश्चिक	15.30.14
8	वृश्चिक	27.43.16	धनु	09.56.17
9	धनु	22.09.19	मकर	04.22.21
10	मकर	16.35.23	मकर	28.48.24
11	कुंभ	16.35.23	मीन	04.22.21
12	मीन	22.09.19	मेष	09.56.17

।। पंचांग फल ।।

जन्म वार, जन्म तिथि, जन्म नक्षत्र, जन्म योग तथा जन्म करण इन पाँचों को मिलाकर पंचांग फल की गणना की गई है। जन्म के समय उपरोक्त सभी पाँचों कारकों को ध्यान में रखने के बाद जातक के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव की गणना की जाती है। आपकी कुंडली में पंचांग फल निम्न प्रकार वर्णित है:

तिथि: षष्ठी

आपका जन्म षष्ठी तिथि में हुआ है। इस तिथि में जन्म लेने की वजह से हो सकता है आपके शरीर पर कोई निशान हो। आप दृंढ निश्चयी होंगे और जीवन में बड़े फैसले लेंगे। आप सुंदर और करिश्माई व्यक्तित्व के धनी होंगे। यह छवि आपकी बुद्धिमता को प्रदर्शित करेगी। आपका झुकाव विपरीत लिंग के लोगों के प्रति रहेगा। इसके अलावा आपके अंदर धन और प्रसिद्धि पाने की लालसा रहेगी।

वार: बुधवार

आपका जन्म बुधवार के दिन हुआ है इसलिए आप सुंदर चेहरे और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होंगे। आप अपनी भाषा और वाणी से सामाजिक जीवन में हर किसी व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षति कर लेंगे। इसके अलावा कार्य स्थल पर भी आप बुद्धिमानी और कार्य कौशल से सबको प्रभावित करेंगे। कूटनीतिक व्यवहार करने में आपको महारथ प्राप्त होगी। आप लेखन, कविता और पत्रकारिता जैसे क्षेत्र को अपना पेशा बनाएंगे।

योग: वृद्धि

इस योग में जन्म लेने से आप शारीरिक और व्यवहारिक दोनों रूप से आकर्षक होंगे। चरित्रवान होने के साथ–साथ आप बुद्धिमान भी होंगे। आप आयात और निर्यात से जुड़ा व्यवसाय कर सकते हैं। वृद्धि योग में जन्म लेने का अच्छा प्रभाव केवल आप ही नहीं बलकि आपकी बीवी और बच्चों पर भी देखने को मिलेगा। इसके फलस्वरूप उनमें भी आपकी तरह सामान गुण होंगे।

करण: वणिज

आपका जन्म वणिक करण में हुआ है। इसके प्रभाव से आप कई प्रकार की कलाओं में निपुण होंगे। आप हमेशा खुश और संतुष्ट रहेंगे। आप जिस समाज में रहेंगे वहां आपका सम्मान किया जाएगा। आप स्वयं का व्यवसाय करके अपनी आजीविका चलाएंगे। आप बहुत चालाक होंगे लेकिन आपके चेहरे पर सदा मुस्कुराहट रहेगी।

नक्षत्र: भरणी

भरणी नक्षत्र में जन्म लेने की वजह से आप रोग रहित जीवन व्यतीत करेंगे। आप हमेशा सत्य और न्याय के लिए लड़ेंगे। आप बेहद साहसी और कामकाज में चतुर होंगे। आप खुशहाल और समृद्धिशाली जीवन व्यतीत करेंगे।

।। आपका लग्न ।।

लग्न क्या है –

भारतीय ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितज पर उदित हो रही होती है उस राशि को लग्न राशि कहते हैं। वह राशि जिस भाव में पडती है उसे लग्न कहते हैं। लग्न व्यक्ति के जीवन की छोटी से छोटी घटना के बारे में जानने में मदद करता है।

आपका लग्न है: **वृशभ**

स्वास्थ्य वृशभ लग्न के लिए:

वृषभ लग्न आपको एक मजबूत और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कर रहा है। लेकिन कुछ शारीरिक समस्याओं का सामना आपको जीवन भर करना पड़ सकता है। विशेष रूप से आप तंत्रिका तंत्र से संबंधित बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपका जन्म मई मास में हुआ है तो आपको अधिक वजन की भी समस्या हो सकती है। कभी कभी यौन रोग आपको अपने प्रभाव में ले सकते है। इसके अलावा जीवन में ग्रीवा कशेरुक,निचले जबड़े, दांत,ठोड़ी और तालु की समस्याएं होने की संभावनाएं भी बनती है। गुर्दे,गुप्तांग, मूत्राशय,गर्दन और गले में होने वाले रोगों से आपको सतर्क रहना चाहिए।

स्वभाव व व्यक्तित्व वृशभ लग्न के लिए:

वृषभ लग्न के अंतर्गत जन्म लेने के कारण आप कुछ अव्यवहारिक हो सकते है। जिसके कारण नए लोगों को आप न भाये। अपने शांत और अंतर्मुखी व्यवहार, के कारण नए लोगों से मिलना जुलना पसंद नहीं करते है। अगर आपके साथ ठीक से व्यवहार नहीं किया जाता और समझा भी नहीं जाता, तो आपमें दूसरों के प्रति आक्रोश और रूढ़िवादिता की भावना उत्पन्न हो सकती है। आपको अक्सर नए दोस्त बनाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जिसके कारण आप नए लोगों से मिलने में संकोच करते हैं। आप विश्वसनीय और व्यवहारिक प्रकृति के हो सकते है। आपका यह स्वभाव आपको कारोबार में आपको अच्छी सफलता दिला सकता है। आपके व्यक्तित्व में कामुकता का भाव भी हो सकता है। इसके कारण आप सभी क्षेत्रों में भौतिक सुख प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहते हैं और आप काफी उद्यमी प्रकृति के भी हो सकते है। आप अपने कार्यों को अपने अनुसार निश्चित समय में पूरा करते है। व दूसरे लोगों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना भी करते है तथा उनकी प्रतिभा की भी खुलकर तारीफ करते हैं। उस समय आपका व्यवहार किसी बॉस के समान भी हो सकता है। आपकी राशि के व्यक्तियों को आसानी से आकर्षित नहीं किया जा सकता और अगर ऐसा किया भी जाता है तो काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। आप लोग अपने मूल्य और सिद्धांतों के प्रति काफी अडिग रहते हैं, और आपके दृष्टिकोण को बदलना आसान नहीं होता है। आपकी स्नेही प्रकृति और सच्चाई की सराहना करने का गुण, दूसरों को आपकी और आकर्षित करता है। इसी के कारण आप एक चुम्बकीय व्यक्तित्व के स्वामी है। आप स्वभाव से आवेगी नहीं होंगे लेकिन लेकिन अगर आप के साथ जबदस्ती का व्यवहार किया जाए तो आप उग्र हो सकते हैं। कई बार आप पूर्वाग्रही और जिद्दी भी हो सकते है। आप काफी सावधानी से अपने दोस्तों का चयन करते हैं। तथा आप झूठ बोलना पसंद नहीं करते हैं हालांकि आपको आसानी से मनाया जा सकता है।

शारीरिक रूप–रंग वृशभ लग्न के लिए:

वृषभ लग्न के लोगों में कम उचाई वाले और कभी कभी दुबले कद काठी के होते हैं। आमतौर पर आप लोग सुंदर कद काठी, ऊंची नाक, चमकदार आँख और कामुक होठ वाले होते हैं। आपका जितना चेहरा सुंदर देखने में होता है उतना आप भाग्यशाली नहीं होते है। आपकी शारीरिक संरचना चौकोर आकार ही होती है। आप लोगों के पीठ पर कुछ निशान भी होते हैं। वृषभ लग्न के लोग मेलजोल वाले होते हैं।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

सूर्य विचार

आपकी कुण्डली में सूर्य सिंह राशि में स्थित है, जो कि सूर्य की स्व राशि है। सूर्य चौथे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में चौथे घर में स्थित है। सूर्य की दृष्टि दसवें घर पर है।

यहां स्थित सूर्य आपको आर्थिक प से समृद्धशाली बना सकता है, क्योंकि यह आपके भीतर बचत करने की प्रवृत्ति देगा। आप देखने में पवान तो हो सकते हैं लेकिन कुछ चिन्ताएं भी आपको घेरे रह सकती हैं। यहां स्थित सूर्य माता पिता की सेवा से वंचित करवाता है। या तो आप दूर रहने के कारण माता पिता की सेवा नहीं कर पाएंगे या फिर साथ रहकर आपसी मनटाव से ग्रस्त रह सकते हैं।

सूर्य की यह स्थिति भाइयों के आपसी सद्भाव में बाधक बनती है। लेकिन यह स्थिति आपको किसी गुप्त विद्या का ज्ञान दे सकती है। हो सकता है कि आप अपनी जन्मभूमि को अधिक महत्त्व न दे पाएं लेकिन फिर भी आप किसी को हानि पहुचाने से डरेंगे। आपको सोने चांदी के व्यापार से लाभ मिलेगा। आपकी अधिकतर यात्रांए भी लाभकारी सिद्ध होंगी।

यदि आप कुछ नया करने की कोशिश करेंगे, कुछ नया बनाएंगे या शोध करेंगे तो यह आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कोई भी बुरी लत न लगने दें अन्यथा आपको अपनी बुरी लत को छोडने में बडी कठिनाई होगी। आपका ससुराल पक्ष कुछ हद तक समस्याग्रस्त रह सकता है। आपको भी आंखों से संम्बंधित परेशानियां हो सकती हैं। आपको चाहिए कि लालच को आने पास भी न फटकने दें अन्यथा आर्थिक संकट परेशान कर सकता है।

चन्द्र विचार

आपकी कुण्डली में चन्द्र मेष राशि में स्थित है, जो कि चन्द्र की मित्र राशि है। चन्द्र तीसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में बारहवें घर में स्थित है। चन्द्र की दृष्टि छठे घर पर है। मंगल की पूर्ण दृष्टि चन्द्र पर है।

बारहवें भाव में स्थित चंद्रमा आपको एकांत प्रेमी बना सकता है। हांलाकि आप एकांत में जाकर भली प्रकार से चिंतन कर पाएंगे क्योंकि आप एक चिंतनशील व्यक्ति हैं। आप एक मृदुभाषी व्यक्ति हैं लेकिन आपके खर्चे बहुत होंगे। आपमें क्रोध की अधिकता देखने को मिलेगी। आपकों आखों से सम्बंधित परेशानी के अलावा कफ से सम्बंधित परेशानियां भी हो सकती हैं।

आप थोडे से आलसी और भावनात्मक प से परेशान रह सकते हैं। प्रेम और रहस्य से संबंधित विषयों में आपकी रुचि अधिक होगी। विदेश यात्राएं करने में भी आपकी अच्छी खासी रुचि होगी, साथ ही आपको विदेश यात्राएं करने के मौके भी खूब मिलेंगे। आपके शत्रुओं की संख्या अधिक हो सकती है। आपका जुडाव किसी अस्पताल या धार्मिक संस्थान के साथ हो सकता है।

आपको अपने जीवन काल में कई प्रतिबंधों का सामना करना पड सकता है। व्यवसायिक मामलों की आपको बहुत जानकारी नहीं हो पाएगी। इस कारण से इन मामलों से आपको दूर रहना पड सकता है। आप अपने खर्चों को लेकर चिंतित रह सकते हैं। हांलाकि ये खर्चे आप ही करेंगे फिर भी इन्हीं खर्चों के कारण आपको अपने अन्य कामों में परेशानियों का अनुभव होगा।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

मंगल विचार

आपकी कुण्डली में मंगल कन्या राशि में स्थित है, जो कि मंगल की शत्रु राशि है। मंगल बारहवें, सातवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पांचवें घर में स्थित है। मंगल की दृष्टि आठवें, ग्यारहवें, बारहवें घर पर है। केतु की पूर्ण दृष्टि मंगल पर है।

पांचवे भाव में स्थित मंगल आपमें चंचलता देने के साथसाथ आपको बुद्धिमान बनाता है लेकिन आपके स्वभाव में उग्रता जल्द ही आ जाती है। यदि आप कुसंगति के स्वयं को नहीं बचाएंगे तो आप भी व्यसनी हो जाएंगे। छल कपट से दूर रहना भी आपके लिए हितकर होगा। आपको पेट से सम्बंधित परेशानियां भी समयसमय पर परेशान कर सकती है अतः खानपान पर संयम रखना जरी होगा।

ज्यादतियों और सट्टे बाजारी के शौक के कारण आपको घाटा भी उठाना पड सकता है। इन कारणों से आप तनावग्रस्त और आक्रामक हो सकते है। हांलाकि आप बुद्धिमान व्यक्ति हैं लेकिन कोईकोई निर्णय बिना विवेक के भी ले सकते हैं। आपका प्रथम पुत्र बहुत जल्द गुस्सा करने वाला होगा, उसे दुर्घटनाओं और चोट लगने का भय बना रहेगा। कोई संतान अवज्ञाकारी भी हो सकती है।

आपकी संतान शल्य चिकित्सा के माध्यम से हो सकती है। आप पेट की तकलीफों और कब्जजन्य रोगों से परेशान रह सकते हैं। आप विपरीतलिंगी के प्रति अधिक आकर्षित हो सकते है, यदि आपने इस मामले में संयम से काम नहीं लिया तो आपकी बदनामी भी हो सकती है। आपको जिम जाना अथवा व्यायाम करना बहुत पसंद होगा।

बुध विचार

आपकी कुण्डली में बुध कर्क राशि में स्थित है, जो कि बुध की शत्रु राशि है। बुध दूसरे, पांचवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में तीसरे घर में स्थित है। बुध की दृष्टि नौवें घर पर है। केतु की पूर्ण दृष्टि बुध पर है।

तीसरे भाव में स्थित बुध के कारण आपका शारीरिक गठन बहुत अच्छा होगा। आप एक धार्मिक और यशस्वी व्यक्ति हैं। आप देवताओं और गुरुजनों का आदर करते हैं। आप बुद्धिमान और स्वभाव से विनम्र हैं। आपके भीतर साहस और वीरता का समावेसह भी है। आप अपनी विनम्रता के कारण उद्दण्ड व्यक्ति पर भी नियंत्रण पा लेंगे और अपनी आवश्यकतानुसार लाभ ले पाएंगे।

आपके भाई बहनों या सहयोगियों की संख्या अधिक होगी और आप उनके चहेते होंगे। आपका परिवार बडा होगा। आपको अपने भाईबहनों से सुख मिलेगा। आपके दो लडके और तीन लडकियां हो सकती हैं। आप स्वजनों से घिरे रहेंगे और उनका हित करते रहेंगे। सरस हृदय होने के कारण स्त्रियों के प्रति स्वभाविक अनुराग होगा।

आप सरस एवं सरल हृदय के व्यक्ति हैं। आपके मित्रों की संख्या अधिक होगी। आप अपने जानने वालों से प्रेम पूर्वक बात करते हैं। आत्मकेन्द्रण आपके लिए उचित नहीं रहेगा। आर्थिक लाभ पर अधिक जोर देना भी उचित नहीं होगा। लेखन प्रकाशन या छ्पाई के कामों से आपका जुडाव हो सकता है। जीवन की अंतिम अवस्था में वैराग्य या मोक्ष की इच्छा भी हो सकती है।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

गुरू विचार

आपकी कुण्डली में गुरू कर्क राशि में स्थित है, जो कि गुरू की उच्च राशि है। गुरू आठवें, ग्यारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में तीसरे घर में स्थित है। गुरू की दृष्टि सातवें, नौवें, ग्यारहवें घर पर है। केतु की पूर्ण दृष्टि गुरू पर है।

तीसरे भाव में बृहस्पति होने के कारण आप साहसी और बलवान होंगे। आप शास्त्रों के जानकार और अनेक प्रकार के धार्मिक कार्यों को सम्पादित करने वाले व्यक्ति हैं। आप जीतेन्द्रिय, तेजस्वी और ईश्वर पर विश्वास करने वाले व्यक्ति हैं। आप काम करने में चतुर हैं। आप जिस काम का संकल्प करते उसे पूरा करके ही छोडना चाहते हैं और आपको आपके काम में आपको सफलता भी मिलती है।

आप प्रवास पर्यटन और तीर्थयात्राएं करने वाले व्यक्ति हैं। आपको अपने सगे भाइयोंबहनों और कुटुम्बियों से सुख मिलता है। आप अपने भाइयों का कल्याण करने वाले और उन्हें उत्तम सुख देने वाले होंगे। आपके भाई भी प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे। आप मित्रों और आत्मजनों के माध्यम से सुखी और सम्पन्न होंगे। आत्मजनों से आपको लाभ भी होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा।

आपको राजा या सरकार के द्वारा सम्मान मिलेगा। बहुत सारे लोग आपके अधीनस्थ रहेंगे। अच्छे बुद्धि विवेक के कारण आपको लेखन से लाभ होगा। तीसरे भाव के बृहस्पति के कारण आपको कंजूसी करते हुए देखा जाएगा। भूख न लगने के कारण शरीर दुर्बल हो सकता है। आपको अपने भाइयों के साथ हमेशा अच्छे सम्बंध बनाए रखना चाहिए। साथ ही धार्मिक और आध्यातमिक वृत्ति का पोषण करते रहें।

शुक्र विचार

आपकी कुण्डली में शुक्र कन्या राशि में स्थित है, जो कि शुक्र की नीच राशि है। शुक्र पहले, छठे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पांचवें घर में स्थित है। शुक्र की दृष्टि ग्यारहवें घर पर है। केतु की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर है।

यहां स्थित शुक्र आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आप सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी व्यक्ति हैं। आप ईश्वर पर विश्वास करने वाले उदार व्यक्ति हैं। आप दान पुण्य के कार्यों में विश्वास रखते हैं। आप विद्वान प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता होंगे। सामान्य प्रयास से भी धन प्राप्ति होती रहेगी। आपको अचानक ही कहीं से प्रचुर धन मिल सकता है। आप अनेक शास्त्रों के ज्ञानी और मंत्रवेत्ता हैं।

कविताओं और लेखन में आपकी गहरी रुचि होगी। आप संगीत आदि कलाओं में निपुण हो सकते हैं। ललितकलाओं में भी आप की रुचि होगी। नाटक सिनेमा आदि से भी आपका गहरा लगाव होगा। आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीस भी हो सकते हैं। आप व्यवहार कुशल होने के साथसाथ न्यायप्रिय भी हैं। आप राज कुल या सरकार से भी सम्मानित हो सकते हैं।

आपके कन्या संतति अधिक हो सकती हैं लेकिन पुत्र की प्राप्ति भी आपको जर होगी। विपरीत लिंगी की संगति आपको पसंद होगी। आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख मिलेगा। आपके मित्र उत्तम और विश्वसनीय होंगे। हांलाकि घर में आपका वर्ताव मुसाफिरों जैसा हो सकता है। आप अपने काम धंधों में ही खोए रहेंगे। सुंदर व्यंजनों को खाने का सौभाग्य मिलता रहेगा।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि सिंह राशि में स्थित है, जो कि शनि की शत्रु राशि है। शनि नौवें, दसवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में चौथे घर में स्थित है। शनि की दृष्टि छठे, दसवें, पहले घर पर है।

यहां स्थित शनि आपको उदार और शांत बनाता है। आप गंभीर धर्य सम्पन्न और लोभरहित व्यक्ति हैं। आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति हैं। आप परोपकार करने में खूब विश्वास रखते हैं। आप गुणवान व्यक्ति हैं। आप प्रचुर मात्रा मं धन प्राप्त करेंगे। आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। आपको किसी और की सम्पत्ती भी मिल सकती है।

आप दूर देश में रहकर खूब तरक्की कर सकते हैं। आपके लिए आपकी उम्र सोलहवां, बाइसवां, चौबीसवां, सत्ताइसवां और छत्तीसवां साल भाग्यकारी रहेगा। इन वर्षों में आपको नौकरी, विवाह, सन्तति आदि शुभफल मिल सकते हैं। हांलाकि यहां स्थित शनि छ्त्तीस साल की उम्र तक कभीकभी कष्ट भी देता रहता है। इसके बाद उम्र के छप्पनवें वर्ष तक सुख मिलता रहता है।

आपको शत्रुओं के माध्यम से भी लाभ मिल सकता है। यहां स्थित शनि के दुष्प्रभाव के प में आपको शारीरिक प से कम सुख मिल सकता है। आपकी संगति खराब लोगों के साथ हो सकती है। मानसिक चिंता या कष्ट रह सकता है। माता को बीचबीच में कष्ट रह सकता है। शनि की यह स्थिति कभीकभी दो विवाह या घरेलू क्लेश की स्थिति भी उत्पन्न करती है। कभीकभी यह स्थिति पिता की सम्पत्ती से वंचित भी करती है।

राहू विचार

आपकी कुण्डली में राहू कन्या राशि में स्थित है। राहू पांचवें घर में स्थित है। राहू की दृष्टि नौवें, ग्यारहवें, पहले घर पर है। केतु की पूर्ण दृष्टि राहू पर है।

यहां स्थित राहू आपको तीक्ष्णबुद्धि बनाता है। आपको विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान होगा। आप स्वभाव से दयालु, कर्मठ हैं साथ ही आप भाग्यवान भी है। पुत्र प्रापति में कुछ व्यवधान आ सकता है। हो सकता है कि पहली संतान के प में कन्या संतति की प्रापति हो। आप कम्पनी के व्यवसाय में सफल हो सकते हैं।

आप लेखनकला में कुशल हो सकते हैं साथ ही आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। कई मामलों में यहां स्थित राहू बुरे परिणाम भी देता है। अशुभता की स्थिति में राहू दिमाग को भ्रमित करता है। संतान को कष्ट या परेशानी होती है। यहां स्थित राहू व्यर्थ में व्यय कराकर निर्धनता की स्थिति उपन्न करता है। आपके शरीर का रंग कम अच्छा हो सकता है।

यह स्थिति आपको कभीकभी गलत रास्ते पर चलने की प्रेरणा दे सकती है। आपके मन में चिंता और संताप की स्थिति निर्मति हो सकती है। आपकी रुचि विद्या प्राप्त करने में कम रह सकती है। आपको उदररोग अर्थात पेट से सम्बंधित परेशानियां रह सकती हैं। पेट में शूल, गैस आदि रोग और मंदागनि रोग हो सकता है। बहुत प्रयास करने पर ही धन संग्रह हो पाता है। जीवन साथी के पक्ष से भी कष्ट मिल सकता है।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

केतु विचार

आपकी कुण्डली में केतु मीन राशि में स्थित है। केतु ग्यारहवें घर में स्थित है। केतु की दृष्टि तीसरे, पांचवें, सातवें घर पर है। मंगल,गुरू,शुक्र,राहू की पूर्ण दृष्टि केतु पर है।

यहां स्थित केतू आपको अनेक प्रकार के शुभफल देगा। आप देखने में आकर्षक और मनोहर व्यक्तित्त्व के स्वामी होंगे। आप विशेष कांति वाले तेजस्वी व्यक्ति हैं। आपको अच्छे कपडे पहनने का शौक होगा। आप परोपकारी और दयालु स्वभाव के हैं। आप स्वभाव से उदार और हमेशा संतुष्ट रहने वाले व्यक्ति हैं। आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करेंगे। ढइत/झढइत/झ

आप शास्त्रों को जानने वाले, हंसमुख स्वभाव के विद्वान व्यक्ति हैं। आप सरस और मधुरभाषी हैं। आप पराक्रमी, प्रतिष्ठित और लोकप्रिय होंगे। दूसरे लोग भी आपकी प्रसंशा करेंगे। आप सरकार या राजा के द्वारा सम्मान प्राप्त करेंगे। आप अनेक प्रकार के आभूषणों और ऐश्वर्य से सम्पन्न होंगे। आपकी आमदनी के कई स्रोत होंगे। ढइत/झढइत/झ

आप भाग्यवान व्यक्ति हैं और आपका घर बडा सुंदर होना चाहिए। आप किसी भी काम को अधूरा नहीं छोडना चाहते। शत्रु आपसे भयभीत रहते हैं। लेकिन यहां स्थित केतू कुछ अशुभफल भी देता है फल्स्वप आप कुछ हद तक चंतित भी रह सकते हैं और अपने हांथों अपनी हानि कर लेते हैं। संतान से संबंधित चंता रह सकती है। कुछ पेट की बीमारियां भी हो सकती हैं।

।। विस्तृत भविष्यफल ।।

चरित्रः

आप एक संवेदनशील एवं भावुक व्यक्ति हैं। जीवन कीकठनाइयों का आप पर अन्य लोगों की तुलना में ज्यादा प्रभाव पड़ता हैपरिणामस्वरूप आप जीवन के कुछ सुखद पल खो देते हैं। दूसरों द्वार कही गयींबातों को आप दिल पर ले लेते हैं। अतः कुछ एसी बातें है जो आपको दुःख देतीहैं परन्तु उस पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिये।आपके कार्य करने का तरीका शान्तिपूर्ण है,परिणामस्वरूप आप अपने सहकर्मियों की नजर में मजबूत इच्छाशक्ति एवं दृढ–निश्चयी वाले व्यक्ति प्रतीत होते हैं। आपकी यह प्रवृत्ति आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करने में मदद करती है।आप बोलने से अधिक सोचते हैं और आपका यह चिन्तनतार्किक होता है। लोग आपसे सलाह मांगने इसलिये आते हैं क्योंकि आपका निर्णयपालन करने योग्य और निष्पक्ष होता है।आपमें अनेक उत्तम गुण हैं। आप एक सहानुभूतिपूर्णमनुष्य हैं, जोकि आपको एक अच्छा मित्र बनाता है। आप अनुरागी व देशभक्तहैं, यही कारण है कि आप एक अच्छे नागरिक भी हैं। आप प्यारे माता/पिता होंगे।आप अपने माता–पिता की इच्छानुसार कार्य करेंगे। निश्चय ही आपकी ये अच्छाइयांदूसरों पर भारी पड़ेंगी।

सौभाग्य व संतुष्टिः

आप दूसरों के साथ का पूरा आनन्द लेते हैं। आपहंसमुख और खुशमिज़ाज हैं एवं हंसने में संकोच नहीं करते तथा प्रायः अच्छा'सेंस ऑफ ह्यूमर' रखते हैं। आपका मन सौन्दर्य से अत्यन्त प्रभावित रहता है औरआप इसे प्रमुखता से अपन आस–पास के वातावरण में दिखाते हैं। जो व्यक्तिजो अपने चारों ओर सुन्दरता ला सकता है, वह सदैव आनन्दोन्मुखी होता है।

जीवन शैलीः

आप दूसरों की प्रशंसा करने में प्रायः कंजूसी करतेहैं, जिस कारण आप विरोध के पात्र बन जाते हैं। आप के मन जो कुछ भी हो उसेआज से ही कहना आरम्भ करें। परिणामस्वरूप आप लोगों से बेहतर सम्बन्ध पायेंगे।

।। विस्तृत भविष्यफल ।।

रोजगारः

आपको ऐसा कार्यक्षेत्र चुनना चाहिए जिसमें आप समूहमें काम करते हों और जहाँ कार्य सम्पन्न करने की समय–सीमा अनिश्चित हो।आपको कोई ऐसा कार्यक्षेत्र चुनना चाहिए, जहाँ सहभागिता से काम होता हो,उदाहरणार्थ समूह का नेतृत्व करना आदि।

व्यवसायः

आप ज़्यादा कार्य करने के लिये उपयुक्त नहीं हैं, न हीआप अत्यधिक उत्तरदायित्व वहन कर सकते हैं। हांलाकि आपको काम करने में कोईपरेशानी नहीं है, लेकिन उसमें अत्यधिक उत्तरदायित्व नहीं होना चाहिए। आप किसीभी तरह के कार्य को अपने हाथ में लेने के लिये सदैव तैयार रहते हैं, पर आपकास्वच्छ व व्यवस्थित कार्यों की तरफ विशेष रूझान है। साथ ही, शायद आपनेयह ध्यान दिया होगा कि ऐसा कोई भी कार्य जिसके द्वारा आप प्रकाश में आते हैं,वह अपेक्षाकृत आपको ज़्यादा आकर्षित करता है, बजाय कि ऐसा कोई कार्य जोशान्ति में अकेले किया जाए। निश्चित तौर पर आपका स्वभाव शान्त वातावरण को सहननहीं कर पाता है, बल्कि यह सदैव प्रकाशमान एवं प्रसन्नचित्त वातावरण को तलाशतारहता है।

स्वास्थ्यः

आपके अन्दर प्रचुर अन्तर्ऊर्जा है। आपहृष्ट–पुष्ट हैं व साधारणतः आप किसी प्रकार के रोग से ग्रसित नहींहोंगे, जबतक कि आप ज़रूरत से बहुत ज़्यादा कार्य नहीं करते। सिर्फ इसलिये कि आपमोमबत्ती को दोनों सिरों से जला सकते हैं, आपको यह करने के बारे में नहींसोचना चाहिए। आपको अपने प्रति संयमी होना चाहिए और अपनेस्वास्थ्य–कोष में से ज़रूरत से ज़्यादा लेने का प्रयास नहीं करना चाहिए;अन्यथा आप जीवन के उत्तरार्ध में गम्भीर बीमारियों को निमन्त्रण दे सकते हैं।बीमारी यदि प्रायः नहीं आती है, तो अचानक ही आएगी। यद्यपि उसने परिपक्व होने मेंकाफी लम्बा समय लिया होगा। आप थोड़ा सा दिमाग लगाने पर पाएंगे कि आपने रोगको स्वयं ही आमन्त्रित किया है। इसमें कोई शक नहीं है कि आप उससे बच सकते थे।आपके नेत्र आपकी कमज़ोरी हैं और कृपया उसका ख़्याल रखें। आप पैंतीस की उम्रके बाद नेत्र–विकार से ग्रसित हो सकते हैं।

।। विस्तृत भविष्यफल ।।

रुचिः

आपको अपने मिज़ाज के अनुरूप ही अपने फुरसत के लम्होंको बिताना चाहिए। यह देखते हुए कि आप आराम पसन्द हैं, आप श्रम व थकावट भरेखेलों को पसन्द नहीं करते हैं। आप दूसरों की संगति पसन्द करते हैं और जीवनके उज्ज्वल भाग को देखते हैं। ताश खेलना आपको पसन्द है, लेकिन सिर्फ तभी जबउसमें पैसा जुड़ा हुआ हो। यहां पर आपको जुए के प्रति सावधान करने कीआवश्यकता है। यदि आपने एक बार इसे अनुमति दी, तो यह आप पर नियन्त्रण कर सकताहै।

प्रेम आदिः

प्रेम सम्बन्धों में भी आप उतने ही ऊर्जावान होंगे, जितने कि आप काम एवं खेल में हैं। एक बार आप प्यार में पड़ गये, तो आप अपने चहेते को प्रतिपल अपने पास रखना चाहेंगे। हालांकि आप अपने कार्य की अनदेखी नहीं करेंगे, परन्तु एक बार वो खत्म हो गया तो आप अपने प्रिय से मिलने को निकल पड़ेंगे। जब आपका विवाह हो जाएगा तो आप अपने घर पर अधिक ध्यान देंगे। आप अक्सर जीवनसाथी की व्यापारिक मामलों में मदद करेंगे।

वित्तः

आपके जीवन में वित्त सम्बन्धी कई उतार–चढ़ावआएंगे, मुख्यतः आपकी जल्दबाजी एवं अपनी क्षमता से अधिक का काम करने के कारण।आप एक सफल कम्पनी प्रमोटर, शिक्षक, वक्ता या आयोजक हो सकते हैं। आपके अन्दरसदैव से ही पैसा बनाने की क्षमता है, लेकिन साथ ही साथ इस दौरान आपके कईशत्रु बन सकते हैं। आपके व्यापार व उद्योग से अच्छी धनार्जन की उम्मीद है और आपकेजीवन में असीम धनार्जन की अनेक अवसर आएंगे यदि आप अपनी इच्छाशक्ति पर काबूसखते हैं। जोकि समय–समय पर खर्चीले मुकदमों या आपके शक्तिशाली शत्रुओंकी वजह से आपके हाथ से जा सकते हैं। अतः आपको लोगों के नियंत्रण की विद्यासीखने का प्रयास करना चाहिये एवं मतभेदों से भी बचना चाहिये।

आपकी कुंडली में उपस्थित विभिन्न विशिष्ट योग व राजयोग

इस राजयोग रिपोर्ट के अंतर्गत हमने प्रयास किया है कि आपको उन विशिष्ट योगों के बारे में बताएँ जो आपकी जन्म–कुंडली में उपस्थित हैं और आपको जीवन में उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होंगे।

बधाई हो Pooja Sharma! आपकी जन्म कुंडली में निम्नलिखित विशिष्ट योग एवं राजयोग उपस्थित हैं:

1. **गज–केसरी योग**

इस योग के प्रभाव से आप दयालु, परोपकारी, लक्ष्मीवान तथा सम्माननीय होंगे।

2. **उभयचरी योग**

इस योग के प्रभाव से आप भाग्यवान तथा ज्ञानवान होंगे।

3. **पाराशरी राज योगः**

इस योग के प्रभाव से आप जीवन में समृद्धि को प्राप्त करने वाले बनेंगे।

उपरोक्त विशिष्ट राजयोगों के कारण आपके जीवन में उन्नति तथा लक्ष्मी प्राप्ति के सुंदर योग विद्यमान हैं। इन विशिष्ट योगों के बारे में विस्तार से जानने के लिए आगे पढ़ें...

गज–केसरी योग

केन्द्रे देवगुरौ लग्नाच्चन्द्राद्वा शुभदृग्युते ।
नीचास्तारिगृहैर्हीने योगोऽयं गजकेसरी
गजकेसरीसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।
मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः

यदि बृहस्पति चंद्रमा से केंद्र भावों में स्थित है और किसी क्रूर ग्रह से संबंध नहीं रखता है तो गज–केसरी योग बनता है। हालांकि अगर कोई अशुभ ग्रह से संबंध होता है तो इस योग से मिलने वाले फलों में कमी आएगी।

जन्म कुंडली के अनुसार आपका जन्म गज–केसरी योग में हुआ है इसलिए आप दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे और दूसरों के प्रति स्नेह व विनम्रता का भाव रखेंगे। जीवन में आध्यात्मिक उत्थान को लेकर आपके मन में तीव्र इच्छा होगी। वेद और पुराण में आपकी गहरी रुचि रहेगी और आपका धार्मिक ज्ञान अच्छा होने की वजह से लोग आपसे मार्गदर्शन लेंगे। आपके पास चल और अचल संपत्ति के रूप में बहुत सारा धन होगा। आपके संबंध उच्च वर्ग के लोगों के साथ होंगे। जीवन में आप सभी तरह की भौतिक वस्तुओं का सुख प्राप्त करेंगे। सरकारी सेवाओं में आपको उच्च पद की प्राप्ति भी हो सकती है।

उभयचरी योग

तथोभयचरे जातो भूपो वा तत्समः

यदि चंद्रमा के अतिरिक्त राहु–केतु, सूर्य से द्वितीय और द्वादश दोनों भाव में हो, तो उभयचरी योग बनता है।

जन्म कुंडली के अनुसार आपका जन्म इस योग में होने से आपको जीवन में भाग्य का साथ मिलेगा और आप आसानी से सभी चुनौतियों का सामना कर सकेंगे। आप स्वभाव से हंसमुख और बुद्धिमान होंगे।

पाराशरी राज योगः

विष्णुस्थानं च केन्द्रं स्याल्लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणकम् ।
तदीशयोश्च सम्बन्धाद्राजयोगः पुरोदितः

जब जन्म–कुंडली में केंद्र भावों का संबंध त्रिकोण भावों से हो तो राजयोग का निर्माण होता है। लग्न भाव को केंद्र तथा त्रिकोण दोनों भाव माना जाता है।
ये राजयोग निम्नलिखित प्रकार से निर्मित होते हैंः

जब लग्न का स्वामी ग्रह चतुर्थ भाव में स्थित होय
जब लग्न का स्वामी ग्रह पंचम भाव में स्थित होय
जब लग्न का स्वामी ग्रह नवम भाव में स्थित होय
जब चतुर्थ भाव का स्वामी ग्रह लग्न भाव में स्थित होय
जब चतुर्थ भाव का स्वामी ग्रह पंचम भाव में स्थित होय
जब चतुर्थ भाव का स्वामी ग्रह नवम भाव में स्थित होय
जब नवम भाव का स्वामी ग्रह लग्न भाव में स्थित होय
जब नवम भाव का स्वामी ग्रह चतुर्थ भाव में स्थित हैय
इसके अतिरिक्त जब उपरोक्त भाव के स्वामियों का एक दूसरे से स्थान परिवर्तन हो तो भी यह राजयोग निर्मित होता है।

इस योग में जन्म लेने के कारण दशा अवधि में आपका रुतबा बढ़ेगा। आप धनी, धार्मिक स्वभाव वाले, प्रसिद्ध एवं समृद्धशाली होंगे। कार्यक्षेत्र में आप उच्च पद पर आसीन होंगे। आपके पास वाहन एवं अन्य प्रकार की प्रॉपर्टी होगी।

तो इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आपकी कुंडली में उपर्युक्त राजयोग विद्यमान हैं। अतः आप जीवन में समृद्धिशाली एवं विख्यात तथा लक्ष्मीवान बनने की क्षमता रखते हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन योगों का निर्माण जिन ग्रहों के द्वारा किया जा रहा है उन ग्रहों को कुंडली में मजबूती देने से इन योगों के प्रभाव में भी वृद्धि होगी तथा जब–जब इन ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा तथा अन्य दशाएँ आएंगी तब–तब आपको इन ग्रहों के द्वारा निर्मित उत्तम फलों की प्राप्ति होने की संभावना अत्यधिक बढ़ जाएगी।

आपका स्वर्णिम काल अथवा राजयोगों के फलीभूत होने का समय

अक्सर आपके मन में यह विचार आता होगा कि आपके जीवन का स्वर्णिम काल कब आएगा अथवा आपकी कुंडली के राजयोग कब फल देंगे? अपनी इस राज योग रिपोर्ट के अंतर्गत हम आपको बताना चाहते हैं कि आपकी जन्म कुंडली में उपस्थित विभिन्न राज योगों का प्रभाव यूँ तो जीवन पर्यन्त आपके ऊपर रहता है परन्तु विशेष रूप से जीवन का स्वर्णिम काल कुंडली में उपस्थित विशिष्ट राज योगों को बनाने वाले विभिन्न ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा इत्यादि में आता है। क्योंकि इसी दौरान ये ग्रह पूर्ण रूप से आपकी कुंडली में प्रभावी होकर आप पर अपना प्रभाव डालते हैं और इन्हीं के प्रभाव

से आप जीवन में ऊँचाइयों तक पहुंचते हैं, जिससे आप तरक्की के साथ–साथ यश, मान–सम्मान तथा उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं।
आपकी कुंडली में बनने वाले राज–योगों के अनुसार आपके जीवन का स्वर्णिम काल अथवा जीवन में राज–योगों के फलीभूत होने का समय निम्न वर्णित रहेगा:

पहला स्वर्णिम काल:
जून 2027 से जून 2028

दूसरा स्वर्णिम काल:
दिसम्बर 2034 से जनवरी 2037

नोट: इन समय पर ग्रहों और नक्षत्रों की चाल से राजयोग का प्रभाव सबसे अधिक रहेगा।

आपकी कुंडली में राजयोग की शक्ति

जैसा कि आप जानते ही हैं, राजयोग आपको धनवान, अधिक सफल और अधिक संपन्न बनाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो राजयोग के माध्यम से जीवन में इन सभी वस्तुओं को प्राप्त करने की जन्म–कुंडली की क्षमता का पता चलता है। विभिन्न लोगों की कुंडलियों की क्षमता भिन्न–भिन्न होती हैदृकुछ व्यक्तियों की कुंडलियों में अंतर्निहित यह क्षमता अन्य की अपेक्षा अधिक होती है। अतः अपनी कुंडली में स्थिति राजयोगों की शक्ति के आधार पर आप स्वयं के भीतर छुपी संभावनाओं को पल्लवित करने के लिए उसी स्तर पर प्रयत्न करने की तैयारी कर सकते हैं। आइए, देखें कि इस दृष्टिकोण से आपकी कुंडली का अंतिम विश्लेषण क्या कहता है

राजयोग की शक्ति : 65%

हम आशा करते हैं कि यह राजयोग रिपोर्ट आपके लिए सहायक सिद्ध होगी और आप जीवन में नित नई ऊँचाइयों को छूते रहेंगे। परमात्मा की अनुकम्पा आप पर सदैव बनी रहे!

।। भाव फल ।।

जन्म कुंडली में 12 खाने होते हैं जो मानव जीवन के सभी संबंधों तथा क्रिया–कलापों को समाहित किए होते हैं। इन्हें भाव कहा जाता है। इस प्रकार भचक्र की 12 राशियों इन 12 भावों में अवस्थित होती हैं और उस राशि के स्वामी ग्रह को उस भाव का भावेश कहा जाता है। प्रत्येक भाव के स्वामी का विभिन्न भावों में उपस्थित होना तथा प्रत्येक भाव पर विभिन्न ग्रहों अथवा भावेशों का प्रभाव जीवन में होने वाली विभिन्न परिस्थितियों को दर्शाता है।

व्यक्तित्व, स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति

जन्म कुंडली में पांचवां भाव हमारी कलात्मक और बौद्धिक योग्यता का प्रतिनिधित्व करता है। पांचवें भाव का अध्ययन करके हम मानसिक क्षमता या शक्ति का आकलन भी कर सकते हैं। पांचवां भाव आपकी शैक्षणिक योग्यता और पृष्ठभूमि के बारे में भी बताता है। यह भाव संतान और संतान से जुड़े मामलों का भी प्रतिनिधित्व करता है। पूर्व जन्म में किए गए कर्म और इस जीवन में उनसे मिलने वाले संभावित परिणामों के बारे में भी पांचवें भाव से पता चलता है। पांचवे भाव से ध्यान, भजन और धार्मिक कर्म कांड से जुड़ी रुचियों के बारे में भी पता लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पंचम भाव से प्रेम सम्बन्ध और जीवन में आपका रुझान किस और रहेगा, इस बारे में भी पता चलता है।

लग्न के स्वामी का पांचवें भाव में स्थित होना, इस बात का संकेत है कि आप एक बुद्धिमान और विद्वान छवि के व्यक्ति हैं। आप अध्ययनशील और ज्ञानवान व्यक्ति होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। धार्मिक ग्रंथों के प्रति भी आपकी गहरी रुचि होगी। लग्न स्वामी के पांचवें भाव में स्थित होने से आपकी धर्म, धार्मिक ग्रंथ और धार्मिक कर्मकांड में गहरी रुचि होगी। पांचवें भाव को पूर्व पुण्य भी कहा जाता है। क्योंकि यह भाव पिछले जन्म के अच्छे और बुरे कार्यों को दर्शाता है और उन कर्मों के इस जन्म में आपको क्या फल मिल सकते हैं। पांचवां भाव आपकी प्रजनन क्षमता और बच्चों के साथ आपके लगाव को दर्शाता है।
लग्न के स्वामी के पांचवे भाव में स्थित होने से आप लेखन, संपादन और विचारक जैसे पेशे से जुड़े रह सकते हैं। यह भाव आपकी एकाग्रता की शक्ति और ध्यान से भी संबंधित होता है।

धन, परिवार, जमीन और जायदाद

द्वितीय भाव के स्वामी के तृतीय भाव में स्थित होने से द्वितीय भाव से संबंधित कार्यों में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त तीसरे भाव से संबंधित कार्यों के लिए भी यह श्रेष्ठ है। इस दौरान परिवार के लिए आवश्यक संसाधन, धन और समय व्यतीत करने पर आपका ध्यान होगा साथ ही आप परिवार में रहने वाले सदस्य विशेषकर भाई–बहनों की उन्नति के लिए भी प्रयासरत रहेंगे। बड़े भाई–बहन से संबंधित मामलों पर आपके परिवार का ध्यान केंद्रित रह सकता है। उनकी शिक्षा, सफलता और उन्नति की प्रशंसा की जाएगी। बड़े भाई–बहन की तरक्की और सशक्तिकरण पर अधिक ध्यान दिया जाएगा और उनके दृष्टिकोण व विचारों को ज्यादा प्राथमिकता दी जाएगी। द्वितीय भाव के स्वामी का तृतीय भाव में स्थित होना इस बात का भी संकेत है कि, आपके परिवार के संबंध बड़े पैमाने पर पड़ोसी, मित्र और रिश्तेदारों से होंगे। हर पारिवारिक और मनोरंजक कार्यक्रमों में परिवार के लोगों का रिश्तेदारों से मिलना–जुलना होगा। द्वितीय भाव के स्वामी की यह स्थिति दर्शाती है कि, आपके परिवार के आकार, संसाधन और कार्यक्रमों में निरंतर बदलाव होते रहेंगे। यह दर्शाता है कि आपके परिवार की सोच व दृष्टिकोण में बदलाव होता रहेगा और नए विचार व आधुनिक सोच को स्वीकार करने का स्वभाव होगा। द्वितीय भाव के स्वामी का तृतीय भाव में स्थित होना आपकी भाषा और संचार कौशल में वृद्धि तथा बहुमुखी स्वभाव और कला व बौद्धिक क्षेत्र में आपके परिवार की सहभागिता को को भी दर्शाता है। द्वितीय भाव के स्वामी का तृतीय भाव में होना यह भी दर्शाता है कि आपका व्यक्तित्व बेहतर और स्पष्ट होगा।

भाई–बहन, साहस

द्वादश भाव हानि, परित्याग, प्रबुद्धता, एकता और अलगाव से संबंधित होता है। जब तृतीयेश आपके द्वादश भाव में स्थित होता है यह दर्शाता है कि आपके जीवन में भाई–बहन या मित्रों की कमी रह सकती है। इसके अतिरिक्त आप छोटे भाई–बहन से वंचित रह सकते हैं या फिर वे आपसे अलग रह सकते हैं। आपके हमउम्र साथी अपने जन्म स्थान और पैतृक गांव से दूर जाने पर बहुत उन्नति करेंगे। आपकी कई लोगों से मित्रता होगी लेकिन अलगाव होने की वजह से मित्रों के साथ स्थायी रिश्तों की संभावना बहुत कम होगी। द्वादश भाव जन्म स्थान से दूर विदेश और विदेशी संपर्क से संबंधित है। इन रिश्तों को अलगाव से बचाये रखने के लिए निरंतर प्रयास करते रहने होंगे। चूंकि द्वादश भाव विकास और ज्ञान से भी संबंधित होता है इसलिए जब तृतीयेश द्वादश भाव में होता है तो बौद्धिक ज्ञान या अन्य रुचि में एकाग्रता बनाये रखने में कठिनाई आती है। यदि द्वादश भाव से जुड़े मामले हैं जैसे आध्यातमिकता, रहस्यमयी विज्ञान, प्राणायाम और दान इनमें न केवल आपकी रुचि पैदा होगी बलकि आपको उन्नति भी मिलेगी। तृतीयेश का द्वादश भाव में स्थित होना विदेश यात्रा या तीर्थ दर्शन के संबंध में दर्शाता है, इसके माध्यम से आपको लाभ भी प्राप्त हो सकता है। चूंकि द्वादश भाव स्वयं से मोहभंग होने और अलगाव से भी संबंधित होता है वहीं तृतीय भाव प्राणायाम और प्रबुद्धता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करता है।

सुख, शिक्षा, घर, माता, प्रॉपर्टी

चतुर्थ भाव के स्वामी का चतुर्थ भाव में स्थित होना आपके ग्रह भाव को मजबूती प्रदान करता है। आपका घर आपकी शक्ति है और घर से ही आपको पहचान मिलती है। घर में मॉ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। हर घर में परिवार के सदस्यों के बीच मॉ सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र होती है। परिवार की एकता बनाये रखने के लिए मॉ घर के एक स्तम्भ के समान होती है। चतुर्थ भाव के स्वामी का चतुर्थ भाव में स्थित रहना यह दर्शाता है कि, आपको मॉ का बराबर सहयोग मिलेगा। घर और घर से जुड़े मामलों में आपकी व्यस्तता और सहभागिता होगी। आप अचल संपत्ति जैसे– जमीन तथा आवासीय संपत्ति खरीदने के इच्छुक रहेंगे। जीवन में बहुत जल्द आप संपत्ति खरीद लेंगे या घर के निर्माण संबंधी कार्यों में जुट जायेंगे। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। चतुर्थ भाव के स्वामी का चतुर्थ भाव में स्थित होना यह दर्शाता है कि, घर में भरण–पोषण को लेकर आपकी भूमिका बेहद अहम रहेगी। मॉ और परिवार के अन्य सदस्यों की खुशहाली व सुविधा के लिए आप प्रतिबद्ध रहेंगे। आपका व्यक्तित्व बेहद भावुक रहेगा। आप गहरी सोच और भावुक विचारों के धनी होंगे। हालांकि आप कभी भी भावुकता का ढोंग नहीं करेंगे।

बच्चे, मन, बुद्धि

पंचम भाव आपकी बुद्धि से संबंध रखता है और तृतीय भाव यह दर्शाता है कि, आप कैसे, कहां और कलात्मक रूप से अपनी बुद्धि का उपयोग करेंगे। तृतीय भाव आपकी मनोदशा आपके सहकर्मी, मित्र और पड़ोसियों से संबंध रखता है। पंचम भाव के स्वामी की तृतीय भाव में यह स्थिति भाई–बहन और सहकर्मियों से आपकी निकटता को दर्शाती है। आप हमेशा अपने मित्रों से घिरे रहेंगे या सहकर्मियों के साथ अपनी रुचि के कार्यों में व्यस्त रहेंगे। चूंकि तृतीय भाव महत्वाकांक्षा का भाव है अतः मानसिक तौर पर आपके लिए कुछ भी पर्याप्त नहीं होगा। आप जहां भी होंगे वहां अपने मित्र बना लेंगे और उनके साथ मनोरंजक व रुचि पूर्ण कार्यों में व्यस्त रहेंगे। पंचम भाव से गणना करने पर तृतीय भाव एकादश स्थान पर आता है और एकादश भाव विस्तार और फैलाव आदि को दर्शाता है। एकादश भाव के ये गुण आपके मस्तिष्क पर प्रभाव डालते हैं, इसके परिणामस्वरूप आपके व्यवहार में दूरदर्शी सोच, क्षमता और प्रदर्शन का अच्छा स्तर देखने को मिलेगा।

बीमारियाँ, ऋण, शत्रु

जन्म कुंडली में पंचम भाव हमें स्वयं के द्वारा अर्जित सम्मान और पूर्व जन्म के कर्ज को दर्शाता है, जबकि षष्ठम भाव वर्तमान जन्म में होने वाले कर्ज को दिखाता है। ये उधार या कर्ज किसी भी आकस्मिक संकट और अन्य कारणों से आ

सकता है, जिसका सामना हमें वर्तमान जन्म में करना पड़ सकता है। षष्ठम भाव के स्वामी का पंचम भाव में स्थित होना यह संकेत देता है कि यह स्थिति पंचम भाव से संबंधित मामलों के पक्ष में नहीं होगी। इसका यह मतलब हो सकता है कि, संतान सुख नहीं मिलने से मानसिक तनाव उत्पन्न होगा। चूंकि षष्ठम भाव अपने से द्वादश स्थान पर स्थित है इस वजह से षष्ठम भाव से संबंधित मामलों में हानि हो सकती है। यह स्थिति दर्शाती है कि, आप कठिन परिश्रम करना ज्यादा पसंद नहीं करेंगे। षष्ठम भाव आपके ननिहाल पक्ष का भी प्रतिनिधित्व करता है इसलिए जब षष्ठम भाव आपके पंचम भाव से जुड़ा रहेगा तो आपके अंकल और आंटी विशेष रूप से आपका पक्ष ले सकते हैं, साथ ही आपका कर्ज कम होगा।

विवाह, साथी

जन्म कुंडली में पंचम भाव मन, बौद्धिकता और रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रकट करता है। जबकि सप्तम भाव का संबंध आपके जीवन में अन्य महत्वपूर्ण लोगों की भूमिका से है। ये अन्य लोग आपका जीवन साथी या व्यावसायिक साझेदार हो सकते हैं। जब सप्तम भाव के स्वामी का प्रभाव आपके पंचम भाव पर पड़ता है, तो आपका झुकाव और लगाव सप्तम भाव से संबंधित मामलों में रहता है। जब सप्तम भाव का स्वामी अपने घर से एकादश स्थान पर स्थित रहता है, तो यह सप्तम भाव से संबंधित मामलों में वृद्धि को दर्शाता है। इस दौरान आपका मन लगातार आपको सप्तम भाव से संबंधित मामलों के लिए प्रेरित करता है। इसके अतिरिक्त आपके मन में अंतरंग और व्यक्तिगत संबंधों को लेकर सकारात्मक बदलाव आते हैं। इस बात की संभावना है कि, इस दौरान आपके मन की चंचलता की वजह से आपके अंदर कामुक विचारों की वृद्धि हो। आप कई मनोरंजक गतिविधियों जैसे– यात्रा और पिकनिक के माध्यम से जीवनसाथी को खुश रखने के बारे में सोचेंगे। सप्तम भाव के स्वामी की पंचम भाव में यह स्थिति दर्शाती है कि, आपके व्यावसायिक साझेदार आपकी सोचने की शैली और रचनात्मकता से प्रभावित रह सकते हैं। या फिर इस बात की भी संभावना है कि, आपकी रचनात्मकता और सोचने की क्षमता में जीवनसाथी की वजह से वृद्धि होगी और इसका सकारात्मक असर आपके कार्यक्षेत्र में देखने को मिलेगा। इसके अतिरिक्त कार्य को लेकर आपकी बौद्धिक उत्तेजना बढ़ेगी, जो कि आपको करियर या व्यवसाय में अधिक से अधिक प्रयास करने का साहस प्रदान करेगी। चूंकि पंचम भाव वंशवृद्धि यानि संतान सुख से भी संबंधित है इसलिए इस स्थिति का लाभ आपके जीवनसाथी को प्राप्त होगा।

दीर्घायु, खतरा, कठिनाइयाँ

कुंडली में तृतीय व अष्टम भाव दोनों ही बदलाव के कारक हैं। अष्टम भाव के कारण जीवन में नियति द्वारा बदलाव आते हैं, तो वहीं तृतीय भाव के प्रभाव से स्वैचछिक बदलाव होते हैं। तृतीय भाव शक्ति, धैर्य, छोटे भाई–बहन, सहभागियों व शौक का कारक होता है। अष्टम भाव के पास तीसरे भाव को नष्ट करने की शक्ति होती है। अष्टम भाव के प्रभाव से कुछ ऐसी अकस्मात घटनाएँ घट सकती हैं जो रिश्तों में हमेशा के लिए दूरी ला सकती हैं। अष्टम भाव जब अपने स्थान से आठवें घर यानि तृतीय भाव में जाता है, तब ये संभव है कि उस दौरान भाई–बहनों के साथ आपके रिश्ते में दरार आ जाए या फिर वो रिश्ता पूरी तरह से खत्म हो जाए। इस भाव में स्थित होने के कारण किसी पुराने मित्र या सहभागी के साथ दोस्ती टूट सकती है या फिर उनकी सेहत में गिरावट आ सकती है। इसके प्रभाव से भाई–बहन से प्राप्त होने वाला सुख व प्यार कम हो सकता है। तृतीय भाव में अष्टम भाव के स्वामी के स्थित होने से जीवनशैली में भी बहुत से बदलाव आने लग जाते हैं। आपके अपने शौक बदलने लग जाते हैं। तृतीय भाव आपकी चाल का भी प्रतिनिधित्व करता है और यदि इस भाव में अष्टम का दुष्प्रभाव आ जाए तो इससे चाल प्रभावित भी हो सकती है। जैसे– अगर आप किसी सड़क दुर्घटना में घायल हो गए तो इससे आपके रोजमर्रा के कार्यों में रुकावट आ सकती है। ये शारीरिक समस्याएं जैसे लकवा आदि का संकेत देता है। अष्टम भाव के स्वामी के तृतीय भाव में स्थित होने के कारण आप किसी लंबी बीमारी से भी पीडति हो सकते हैं, या लोगों के साथ मेल–मिलाप और संवाद में कमी आ सकती है जिससे आप तनाव ग्रस्त भी हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आपको मानसिक अस्थिरता का सामना करना पड़ सकता है।

भाग्य, पिता, विरासत

चतुर्थ भाव भावनाओं का कारक होता है इसी कारण इसका प्रभाव आपके घर, माता व घर से जुड़े अन्य लोगों पर पड़ता है। नवम भाव ज्ञान का भाव है। ये उच्च शिक्षा, बुद्धिमत्ता, शिक्षक, पिता और मार्गदर्शक को इंगित करता है। चतुर्थ भाव के जरिए आप कई अनुभवों का एहसास करेंगे तो वहीं नवम भाव के प्रभाव से ज्ञान अर्जित करेंगे साथ ही साथ आपकी बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी।

ये दोनों भाव शक्ति का एहसास दिलाते हैं। चतुर्थ भाव ध्यान के जरिए अर्जित की गई आंतरिक शक्ति को दिखाता है तो वहीं नवम भाव मानसिक शक्ति और परमात्मा की कृपा से प्राप्त हुई अच्छाइयों को इंगित करता है। जब नवम भाव का स्वामी चतुर्थ भाव में स्थित होता है तो वह अपने स्थान से आठवें भाव में होता है। इससे ये जाहिर है कि चतुर्थ भाव के प्रभाव से ही नवम भाव के स्वामी में बदलाव आते हैं। धर्म के कारक नवम भाव के प्रभाव से व्यवहार में सहनशीलता की कमी आ सकती है। चतुर्थ भाव जो सभी लोगों और सभी चीजों को दया के भाव से देखता है, इस भाव में स्थित नवम भाव का स्वामी सही चीजों को संतुलित करने की कोशिश करता है और न्यायाधीश की भूमिका निभाता है। ये भी संभव है कि आपके धार्मिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण में भी थोड़ी सी तब्दीलियां आएं और आप बदल जाएं। मातृपक्ष की तरफ निभाए जाने वाली पारंपरिक व सांस्कृतिक रस्मों में आपका रुझान बढ़ सकता है। ये आपकी माता की मजबूत छवि को भी इंगित करता है। इन सबके साथ ही चतुर्थ भाव में नवम भाव के स्वामी का स्थित होना परिवार के लोगों के सुख, अच्छे भाग्य आदि को इंगित करता है।

प्रोफेशन

चतुर्थ और दशम भाव दोनों परस्पर विपरीत स्वभाव रखते हैं। इनका उन्मुखीकरण और रुचि भी अलग–अलग होती हैं। जहां चतुर्थ भाव आपकी व्यक्तिगत दुनिया घर–परिवार, मॉ, भौतिक साधन आदि को दर्शाता है। वहीं दशम भाव सांसारिक जीवन में आपकी व्यावसायिक महत्वाकांक्षा और प्रेरणा को दर्शाता है। चतुर्थ भाव आपकी संवेदना के कई रंगों को प्रकट करता है, वहीं दशम भाव अवैयक्तिक स्वभाव को दर्शाता है। जब दशम भाव का स्वामी चतुर्थ भाव में रहता है तो वह अपने मूल भाव से सप्तम स्थान की दूरी पर रहता है। यह स्थिति दर्शाती है कि, आपका घर आपकी व्यावसायिक गतिविधियों का केंद्र बनेगा। यह स्थिति आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बीच एक संबंध को दर्शाती है। आप अपने घर से ही अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को संचालित करना अधिक पसंद करेंगे। इसलिए इस बात की संभावना है कि आपके घर में ही एक छोटा सा कार्यालय होगा। परिजन भी आपके साथ व्यावसायिक गतिविधि में जुड़े रहेंगे। इस बात की भी संभावना है कि आप अपनी मॉ या परिजनों के साथ पार्टनरशिप में व्यवसाय करें। आपके व्यावसायिक दृष्टिकोण पर चतुर्थ भाव का प्रभाव रहेगा। आप अपने कामकाजी जीवन को लेकर थोड़ा ज्यादा भावुक रहेंगे और हर व्यावसायिक कार्य में व्यक्तिगत तौर पर अधिक ध्यान देंगे। यह स्थिति इस बात को भी दर्शाती है कि, आप फ्रीलांसर के तौर पर भी कार्य कर सकते हैं या आप स्वयं घर बैठे एक सलाहकार के रूप में काम करें। आप रियल इस्टेट और प्रॉपर्टी के बिजनेस में एक डीलर या एजेंट के तौर पर कार्य कर सकते हैं। या फिर आप कंस्ट्रक्शन, सेल्स और मार्केटंग से जुड़ा बिजनेस कर सकते हैं।

आय, लाभ

तृतीय भाव आपके साहस, पहल, प्रयास, मानसिक स्तर, दोस्तों व हम–उम्र साथियों का कारक होता है। वहीं एकादश भाव लाभ, बड़े भाई–बहन, सफलता व आनंद आदि से संबंधित होता है। ये दोनों ही भाव काम यानि इच्छा के भाव हैं। जब एकादश भाव का स्वामी तृतीय भाव में स्थित होता है तो वह अपने स्थान से पंचम स्थान पर होता है। यह स्थिति मनोरंजन से भरी गतिविधियों और रुचियों में गहरी सहभागिता और भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। एकादश भाव के स्वामी के प्रभाव से तृतीय भाव के कारक तत्व खुद को विस्तारित कर लेते हैं और अपने दायरों को बढ़ाने लग जाते हैं। ये स्थिति भाई बहनों के साथ भी गहरे संबंध को दर्शाती है। ये भी संभव है कि इस स्थिति के दौरान ईश्वर की कृपा से आपके भाई–बहन की गिनती में बढ़ोत्तरी हो जाए और उनका ज्यादा प्यार मिले। इस दौरान स्नेह के बंधन के अलावा, आपके भाई–बहन बौद्धिक कार्यों में भी आपके साथ रूचि दिखाएँगे। इसका मतलब ये भी हो सकता है कि परिवार के बड़े भाई–बहन अपने छोटे भाई–बहनों के लिए दोस्त व सीनियर्स दोनों की भूमिका निभाएं। एकादश भाव के स्वामी का तृतीय

भाव में स्थित होने का ये संयोजन परिवार के बड़ों व छोटों के बीच सहज संचार व गहरी समझ को इंगित करता है। इसके साथ ही यह स्थिति ये भी इंगित करती है कि इस दौरान आपके भाई–बहनों या दोस्तों की हॉबीज व रूचियां और भी ज्यादा निखरेंगी व मनोरंजक होने के साथ–साथ बौद्धिक रूप से भी उभरेंगी। सहभागियों के साथ आपका संबंध बौद्धिक तौर पर स्थापित होगा भले ही इसकी शुरुआत एक छोटे कार्य से ही क्यों न हो। एकादश भाव के स्वामी के तृतीय भाव में स्थित होने की ये स्थिति आपकी वीरता, प्रयासों और साहस को बढ़ाने का भी कार्य करती है। इस दौरान आप अपने जीवन में अधिक पहल व प्रयास करेंगे। इस स्थिति से चाल भी प्रभावित होगी जिस कारण यात्रा के अवसर मिलते रहेंगे। आपके अंदर साहस की भावना बढ़ेगी जिसके चलते आप स्कूबा डाईविंग, पैराग्लाइडंग, राफ्टंग, सर्फंग, रॉक क्लाइम्बंग आदि गतिविधियों की ओर खुद को ले जाना पसंद करेंगे। इन सब गतिविधियों में शामिल होने से जो रोमांच आपको महसूस होगा वो आपको जोश व साहस से भर देगा।

खर्च, मोक्ष

जन्म कुंडली में पंचम भाव हमारी मानसिक क्षमता और शैक्षाणिक योग्यता के बारे में सूचित करता है। द्वादश भाव सभी प्रकार के अर्जित ज्ञान और बुद्धिमत्ता के विघटन का संकेत देता है। पंचम भाव सोच, समीक्षा और सृजन का कारक होता है। जब द्वादश भाव का स्वामी पंचम भाव में स्थित होता है तो वह अपने मूल भाव से षष्ठम स्थान की दूरी पर रहता है। यह स्थिति तर्कसंगत सोच और सवालों व जवाबों के दायरे से परे रहने वाली सोच के बीच संघर्ष को दर्शाती है। द्वादश भाव दृष्टिकोण में अलगाव लाता है, जबकि पंचम भाव लोगों और वस्तुओं को लेकर कठिन परीक्षा लेता है। हालांकि यह स्थिति शुरुआत में परेशानी उत्पन्न करती है। इस दौरान आपके पंचम भाव में बड़ा परिवर्तन होता है जब वह रहस्यमयी द्वादश भाव के साथ संघर्ष करता है। द्वादश भाव मानसिक क्षति पहुंचा कर दृष्टिकोण में अलगाव पैदा करता है, जो कि पंचम भाव से संबंधित बौद्धिक मान के लिए परेशानी उत्पन्न करता है। चूंकि द्वादश भाव का स्वभाव विध्वंसकारी है इसलिए आपके शैक्षणिक या स्कूली जीवन में आपको अप्रत्याशित घटनाओं और अड़चनों का सामना करना पड़ सकता है। इस बात की भी संभावना है कि शिक्षा के क्षेत्र में आपके लचर प्रदर्शन की वजह से आप उपेक्षा के शिकार हों। इसका यह परिणाम भी हो सकता है कि आपकी सोच में अलगाव की भावना जागृत हो जाये। आपकी प्रसव संबंधी क्षमता पर भी असर पड़ सकता है और संतान प्राप्ति में विलंब हो सकता है।

।। मंगलदोष विवेचन ।।

सामान्यतः मंगल दोष जन्म–कुण्डली में लग्न और चन्द्र से देखा जाता है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से पंचम भाव में स्थित है भाव में व चंद्र से षष्ट भाव में है।

अतः मंगल दोष न लग्न चार्ट में और न ही चंद्र चार्ट में उपस्थित है।
ऐसा माना जाता है कि मंगल दोष वैवाहिक जीवन में समस्याएँ खडी करता है।

ऐसा माना जाता है कि अगर एक मांगलिक व्यक्ति दूसरे मांगलिक व्यक्ति से विवाह करता है तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

ग्रह शांति (अगर मंगल दोष उपस्थित हो तो)

उपाय (विवाह से पहले किए जाने चाहिए)
कुंभ विवाह, विष्णु विवाह और अश्वत्थ विवाह मंगल दोष के सबसे ज्यादा मान्य उपाय हैं। अश्वत्थ विवाह का मतलब है पीपल या बरगद के वृक्ष से विवाह कराकर, विवाह के पश्चात् उस वृक्ष को कटवा देना।

उपाय (विवाह पश्चात् भी किए जा सकते हैं।)
1) केसरिया गणपति अपने पूजा गृह में रखें एवं रोज उनकी पूजा करें।
2) हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
3) महामृत्युंजय का पाठ करें।

उपाय (ये लालकिताब आधारित उपाय हैं जोकि विवाह पश्चात् किए जा सकते हैं)।
1) चिडियों को कुछ मीठा खिलाएँ।
2) घर पर हाथी–दांत रखें।
3) बरगद के पेड की पूजा मीठे दूध से करें

नोटः हमारा सुझाव है कि इन उपायों को करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह ले लें।

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

नाम	Pooja Sharma
दिनांक	23/8/1978
समय	23:53:18
जन्म स्थान	Delhi
लिंग	Female
राशि	मेष
तिथि	षष्ठी
नक्षत्र	भरणी

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
1	छोटी पनौती	वृश्चिक	दिसम्बर 21, 1984	मई 31, 1985	
2	छोटी पनौती	वृश्चिक	सितम्बर 17, 1985	दिसम्बर 16, 1987	
3	साढे साती	मीन	जून 02, 1995	अगस्त 09, 1995	उदय
4	साढे साती	मीन	फरवरी 17, 1996	अप्रैल 17, 1998	उदय
5	साढे साती	मेष	अप्रैल 18, 1998	जून 06, 2000	शिखर
6	साढे साती	वृशभ	जून 07, 2000	जुलाई 22, 2002	अस्त
7	साढे साती	वृशभ	जनवरी 09, 2003	अप्रैल 07, 2003	अस्त
8	छोटी पनौती	कर्क	सितम्बर 06, 2004	जनवरी 13, 2005	
9	छोटी पनौती	कर्क	मई 26, 2005	अक्टूबर 31, 2006	
10	छोटी पनौती	कर्क	जनवरी 11, 2007	जुलाई 15, 2007	
11	छोटी पनौती	वृश्चिक	नवम्बर 03, 2014	जनवरी 26, 2017	

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
12	छोटी पनौती	वृश्चिक	जून 21, 2017	अक्टूबर 26, 2017	
13	साढे साती	मीन	मार्च 30, 2025	जून 02, 2027	उदय
14	साढे साती	मेष	जून 03, 2027	अक्टूबर 19, 2027	शिखर
15	साढे साती	मीन	अक्टूबर 20, 2027	फरवरी 23, 2028	उदय
16	साढे साती	मेष	फरवरी 24, 2028	अगस्त 07, 2029	शिखर
17	साढे साती	वृशभ	अगस्त 08, 2029	अक्टूबर 05, 2029	अस्त
18	साढे साती	मेष	अक्टूबर 06, 2029	अप्रैल 16, 2030	शिखर
19	साढे साती	वृशभ	अप्रैल 17, 2030	मई 30, 2032	अस्त
20	छोटी पनौती	कर्क	जुलाई 13, 2034	अगस्त 27, 2036	
21	छोटी पनौती	वृश्चिक	दिसम्बर 12, 2043	जून 22, 2044	
22	छोटी पनौती	वृश्चिक	अगस्त 30, 2044	दिसम्बर 07, 2046	
23	साढे साती	मीन	मई 15, 2054	सितम्बर 01, 2054	उदय
24	साढे साती	मीन	फरवरी 06, 2055	अप्रैल 06, 2057	उदय
25	साढे साती	मेष	अप्रैल 07, 2057	मई 27, 2059	शिखर
26	साढे साती	वृशभ	मई 28, 2059	जुलाई 10, 2061	अस्त
27	साढे साती	वृशभ	फरवरी 14, 2062	मार्च 06, 2062	अस्त
28	छोटी पनौती	कर्क	अगस्त 24, 2063	फरवरी 05, 2064	
29	छोटी पनौती	कर्क	मई 10, 2064	अक्टूबर 12, 2065	

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
30	छोटी पनौती	कर्क	फरवरी 04, 2066	जुलाई 02, 2066	
31	छोटी पनौती	वृश्चिक	फरवरी 06, 2073	मार्च 30, 2073	
32	छोटी पनौती	वृश्चिक	अक्टूबर 24, 2073	जनवरी 16, 2076	
33	छोटी पनौती	वृश्चिक	जुलाई 11, 2076	अक्टूबर 11, 2076	
34	साढे साती	मीन	मार्च 20, 2084	मई 21, 2086	उदय
35	साढे साती	मेष	मई 22, 2086	नवम्बर 09, 2086	शिखर
36	साढे साती	मीन	नवम्बर 10, 2086	फरवरी 07, 2087	उदय
37	साढे साती	मेष	फरवरी 08, 2087	जुलाई 17, 2088	शिखर
38	साढे साती	वृशभ	जुलाई 18, 2088	अक्टूबर 30, 2088	अस्त
39	साढे साती	मेष	अक्टूबर 31, 2088	अप्रैल 05, 2089	शिखर
40	साढे साती	वृशभ	अप्रैल 06, 2089	सितम्बर 18, 2090	अस्त
41	साढे साती	वृशभ	अक्टूबर 25, 2090	मई 20, 2091	अस्त
42	छोटी पनौती	कर्क	जुलाई 03, 2093	अगस्त 18, 2095	

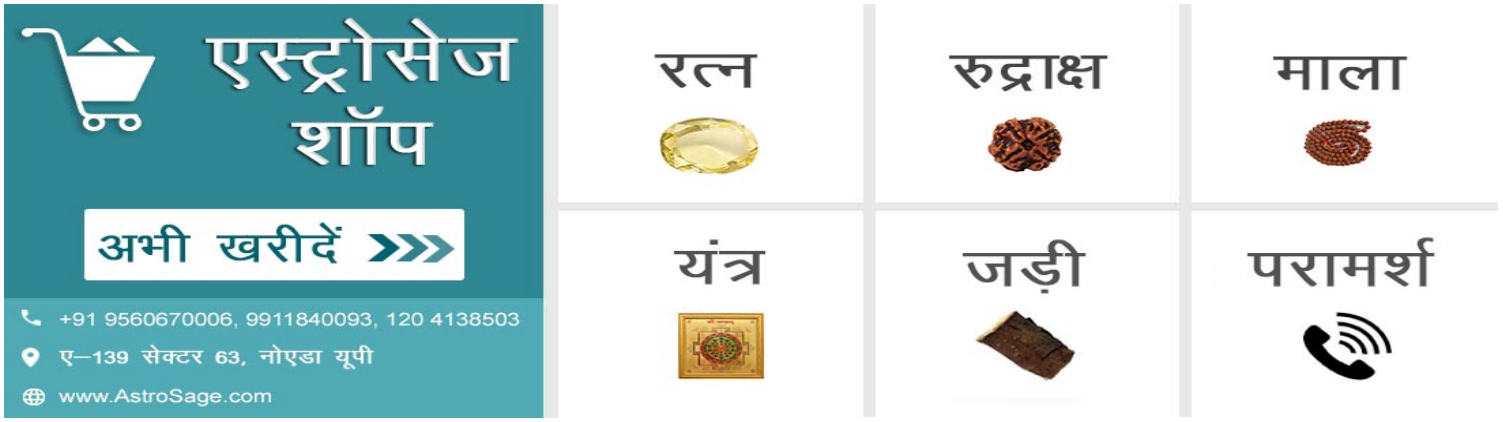

।। साढे साती रिपोर्ट ।।

शनि साढे सातीः उदय चरण

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। आम तौर पर यह आर्थिक हानि, छुपे हुए शत्रुओं से नुकसान, नुरुद्देश्य यात्रा, विवाद और निर्धनता को दर्शाता है। इस कालखण्ड में आपको गुप्त शत्रुओं द्वारा पैदा की हुई समस्याओं का सामना करना पङ सकता है। सहकर्मियों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे और वे आपके कार्यक्षेत्र में बाधाएँ खङी कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पङ सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। आपको अपने खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है, अन्यथा आप अधिक बङे आर्थिक संकट में फँस सकते हैं। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी। शनि का स्वभाव विलम्ब और तनाव पैदा करने का है। हालाँकि अन्ततः आपको परिणाम जरूर मिलेगा। इसलिए धैर्य रखें और सही समय की प्रतीक्षा करें। इस दौर को सीखने का समय समझें और कङी मेहनत करें, परिस्थितियाँ स्वतः सही होती चली जाएंगी। इस समय व्यवसाय में कोई भी बङा खतरा या चुनौती न मोल लें।

शनि साढे सातीः शिखर चरण

यह शनि साढ़े साती का चरम है। प्रायः यह दौर सबसे मुश्किल होता है। इस समय चन्द्र पर गोचर करता हुआ शनि स्वास्थ्य–संबंधी समस्या, चरित्र–हनन की कोशिश, रिश्तों में दरार, मानसिक अशान्ति और दुःख की ओर संकेत करता है। इस दौरान आप सफलता पाने में कठिनाई महसूस करेंगे। आपको अपनी कङी मेहनत का परिणाम नहीं मिलेगा और खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा–तन्त्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। साथ ही आपको मानसिक अवसाद और अज्ञात भय या फोबिया आदि का सामना भी करना पङ सकता है। संभव है कि इस काल–खण्ड में आपकी सोच, कार्य और निर्णय करने की क्षमता में स्पष्टता का अभाव रहे। संतोषपूर्वक परिस्थितियों को स्वीकार करना और मूलभूत काम ठीक तरह से करना आपको इस संकट की घङी से निकाल सकता है।

शनि साढे सातीः अस्त चरण

यह शनि साढ़े साती का अन्तिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। साढ़े साती के दो मुश्किल चरणों से गुजरने के बाद आप कुछ राहत महसूस करने लगेंगे। फिर भी इस दौरान गलतफहमी आर्थिक दबाव देखा जा सकता है। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक हुई आर्थिक हानि और चोरी की संभावना को भी इस दौरान नहीं नकारा जा सकता है। आपकी सोच नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बङी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई–लिखाई पर थोङा नकारात्मक प्रभाव पङ सकता है और उन्हें पिछले स्तर पर बने रहने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे–धीरे और प्रायः हमेशा विलम्ब से प्राप्त होंगे। यह काल–खण्ड खतरे को भी दर्शाता है, अतः गाङी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें। यदि आप समझदारी से काम लेंगे, तो घरेलू व आर्थिक मामलों में आने वाली परेशानियों को भली–भांति हल करने में सफल रहेंगे।

नोटः उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और आम धारणाओं पर आधारित हैं, जिसके अनुसार साढ़े साती अनिष्टकारक होती है। किन्तु हमारे अनुभव के अनुसार प्रत्येक स्थिति में ऐसा नहीं होता है, सिर्फ साढ़े साती के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है और उसके गलत होने की काफी संभावना रहती है। साढ़े साती की अवधि अच्छी रहेगी या बुरी, यह तय करने से पहले कुछ अन्य चीजों जैसे वर्तमान में चल रही दशा और शनि के स्वभाव आदि के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। आपको सलाह दी जाती है कि उपर्युक्त फलकथन को गंभीरता से न लें और यदि आपके मन में कुछ शंका है, तो किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श लें।

।। कालसर्प दोष ।।

कालसर्प दोष – योग

प्रचलित परिभाषा के अनुसार जब जन्म कुंडली में सम्पूर्ण ग्रह राहु और केतु ग्रह के बीच स्थित हों तो ऐसी स्थित को ज्योतिषी कालसर्प दोष का नाम देते हैं। वर्तमान में इस दोष की चर्चा ज्योतिषियों के मध्य जोरों पर हैं। किसी भी जातक के जीवन में कोई भी परेशानी हो और उसकी कुण्डली में यह योग या दोष हो तो अन्य पहलुओं का परीक्षण किए बगैर बहुधा ज्योतिषी यह निष्कर्ष सुना देते हैं कि संबंधित जातक पर आने वाली उक्त प्रकार की परेशानियां कालसर्प योग के कारण हो रही हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि यदि कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियां ठीक हों तो अकेला कालसर्प दोष नुकसानदायी नहीं होता। बल्कि वह अन्य ग्रहों के शुभफलदायी होने पर यह दोष योग की तरह काम करता है और उन्नति में सहायक होता है। वहीं अन्य ग्रहों के अशुभफलदायी होने पर यह अशुभफलों में वृद्धि करता है। अतरू मात्र कालसर्प दोष का नाम सुनकर भयभीत होना ठीक नहीं है बल्कि इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उससे मिलने वाले प्रभावों और दुष्प्रभावों की जानकारी लेकर उचित उपाय करना श्रेयष्कर होगा। इस मामले में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि इस योग का असर अलग–अलग जातकों पर अलग–अलग प्रकार से देखने को मिलता है। क्योंकि इसका असर किस भाव में कौन सी राशि स्थित है और उसमें कौन–कौन ग्रह बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है, इन विन्दुओं के आधार पर पडता है। साथ ही कालसर्प दोष या योग किन–किन भावों के मध्य बन रहा है, इसके अनुसार भी इस दोषध्योग का असर पडता है। भाव स्थिति के अनुसार इस योग या दोष को बारह प्रकार का माना गया है।

परिणामः आपकी कुण्डली कालसर्प दोष – योग से मुक्त है।

लग्न चक्रः

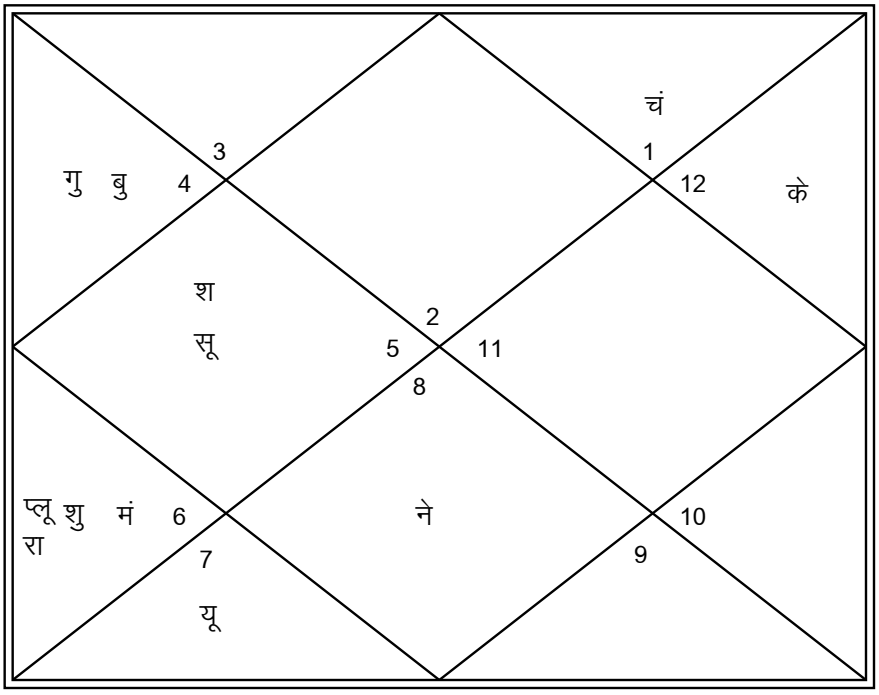

।। विंशोत्तरी महादशा फल ।।

शुक्र महादशा फल (जन्म से जनवरी 25, 1994)

शुक्र कन्या आपके पंचम भाव में स्थित है:

इस अवधि के दौरान आप स्त्रीवर्ग की ओर आकर्षित रहेंगे। इस अवधि में अचानक ऐसी घटनाएं घटेंगी जो आपके लिये हितकर हो। इसके अलावा इस दौरान आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और खुशहाली भी बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। बहु प्रतीक्षित अभिलाषाओं की सम्पूर्ति होगी। यदि आप में सृजनात्मक क्षमता है तो इस अवधि के दौरान आपकी कला संगीत इत्यादि में सफलदायक गति रहेगी। सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा और पुराने मित्रों सहयोगियों से मुलाकात होगी। संचार के माध्यम से आपको कोई बहुत अच्छी खबर भी मिल सकती है।

सूर्य महादशा फल (जनवरी 25, 1994 से जनवरी 25, 2000)

सूर्य सिंह आपके चतुर्थ भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपको मेहनत करनी पड़ेगी जो आप कर नहीं पायेंगे। लगातार किया गया कड़ा परिश्रम थका भी शीघ्र देगा और कार्य क्षमता भी कम हो जायेगी। बुरे कार्यों में प्रवृती रहने की आपकी चेष्टा रहेगी। मां बाप का बुरा स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा। कार या कोईवाहन बहुत तेजी से न चलाएं।

चन्द्र महादशा फल (जनवरी 25, 2000 से जनवरी 25, 2010)

चन्द्र मेष आपके द्वादश भाव में स्थित है:

अभी आप बहुत खर्च न करें। व्यय पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य के लिहाज से भी यह अच्छा समय नहीं है। व्यर्थ की यात्राओं से बचें। परामनोवैानिक एवम् गूढ़ अनुभवों को प्राप्त करने के लिये आपका झुकाव रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। कठोर भाषा से परेशानी में पड़ सकते हैं। सट्टे बाजी से बचें।

मंगल महादशा फल (जनवरी 25, 2010 से जनवरी 25, 2017)

मंगल कन्या आपके पंचम भाव में स्थित है:

आप सावधान रहें क्योंकि आपकी बुद्धि भ्रमित हो सकती है। स्वास्थ्य एवं पारिवारिक सदस्यों के कारण परेशानी होगी। सट्टेबाजी से बचें। कुछ ऐसे खर्चे भी करने पड़ेंगे जो आपके नियंत्रण से बाहर होंगे। मित्र एवं सहयोगियों से निराशा हाथ लगेगी। यात्रा से थकान होगी।

राहू महादशा फल (जनवरी 25, 2017 से जनवरी 25, 2035)

राहू कन्या आपके पंचम भाव में स्थित है:

सही निर्णय लेने की आपकी क्षमता और योग्यता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। आप अपने आस पास भ्रम का विश्व बना लेना चाहेंगे। झूठी आशाएं आपके लक्ष्य को भ्रमित कर देंगी। सट्टेबाजी की प्रवृति पर पूरा अंकुश लगाये। मित्रों से संबंध मधुर नहीं रहेंगे। किसी मुकदमेबाजी के चक्कर में अपने आपको न फंसायें। किसी के जमानती बनने की चेष्टा न करें। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें। फूड पाइजनिंग के कारण पेट के रोग उभर सकते हैं।

।। विंशोत्तरी महादशा फल ।।

गुरू महादशा फल (जनवरी 25, 2035 से जनवरी 25, 2051)

गुरू कर्क आपके तृतीय भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपके क्रियाकलाप प्रशंसा के हकदार होंगे और आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका आत्मविश्वास बढा चढ़ा रहेगा। आपका सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा। छोटी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। पारिवारिक उत्थान के लिये आप कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना चाहेंगे। अगर आप शादी शुदा हैं तो वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा। सहयोगियों और भागीदारों से खूब पटेगी। किसी बुजुर्ग से आप सहारा प्राप्तकरेंगे। छोटे मोटे रोगों के उभरने की भी संभावना है।

शनि महादशा फल (जनवरी 25, 2051 से जनवरी 25, 2070)

शनि सिंह आपके चतुर्थ भाव में स्थित है:

आप पर ऐसी बातों के झुठे इल्जाम लगाए जा सकते हैं जिनमें आपका सहयोग नगण्य रहा हो। पारिवारिक सुख का भी अभाव रहेगा। प्रयासों में असफलता अवसाद पैदा कर देगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अगर कोई लंबी बीमारी भोग रहे हैं तो पूरे परहेज से रहें। आपके विरोधी आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। बहसों में न उलझें तो ठीक रहेगा। सांसारिक सुखों के लिहाज से यह समय अच्छा नहीं है फिर भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में लगे रहने से कुछ राहत महसूस होगी।

बुध महादशा फल (जनवरी 25, 2070 से जनवरी 25, 2087)

बुध कर्क आपके तृतीय भाव में स्थित है:

आपकी मेहनत रंग लायेगी। छोटी यात्राएं अच्छा फल प्रदान करेंगी। विदेश स्थलों से अच्छी खबर मिलेगी। भाई बहिनों से सहायता मिलेगी। नये लोगों से सम्पर्क आपके सौभाग्य के कारण बढेंगे और अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। पुराने दोस्तों से मुलाकात होगी। अगर आप प्रकाशन या ऐजेन्सी के काम से सम्बंधित हैं तो शुभ परिणाम सामने आयेंगे। आपमें कलात्मक अभिव्यक्ति प्रकट करने की क्षमता होगी तथा भावनात्मक अभिनय की सहज प्रतिभा रहेगी।

केतु महादशा फल (जनवरी 25, 2087 से जनवरी 25, 2094)

केतु मीन आपके एकादश भाव में स्थित है:

अचानक परिस्थितियां आपके काफी अनुकूल होती जायेंगी। कुछ व्यापारिक सौदे आपको काफी लाभावत कर देंगे। मित्र और हितैषियों का पूरा सहयोग रहेगा। उच्च कोटि के शारीरिक या मांसल सुख आपको प्राप्त होंगे। अगर नौकरीपेशा हैं तो पदोन्नति प्राप्त करेंगे। इस अवधि में लम्बी यात्रा की भी प्रबल संभावना है। पारिवारिक जीवन संतोष प्रदान करेगा। सामाजिक क्षेत्र में आप प्रचुर प्रतिष्ठा और सम्मान के भागी होंगे।

।। अंतर्दशा फल ।।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की जन्म कुंडली में उपस्थित ग्रह अनेक रूपों में प्रभाव डालते हैं। कुंडली में बनने वाले अच्छे अथवा बुरे योगों का फल विभिन्न ग्रहों की अवधि में प्राप्त होता है। इसी कारण वैदिक ज्योतिष में ग्रहों को दशा समय के विभिन्न गणनाओं के आधार पर एक सीमा में बांधा गया है। यहाँ विंशोत्तरी दशा पद्धति के आधार पर गणना की गई है। जन्म के समय चंद्रमा द्वारा अधिष्ठित नक्षत्र के स्वामी की दशा जन्म के समय प्राप्त होती है और अन्य ग्रहों की दशाएँ उसके आगे अपना प्रभाव छोड़ती जाती है। प्रत्येक ग्रह की महादशा में सभी ग्रहों की अंतर्दशाएँ (भुक्ति) आती हैं। हालाँकि पूर्ण प्रभाव का अनुभव जन्म कुंडली के साथ–साथ दशा तथा गोचर पर निर्भर करता है जिसके लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है जो कि एक विद्वान, दैवज्ञ (ज्योतिषी) द्वारा ही संभव है। आपकी कुंडली में विभिन्न दशाओं की दशावधि निम्नलिखित है:

राहु महादशा

राहु की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतरदशा का फल

राहु अंतर्दशा(6/12/2016-18/ 8/2019)

राहु की महादशा के दौरान राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 माह और 12 दिन की होगी। राहु क्रांतिकारी विचार व सोच, भ्रम, सम्मोहन और त्वरित घटना आदि का कारक होता है।

इस अवधि में आपके जीवन पर राहु का अधिक प्रभाव रहेगा। इसके फलस्वरूप आप कुछ ऐसे गलत निर्णय ले सकते हैं जिसकी वजह से सार्वजनिक जीवन में आपकी छवि को नुकसान पहुंच सकता है। आप परंपरा के विरुद्ध जा सकते हैं और आपकी यह सोच प्रियजनों को बेहद गलत लगेगी। आप गुप्त रोग या किसी अन्य बीमारी से पीडति रह सकते हैं और इस स्थिति में आपका इलाज इतना आसान नहीं होगा। इस अवधि में विवाद और धन हानि हो सकती है। अगर विदेश जाने की इच्छा है और आप इसके लिए प्रयास कर रहे हैं तो आपको सफलता मिलने की संभावना है।

इसके अलावा दूषित भोजन करने से बचें। क्योंकि खराब खाना खाने से संक्रमण और पेट दर्द की शिकायत हो सकती है। विरोधी आप पर हावी होंगे, इससे मानसिक तनाव बढ़ेगा। करियर के क्षेत्र में अचानक सफलता मिलने के योग हैं। सुखद जीवन जीने और सफलता प्राप्त करने के लिए आप चतुराई से काम लेंगे। महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले अच्छी तरह से सोच–विचार करें।

बृहस्पति अंतर्दशा(18/ 8/2019-12/ 1/2022)

राहु की महादशा के दौरान बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 4 माह और 24 दिन की होगी। राहु और बृहस्पति परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। क्योंकि बृहस्पति एक शुभ ग्रह है जबकि राहु एक क्रूर ग्रह है इसलिए इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम देखने को मिलेंगे।

इस अवधि में आपकी सेहत अच्छी रहेगी, साथ ही अगर कोई पुरानी बीमारी से पीडति हैं तो उसमें सुधार देखने को मिलेगा। आप अपने शत्रु और विरोधियों पर हावी रहेंगे। उच्च संस्था से लाभ मिलने की संभावना है। आपको मौद्रिक लाभ की प्रापति होगी, साथ ही घर में बच्चे का जन्म होने की संभावना है।

इसके अलावा घर पर कोई धार्मिक और मांगलिक कार्य संपन्न हो सकता है। भक्ति और आध्यातमिकता की ओर आपका झुकाव बढ़ेगा। आप रहस्यमयी विद्या के बारे में सीखना और जानना चाहेंगे। अचनाक धन हानि, विवाद और अड़चन पैदा होने की संभावना है। आपके अंदर या तो धार्मिक प्रवृत्ती बढ़ेगी या फिर वैचारिक रूप से समृद्ध होंगे। इस दशा के दौरान आपकी दिमागी क्षमता व ज्ञान बढ़ेगा और आप विभिन्न विषयों पर लोगों के बीच बोलने में समर्थ होंगे।

शनि अंतर्दशा(12/ 1/2022-18/11/2024)

राहु की महादशा के बीच शनि की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 माह और 6 दिन की होगी। राहु और शनि दोनों मित्र ग्रह हैं लेकिन दोनों क्रूर ग्रह के नाम से जाने जाते हैं। शनि स्वभाविक रूप से मंद है जबकि राहु में तेजी का भाव है इसलिए इन दोनों

ग्रहों के विपरीत प्रभाव का असर मानव जीवन पर पड़ता है।

इस अवधि में मानसिक तनाव बढ़ेगा और आपकी ऊर्जा का उपयोग विपरीत दिशा में होगा। इस वजह से आपकी निर्णय लेने की क्षमता पर असर पड़ेगा। भाई–बहन, प्रियजन व मित्रों को कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान कुछ समय के लिए आपको उनसे दूर भी रहना पड़ सकता है। विदेश जाने या फिर वर्तमान स्थान से दूर जाने की संभावना है।

इसके अलावा कार्य स्थल पर आपका कद घट सकता है इसलिए काम से जुड़ी हर छोटी से छोटी बातों पर ध्यान दें और एकाग्रता के साथ बेहतर प्रयास करें। शरीर में पित्त संबंधी परेशानी हो सकती है। इस समय अवधि में मानसिक असथिरता रहेगी इसलिए संयम के साथ काम लें और अतीत को भूलकर कड़ी मेहनत करें।

बुध अंतर्दशा(18/11/2024-6/ 6/2027)
राहु की महादशा के बीच बुध की अंतर्दशा करीब 2 वर्ष 6 माह और 18 दिन की होगी। राहु और बुध परस्पर पर सामान्य संबंध रखते हैं इसलिए इस दशा की समय अवधि में आप सुखद परिणाम की आशा कर सकते हैं।

इस अवधि में आपकी दिमागी क्षमता और बौद्धिक ज्ञान में वृद्धि होगी। आप अपनी बौद्धिक क्षमता और एकाग्रता की जहां आवश्यकता होगी वहां बेहतर उपयोग करेंगे। आप भाई–बहनों और मित्रों का साथ पाकर खुश होंगे। सामाजिक जीवन में मेलजोल बढ़ेगा और आप अक्सर सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए घर से बाहर रहेंगे। आपके जीवन में किसी नए रिश्ते की शुरुआत हो सकती है।

इसके अलावा आप धन का संचय करने में सफल होंगे। आपको कई साधनों से आय और वृद्धि मिलेगी और पूंजी का आवागमन सामान्य रूप से चलता रहेगा। आपके नाम को नई पहचान मिलेगी और प्रसिद्धि बढ़ेगी। दिमागी कार्य अधिक करने से थकावट महसूस होगी।

केतु अंतर्दशा(6/ 6/2027-24/ 6/2028)
राहु की महादशा के दौरान केतु की अंतर्दशा करीब 1 वर्ष और 18 दिन की होगी। राहु और केतु दोनों ही क्रूर ग्रह है इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको सावधान रहने के साथ–साथ कुछ चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।

इस अवधि में धन हानि और आय में गिरावट हो सकती है। वित्तीय स्थिति में गिरावट होने की संभावना है। ऐसे किसी कार्य या षडयंत्र से दूर रहने की कोशिश करें, जिसकी वजह से समाज में आपकी मानहानि हो जाये। अगर बच्चे हैं तो उन्हें स्वास्थ्य संबंधी परेशान हो सकती है इसलिए उनका विशेष ध्यान रखें।

इसके अलावा यदि आपके पास गाय, बैल है तो उन्हें स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। विरोधी आप पर हावी रहेंगे। चोरी या आगजनी की घटना का भय बना रहेगा। इस समय अवधि में आप दुर्घटना, शल्य क्रिया, बुखार या पित्त संबंधी परेशानी से पीडति रह सकते हैं। दूषित भोजन का सेवन करने से बचें क्योंकि यह आपके लिए घातक साबित हो सकता है।।

शुक्र अंतर्दशा(24/ 6/2028-24/ 6/2031)
राहु की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा लगभग 3 वर्ष की होगी। शुक्र ग्रह सुंदरता, भौतिक सुख–साधन और इच्छा का कारक कहा जाता है जबकि राहु तीव्र और बड़े परिवर्तन का कारक है। इन दोनों ग्रहों के संयोग से मनुष्य की आशा–आकांक्षा में वृद्धि होती और और कम समय में उन्हे पाने की लालसा रहती है। इस दशा अवधि में आपको मिश्रित परिणाम मिलेंगे लेकिन इनमें ज्यादातर सुखद होंगे।

इस अवधि में आपके अंदर कामुक विचारों की वृद्धि होगी। आपके मन में कामुक क्रियाओं में लिप्त रहने की लालसा रहेगी। आप कोई नया वाहन खरीद सकते हैं, भौतिक सुख–सुविधा की प्राप्ति और विदेश यात्रा पर जा सकते हैं। आपका

सामाजिक दायरा बढ़ेगा और आपको कई माध्यमों से लाभ की प्राप्ति होगी। सरकार की ओर से लाभ प्राप्ति की संभावना है। यदि विवाहित हैं तो किसी नए रिश्ते की संभावना है, इसलिए इस तरह के रिश्तों से दूर रहें और अपने वैवाहिक जीवन का आनंद लें। यदि आप अविवाहित हैं तो आपको किसी का साथ मिलेगा, नए प्रेम प्रसंग बनेंगे। इस दौरान आपकी लव मैरिज भी हो सकती है।

इसके अलावा स्वास्थ्य संबंधी विकार परेशान कर सकते हैं, विरोधी आप पर हावी रहेंगे और परिजनों से विवाद की संभावना है। इस अवधि में आप बड़ी व क्रांतिकारी सोच रखेंगे, इस वजह से आप कई मामलों में परिवार की सोच के विरुद्ध भी जा सकते हैं। कुल मिलाकर इस दशा अवधि में आपको लाभ होगा और भौतिक सुख–सुविधाओं में बढ़ोतरी होगी।

सूर्य अंतर्दशा(24/ 6/2031-18/ 5/2032)
राहु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा लगभग 10 महीने और 24 दिन की होगी। राहु और सूर्य एक–दूसरे से शत्रुता का भाव रखते हैं। सामान्यतः इस दशा में राहु अशुभ परिणाम देता है लेकिन कभी–कभी यह दशा मनुष्य का जीवन संवार देती है।

इस अवधि में आप धार्मिक और पवित्र कार्यों में अत्याधिक रूचि दिखाएंगे। आप पहले की तुलना में अधिक उदारवादी और धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। विवाद और अन्य प्रकरणों में आपकी विजय एक विजेता के रूप में होगी। हालांकि आपके विरोधी भी शक्तिशाली होंगे और वे आपको परास्त करने की कोशिश कर सकते हैं। इस दशा अवधि में दूषित भोजन, आग और हथियारों से दूर रहें।

इसके अलावा आप संक्रामक रोग की चपेट में आ सकते हैं। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं या किसी वजह से आपको अपने वर्तमान निवास स्थान से दूर जाकर रहना पड़ सकता है। बुखार और अतिसार से पीडति रह सकते हैं। किसी कानूनी मामले में ना पड़े और दखल देने से बचें। क्योंकि यह आपकी मानहानि का कारण बन सकता है, साथ ही आपको इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है। उच्च अधिकारियों से अच्छे संबंध बनाकर चलें।

चंद्र अंतर्दशा(18/ 5/2032-18/11/2033)
राहु की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा करीब 1 वर्ष 6 माह की होगी। चंद्रमा और राहु एक–दूसरे से शत्रुता का भाव रखते हैं। सामान्यतः राहु की अंतर्दशा में अशुभ फल मिलता है लेकिन कभी–कभी यह मनुष्य को बहुत लाभ पहुंचाती है।

इस अवधि में राहु का प्रभाव आपके मन–मस्तिष्क पर हावी रहेगा। आप मानसिक तनाव से परेशान रह सकते हैं या फिर किसी बात को लेकर आप बेहद महत्वकांक्षी रह सकते हैं। भौतिक सुख–सुविधाओं का आनंद लेंगे और धन का आवागमन बढ़ सकता है। इस अवधि में आप स्वादिष्ट भोजन का आनंद भी उठाएंगे। मानसिक तनाव को दूर करने के लिए प्राणायाम आपके लिए लाभकारी रहेगा।

इसके अलावा इस अवधि में परिजनों के साथ विवाद हो सकता है और जल से भय रहेगा। आपको किसी न्यायिक प्रकरण का सामना करना पड़ सकता है। किसी भी प्रकार के विवाद से दूर रहने की कोशिश करें और अपने प्रियजन का ख्याल रखें। यदि मानसिक शांति प्राप्त करने में सफल रहे तो आप भौतिक सुख–साधनों का आनंद लेंगे।

मंगल अंतर्दशा(18/11/2033-6/12/2034)
राहु की महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी। राहु और मंगल परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। ये दोनों ग्रह एक–दूसरे से शत्रुता का भाव रखते हैं, इसलिए इस दशा की अवधि में मतभेद होने की संभावना है।

इस अवधि में आपको कुछ मतभेद और विवादों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि आपको साहस के साथ इन सभी चुनौतियों का सामना करना चाहिए। मानसिक तनाव होने से बेचौनी बढ़ेगी, जो आपके चेहरे पर साफ देखने को मिलेगी। इसलिए अपने प्रियजनों के साथ विवाद करने से बचें और आपसी सद्भाव बनाए रखें।

इसके अलावा नौकरी में परिवर्तन और कार्य स्थल पर पदोन्नति की संभावना है। इस अवधि में राहु और मंगल का संयोग आपको प्रभावित करेगा। इसका असर आपकी सेहत पर पड़ सकता है इसलिए स्वास्थ्य पर ध्यान दें, साथ ही यदि विवाहित हैं तो जीवन साथी और बच्चों की सेहत पर भी ध्यान देने की जरुरत है।

बृहस्पति महादशा

बृहस्पति की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतरदशा का फल

बृहस्पति अंतर्दशा(6/12/2034-24/ 1/2037)

बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा करीब 2 वर्ष 1 माह और 18 दिन की होगी। बृहस्पति को ज्ञान, प्रगति, भाग्य, विश्वास, प्रसिद्धि, कानून और बच्चों आदि का कारक कहा जाता है। महिला जातकों के लिए बृहस्पति विवाह का कारक भी होता है। यह शरीर में वसा को नियंत्रित करता है।

इस अवधि में आपके जीवन पर बृहस्पति का व्यापक प्रभाव रहेगा। सरकार और उच्च संस्थाओं से लाभ प्राप्ति की संभावना है। आपकी योजना और काम सफल होंगे। आप विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होंगे, जो भविष्य में आपको उन्नति और सफलता की ओर लेकर जाएंगे। अगर आप पढ़ाई कर रहे हैं या कुछ सीख रहे हैं, तो इस अवधि में आपको इसके बेहतर परिणाम देखने को मिलेंगे। साथ ही कुछ नया सीखने को लेकर आपकी एकाग्रता में वृद्धि होगी। ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल इच्छा होगी, साथ ही आपको स्कॉलर्स और बुद्धिजीवी व्यक्तियों का साथ मिलेगा।

यदि विवाहित और घर परिवार वाले हैं तो धन लाभ होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। भाग्य आपका हर कदम पर साथ देगा और आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। उदारवादी और दानी प्रवृत्ति होने से धार्मिक कार्यों में शामिल होने की ओर झुकाव बढ़ेगा।

शनि अंतर्दशा(24/ 1/2037-6/ 8/2039)

बृहस्पति की महादशा में शनि की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 6 माह और 12 दिन की होगी। बृहस्पति और शनि परस्पर सामान्य संबंध रखते हैं इसलिए इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

इस अवधि में आप दान–धर्म या सामाजिक कार्यों में अधिक रुचि लेंगे। आपके अंदर दूसरों की मदद करने की भावना रहेगी। वहीं दूसरी ओर आप उन्मादी हो सकते हैं और किसी रिश्ते में लिप्त रह सकते हैं हालांकि यह रिश्ता आपके लिए अच्छा साबित नहीं होगा। धन हानि और स्वास्थ्य में गिरावट की संभावना है। आप एकजुट होकर रहना पसंद करेंगे। यदि परिस्थितियां आपके विपरीत हुई तो आप बेचौन हो जाएंगे और दूसरों से ईर्ष्या की भावना रख सकते हैं।

इसके अलावा मानसिक तनाव आप पर हावी रहेगा। अगर आपके बच्चे हैं, तो वे आर्थिक नुकसान की वजह बन सकते हैं। इस अवधि में कोई महत्वपूर्ण फैसला लेने से बचें और उसे कुछ समय के लिए टाल दें। यदि आप आध्यातमिक चिंतन–मनन कर रहे हैं तो इस समय अवधि में आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे, साथ ही धर्म और आध्यात्म से जुड़े कामों में अधिक सक्रिय होंगे।

बुध अंतर्दशा(6/ 8/2039-12/11/2041)

बृहस्पति की महादशा में बुध की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 3 माह और 6 दिन की होगी। बृहस्पति और बुध दोनों शुभ ग्रह हैं। हालांकि ये दोनों ग्रह परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे लेकिन ज्यादातर समय परिणाम आपके पक्ष में रहेंगे।

इस अवधि में आप अपने व्यापार और व्यवसाय में लाभ कमाने में सफल होंगे। यदि आप सरकारी कर्मचारी व अधिकारी हैं तो आपको लाभ की प्राप्ति हो सकती है, साथ ही उच्च अधिकारी आपके पक्ष में रहेंगे। धार्मिक कार्यों के प्रति आपका झुकाव बढ़ेगा और इसके फलस्वरूप आपके बौद्धिक स्तर व ज्ञान में वृद्धि होगी। इस अवधि में आप ईश्वर की आराधना में लीन

रहेंगे व तीर्थ दर्शन के लिए भी जा सकते हैं।

इसके अलावा इस अवधि में आप नया वाहन खरीद सकते हैं। यदि आपके बच्चे हैं तो आप उनके साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे और वे आपको मुस्कुराने की कई वजह देंगे। आप आंतरिक शांति महसूस करेंगे साथ ही पारिवारिक सद्भाव भी बना रहेगा। इस समय अवधि में आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी होंगे साथ ही विदेश जाने की प्रबल संभावना होगी।

केतु अंतर्दशा(12/11/2041-18/10/2042)
बृहस्पति की महादशा में केतु की अंतर्दशा लगभग 11 महीने 6 दिन की होगी। बृहस्पति और केतु परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। क्योंकि बृहस्पति शुभ ग्रह है जबकि केतु क्रूर ग्रह है इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको मिश्रित परिणाम देखने को मिलेंगे।

इस अवधि में आप स्वयं को धार्मिक कार्यों में व्यस्त रखेंगे और तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए अधिक उत्साहित रहेंगे। कई माध्यमों से आपको लाभ प्राप्त होगा और आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। गुरु, शिक्षक, परिवार के बड़े सदस्य और कार्य स्थल पर अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं।

इसके अलावा शस्त्र और क्रोध को लेकर सावधान रहें। कार्य स्थल पर सेवक या अधीनस्थ कर्मचारियों से आपके संबंध बेहतर रहने की संभावना कम है, हो सकता है कि आपका उनसे विवाद जाए इसलिए अपने व्यवहार में संयम बरतें। मानसिक तनाव अधिक होने से आपकी निर्णयन क्षमता प्रभावित होगी।

शुक्र अंतर्दशा(18/10/2042-18/ 6/2045)
बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष और 8 माह की होगी। बृहस्पति और शुक्र दोनों ही शुभ ग्रह हैं लेकिन बृहस्पति शुक्र को अपना शत्रु मानता है जबकि शुक्र बृहस्पति के प्रति सामान्य भाव रखता है। इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको मिश्रित परिणाम की प्राप्ति होगी।

इस अवधि में आप भौतिक सुख–सुविधाओं का आनंद लेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होने के साथ–साथ लाभ की प्राप्ति होगी। कार्य स्थल पर पदोन्नति और वेतन बढ़ोतरी की संभावना है। आप कोई नया वाहन खरीद सकते हैं साथ ही सरकारी पक्ष से लाभ की संभावना है। वहीं दूसरी ओर स्त्री/पुरुष से मतभेद हो सकते हैं। दूसरों के प्रति आपके मन में ईर्ष्या की भावना हो सकती है। आपके अंदर दिखावा करने की आदत बढ़ेगी।

इसके अलावा आपका अपने मित्रों के साथ अलगाव हो सकता है। आप वायु विकार और खुजली से परेशान रह सकते हैं। गलत कार्यों के प्रति आपका झुकाव बढ़ सकता है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी और लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। कुल मिलाकर इस दशा अवधि में आपको आनंद की प्राप्ति भी होगी और कुछ मतभेद भी हो सकते हैं।

सूर्य अंतर्दशा(18/ 6/2045-6/ 4/2046)
बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा लगभग 9 माह और 18 दिन की होगी। बृहस्पति व सूर्य दोनों मित्र ग्रह हैं और परस्पर एक–दूसरे से अच्छे संबंध रखते हैं। सूर्य नवग्रहों का राजा है और बृहस्पति उसका मंत्री है, इसलिए इस दशा की अवधि में आपको बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

अगर आप विवाहित हैं तो इस अवधि में बच्चे के जन्म से आपको प्रसन्नता होगी। आर्थिक लाभ होगा और आय में वृद्धि होगी। सामाजिक और व्यवसायिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य स्थल पर आपको प्रशासनिक अधिकार या पदोन्नति मिलने की संभावना है। आप विरोधियों पर इस कदर हावी रहेंगे कि वे आपका सामना करने की हिम्मत नहीं जुटा पाएंगे। आप स्वयं को अंदर से प्रसन्न और प्रफुल्लित महसूस करेंगे साथ ही आपके चारों ओर खुशी का वातावरण रहेगा।

इसके अलावा आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और यदि कोई पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो उसमें सुधार देखने को मिलेगा। सरकार या उच्च अधिकारी आपके पक्ष में खड़े रहेंगे। आपको इनके माध्यम से सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। इस

अवधि में आपको किसी कार्य के लिए प्रशंसा भी मिल सकती है।

चंद्र अंतर्दशा(6/ 4/2046-6/ 8/2047)
बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा लगभग 1 वर्ष 4 माह की होगी। बृहस्पति चंद्रमा को अपना मित्र मानता है लेकिन चंद्रमा बृहस्पति से सामान्य भाव रखता है। दोनों शुभ ग्रह माने जाते हैं और इनके संयोग से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

इस अवधि में आपको लाभ की प्राप्ति होगी, विशेषकर सरकारी संस्थाओं से। यदि आप सरकारी सेवा में कार्यरत हैं तो इस दशा के दौरान आपको कई शुभ फल की प्राप्ति होगी। महिलाओं की मदद से आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे इसलिए महिलाओं से अच्छे संबंध बनाकर चलें। धन लाभ होने के साथ–साथ आपके अंदर ज्ञान की वृद्धि होगी और यह समय आपके जीवन का सबसे प्रगतिशील काल होगा।

अगर आप अविवाहित हैं तो इस समय अवधि में विवाह के बंधन में बंध सकते हैं। आप अपनी योजनाओं को लागू करने में सक्षम होंगे और उसकी वजह से आपका उत्थान होगा। इसके फलस्वरुप आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा।

मंगल अंतर्दशा(6/ 8/2047-12/ 7/2048)
बृहस्पति की महादशा में मंगल की अंतर्दशा 11 माह 6 दिन की होगी। बृहस्पति और मंगल दोनों मित्र ग्रह हैं और एक–दूसरे के साथ अच्छे संबंध रखते हैं। इस दशा की समय अवधि में आपको कई अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। मंगल एक क्रूर ग्रह है जबकि बृहस्पति एक शुभ ग्रह है इसलिए कुछ धीमे परिणाम भी मिल सकते हैं हालांकि कुल मिलाकर बृहस्पति और मंगल के प्रभाव से आपको मिश्रित फल की प्राप्ति होगी।

इस अवधि में आप विरोधी और प्रतिद्वंदियों पर विजय पाने में सफल रहेंगे। उन लोगों में आपका सामना करने की हिम्मत नहीं होगी। आपके अच्छे कामों से समाज में आपको प्रसिद्धि और पहचान मिलेगी, लोग आपके अच्छे कार्यों से प्रभावित होंगे।

इसके अलावा स्वास्थ्य थोड़ा कमजोर रह सकता है। आप बुखार और सिरदर्द से परेशान रह सकते हैं। यदि मंगल शुभ फल नहीं देता है तो आपके अंदर ऊर्जा की कमी बनी रहेगी। वहीं दूसरी ओर कानून से जुड़े मामलों में आपको सफलता मिल सकती है और सरकारी कार्यों से लाभ प्राप्त हो सकता है।

राहु अंतर्दशा(12/ 7/2048-6/12/2050)
बृहस्पति की महादशा में राहु की अंतर्दशा करीब 2 वर्ष, 4 माह और 24 दिन की होगी। बृहस्पति और राहु परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। बृहस्पति एक शुभ ग्रह है जबकि राहु क्रूर ग्रह है इसलिए इस दशा में आपको मंद परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में पारिवारिक विवाद की संभावना है, साथ ही मानसिक बेचौनी बढ़ेगी। इस समय अवधि में आपकी निर्णयन क्षमता भी प्रभावित होगी। विरोधी आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। सरकारी पक्ष से लाभ नहीं मिलेगा। कानूनी विवाद से बचने की कोशिश करें।

इसके अलावा गलतफहमी की वजह से आपके रिश्तों में दरार आ सकती है इसलिए बेवजह की बातों पर ध्यान नहीं दें।

शनि महादशा
शनि की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतरदशा का फल

शनि अंतर्दशा(6/12/2050-9/12/2053)
शनि की महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष और 3 दिन की होगी। शनि देव को परम दण्डाधिकारी कहा गया है। वे मनुष्य को उसके अच्छे और बुरे कर्म का फल देते हैं। शनि स्वभाव से न्याय और अनुशासन प्रिय है। शनि अनुशासन,

बुढ़ापा, जिम्मेदारी, दीर्घायु, सेवक, सहयोगी, अलगाव, आध्यातमिकता और गहराई आदि का कारक होता है। शनि वायु तत्व का ग्रह है।

इस अवधि में परिजन या प्रियजन से विवाद हो सकता है। पारिवारिक जीवन से अलगाव भी हो सकता है। स्वास्थ्य कमजोर रहने की संभावना है। स्वभाव में अहंकार और ईर्ष्या की भावना बढ़ सकती है। इस दौरान मन में निराशा का भाव भी रह सकता है, प्रियजनों से सहयोग नहीं मिलेगा। साथ ही सरकारी विभाग या उच्च अधिकारी आपके पक्ष में नहीं रहेंगे। छोटे–मोटे विवाद और बेचौनी आपके लिए कष्टकारी हो सकती है। सांसारिक जीवन से मोहभंग हो सकता है। आशा के अनुरूप परिणाम नहीं मिलेंगे। इस समय अवधि में आप एकांत में रहकर चंतन–मनन करना अधिक पसंद करेंगे। कार्य क्षेत्र में आपको अत्याधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

।। गोचर फल (7–5–2018)।।

सूर्य मेष राशि में आपके बारहवें भाव में स्थित है:

आप क्षणिक उन्माद में कोई काम न करें। निर्णय लेने से पहले पूरा सोच विचार करें। गलत निर्णय के कारण आपका नुकसान भी हो सकता है। आप व्यर्थव्यय भी करेंगे। व्यापार से संबंधित कोई बुरी खबर मिल सकती है। भारी हानि होने की संभावना है। स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। मित्रों और रिश्तेदारों से संबंध मधुर रखें अन्यथा आपस में चाव पैदा हो सकता है। सट्टेबाजी से बचें अन्यथा आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है।

चन्द्र मकरराशि में आपके नौवें भाव में स्थित है:

विद्वान एवम् पढ़े लिखे लोगों से सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विदेशियों से संबंध सफलदायक रहेंगे। लम्बी यात्राओं की भी संभावना है। धार्मिक कृत्य करने की प्रवृति रहेगी। सुखी जीवन बितायेंगे। मां बाप से संबंध अति मधुर रहेंगे।

मंगल मकरराशि में आपके नौवें भाव में स्थित है:

बड़े बूढों से सहयोग प्राप्त करेंगे। सुदूर स्थलों तक की गई लम्बी यात्राएं सफलदायक सिव्द होंगी। आमदनी बढ़ेगी और आय के नये स्त्रोत प्राप्त होंगे। यद्यापि खर्चे भी बढेंगे लेकिन आमदनी से अधिक नहीं होंगे। सट्टे के द्वारा आय होने की भी संभावना है। इस समय का पूरा सदुपयोग करें।

।। गोचर फल (7–5–2018)।।

बुध मीनराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

आपकी लम्बी यात्रा करने की पूरी संभावना है। मित्र व सहयोगी सहायता करेंगे। अपने व्यवसाय या व्यापार को बढाने चमकाने के कई मौके आयेंगे। इच्छा और महत्वाकांक्षाओं की सम्पूर्ति होगी। भाई या घनिष्ठ मित्र के बारे में कोई शुभ समाचार प्राप्त करेंगे। इस अवधि में हर तरफ से खुशहाल रहने की संभावना है। प्रणय संबंधों के लिये भी यह समय अच्छा है। इस समय का सदुपयोग करें। इस दौरान आपके कई लोगों से मित्रतापूर्ण संबंध कायम होंगे।

गुरू तुलाराशि में आपके छठे भाव में स्थित है:

थोड़े से लाभ के लिये आपको बहुत मेहनत करनी पड़ सकती है। नौकरी के हालात बदतर होते जायेंगे। स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें परेशान करेंगी। परिवारजनों से संबंध भी इस अवधि में अच्छे नहीं रहेंगे। विरोधी प्रबल होंगे। व्यर्थ की यात्राओं से बचें। वैसे मुकदमाबाजी और न्यायालयों के मामलों के लिये यह समय अच्छा है। जीवन शक्ति और स्फूर्ति में कमी महसूस होने के कारण झगड़े और झंझटों से दूर रहने का प्रयत्न करें।

शुक्र वृशभराशि में आपके पहले भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप सुखी व सानन्द रहेंगे। आपके चारों ओर का वातावरण सुखद होगा। स्त्री वर्ग की ओर आपका झुकाव रहेगा। वैवाहिक सुख भोगेंगे। अगर आप थोड़ी मेहनत करें तो अपनी आय आप काफी बढ़ा सकते हैं। आप एक विशद व शानदार पा देना चाहेंगे। ललितकला, संगीत व साहित्य में आपकी रूचि रहेगी। छोटी मोटी बीमारियां भी आपको परेशान कर सकती हैं। परिवार जन आपकी पूरी मदद करेंगे।

।। गोचर फल (7–5–2018)।।

शनि धनुराशि में आपके आठवें भाव में स्थित है:

कोई महत्वपूर्ण चीज खोने का खतरा बना रहेगा। वरिष्ठ जनों या सत्ताधारी अफसरों से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। लेन देन के व्यापार में हानि होने की भी संभावना है। आपके मित्र या सहयोगी अपना वचन नहीं निभाएंगें। परिवारजनों के व्यवहार में भी फर्क आ जाएगा। मानसिक वेदना की स्थिति आपके व्यवहार से परिलक्षित होती रहेगी। वैसे इस अवधि में गूढ मान या परामनोविाान आदि क्षेत्रों स`कुछ मदद मिल सकती है। अच्छा यही होगा कि अपनी योग्यता और प्रतिभा पर ही निर्भर करें। अगर वसीयत प्राप्ति के इच्छुक है तो वह अचानक प्राप्त होकर आपको चमत्कृत कर देगी। किसी की मौत की बुरी खबर मिल सकती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

राहू कर्कराशि में आपके तीसरे भाव में स्थित है:

अपनी उधम शक्ति और महती घ र्जा के द्वारा आप किसी भी काम को बहुत अच्छे तरीके से पूरा करने में सक्षम रहेंगे। आपके उद्देश्य की दृढ़ता सराही जायेगी। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण विपरीत परिस्थिति में भी आपको मति भ्रम नहीं होगा और सही काम करेंगे। आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा और आपकी प्रतिष्ठा में भी बढोत्तरी होगी। काफी भ्रमण करना पड़ेगा। भाई बहिनों से संबंध अच्छे रहेंगे। संचार माध्यम व्दारा आपको उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा। व्यापार और लेन देन के सौदों की बहुत अच्छे रहने की संभावना है। अगर नौकरी में हैं तो शीघ्र पदोन्नति होनी चाहिये।

केतु मकरराशि में आपके नौवें भाव में स्थित है:

किसी संस्थान के प्रमुख व्यक्ति के आप सम्पर्क में आयेंगे। औरों के प्रति जनकल्याण की भावना से काम करने की प्रवृति होगी। किसी नयी सृजनात्मक उपलब्धि के कारण आपको मान्यता मिल सकती है। वैसे इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा बढेंगी और सम्मान में इजाफा होगा। आप अति सम्मानीय व्यक्ति समझे जायेंगे। यात्रा का बहुत महत्व होगा। आपकी धर्म एवम् अध्यात्म की ओर झुकने की प्रवृति में भावनात्मक गहराई का समावेश होगा। पारिवारिक जीवन हर्षोल्लास से सम्पन्न रहेगा। परिवार में कोई मंगल कृत्य होगा। इस अवधि का पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करें।

।। लाल किताब गणना ।।

नाम	Pooja Sharma			**सूर्योदय**	05. 54. 14	**दशा भोग्य**	VEN 15 Y 5 M 1 D
लिंग	Female	**रेखांश**	77.13.E	**तिथि**	षष्ठी	**सूर्यास्त**	18. 53. 28
दिनांक	23.8.1978	**अक्षांश**	28.40.N	**योग**	वृ	**करण**	वणिज
दिन	बुधवार	**जन्म स्थान**	Delhi	**लग्न**	वृषभ	**लग्न स्वामी**	शुक्र
समय	23.53.18	**अयनांश**	023-33-30	**राशि**	मेष	**राशि स्वामी**	मंगल
साम्पातिक काल	21.38.53	**अयनांश नाम**	लाहिरी	**नक्षत्र**	भरणी–1	**नक्षत्र स्वामी**	शुक्र

लाल किताब ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	स्थिति	सोया	किस्मत जगानेवाला	नेक / मंदा
सूर्य	कर्क	———	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
चंद्र	मीन	———	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
मंगल	सिंह	———	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
बुध	मिथुन	———	हाँ	हाँ	मंदा / अशुभ
गुरू	मिथुन	———	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
शुक्र	सिंह	———	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
शनि	कर्क	———	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
राहु	सिंह	———	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
केतु	कुंभ	———	नहीं	नहीं	नेक / शुभ

लग्न चक्र

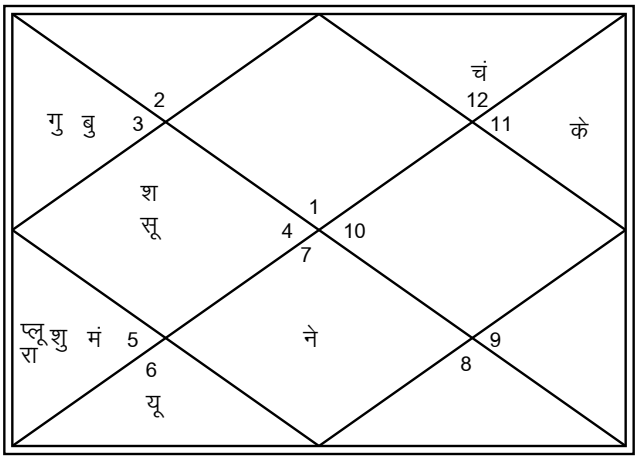

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 1978
अंत	23 / 08 / 1984
राहु	23 / 08 / 1980
बुध	23 / 08 / 1982
शनि	23 / 08 / 1984

राहु 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 1984
अंत	23 / 08 / 1990
मंगल	23 / 08 / 1986
केतु	23 / 08 / 1988
राहु	23 / 08 / 1990

केतु 3 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 1990
अंत	23 / 08 / 1993
शनि	23 / 08 / 1991
राहु	23 / 08 / 1992
केतु	23 / 08 / 1993

गुरू 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 1993
अंत	23 / 08 / 1999
केतु	23 / 08 / 1995
गुरू	23 / 08 / 1997
सूर्य	23 / 08 / 1999

सूर्य 2 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 1999
अंत	23 / 08 / 2001
सूर्य	23 / 04 / 2000
चन्द्र	23 / 12 / 2000
मंगल	23 / 08 / 2001

चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2001
अंत	23 / 08 / 2002
गुरू	23 / 12 / 2001
सूर्य	23 / 04 / 2002
चन्द्र	23 / 08 / 2002

शुक्र 3 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2002
अंत	23 / 08 / 2005
मंगल	23 / 08 / 2003
सूर्य	23 / 08 / 2004
चन्द्र	23 / 08 / 2005

मंगल 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2005
अंत	23 / 08 / 2011
मंगल	23 / 08 / 2007
शनि	23 / 08 / 2009
शुक्र	23 / 08 / 2011

बुध 2 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2011
अंत	23 / 08 / 2013
चन्द्र	23 / 04 / 2012
मंगल	23 / 12 / 2012
गुरू	23 / 08 / 2013

शनि 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2013
अंत	23 / 08 / 2019
राहु	23 / 08 / 2015
बुध	23 / 08 / 2017
शनि	23 / 08 / 2019

राहु 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2019
अंत	23 / 08 / 2025
मंगल	23 / 08 / 2021
केतु	23 / 08 / 2023
राहु	23 / 08 / 2025

केतु 3 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2025
अंत	23 / 08 / 2028
शनि	23 / 08 / 2026
राहु	23 / 08 / 2027
केतु	23 / 08 / 2028

गुरू 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2028
अंत	23 / 08 / 2034
केतु	23 / 08 / 2030
गुरू	23 / 08 / 2032
सूर्य	23 / 08 / 2034

सूर्य 2 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2034
अंत	23 / 08 / 2036
सूर्य	23 / 04 / 2035
चन्द्र	23 / 12 / 2035
मंगल	23 / 08 / 2036

चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2036
अंत	23 / 08 / 2037
गुरू	23 / 12 / 2036
सूर्य	23 / 04 / 2037
चन्द्र	23 / 08 / 2037

शुक्र 3 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2037
अंत	23 / 08 / 2040
मंगल	23 / 08 / 2038
सूर्य	23 / 08 / 2039
चन्द्र	23 / 08 / 2040

मंगल 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2040
अंत	23 / 08 / 2046
मंगल	23 / 08 / 2042
शनि	23 / 08 / 2044
शुक्र	23 / 08 / 2046

बुध 2 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2046
अंत	23 / 08 / 2048
चन्द्र	23 / 04 / 2047
मंगल	23 / 12 / 2047
गुरू	23 / 08 / 2048

शनि 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2048
अंत	23 / 08 / 2054
राहु	23 / 08 / 2050
बुध	23 / 08 / 2052
शनि	23 / 08 / 2054

राहु 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2054
अंत	23 / 08 / 2060
मंगल	23 / 08 / 2056
केतु	23 / 08 / 2058
राहु	23 / 08 / 2060

केतु 3 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2060
अंत	23 / 08 / 2063
शनि	23 / 08 / 2061
राहु	23 / 08 / 2062
केतु	23 / 08 / 2063

गुरू 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2063
अंत	23 / 08 / 2069
केतु	23 / 08 / 2065
गुरू	23 / 08 / 2067
सूर्य	23 / 08 / 2069

सूर्य 2 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2069
अंत	23 / 08 / 2071
सूर्य	23 / 04 / 2070
चन्द्र	23 / 12 / 2070
मंगल	23 / 08 / 2071

चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2071
अंत	23 / 08 / 2072
गुरू	23 / 12 / 2071
सूर्य	23 / 04 / 2072
चन्द्र	23 / 08 / 2072

शुक्र 3 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2072
अंत	23 / 08 / 2075
मंगल	23 / 08 / 2073
सूर्य	23 / 08 / 2074
चन्द्र	23 / 08 / 2075

मंगल 6 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2075
अंत	23 / 08 / 2081
मंगल	23 / 08 / 2077
शनि	23 / 08 / 2079
शुक्र	23 / 08 / 2081

बुध 2 वर्ष	
आरम्भ	23 / 08 / 2081
अंत	23 / 08 / 2083
चन्द्र	23 / 04 / 2082
मंगल	23 / 12 / 2082
गुरू	23 / 08 / 2083

।। लालकिताब फलकथन ।।

सूर्य आपके चौथे भाव में स्थित है:

यदि सूर्य शुभ है तो जातक बुद्धिमान, दयालु और अच्छा प्रशासक होगा। उसके पास आमदनी का स्थिर श्रोत होगा। ऐसा जातक मरने के बाद अपने वंशजों के लिए बहुत धन और बडी विरासत छोड जाता है। यदि चंद्रमा भी सूर्य के साथ चौथे भाव में स्थित है तो जातक किसी नए शोध के माध्यम से बहुत धन अर्जित करेगा। ऐसे में चौथे भाव या दसम भाव का बुध जातक को प्रसिद्ध व्यापारी बनाता है। यदि सूर्य के साथ बृहस्पति भी चौथे भाव में स्थित है तो जातक सोने और चांदी के व्यापर से अच्छा मुनाफा कमाता है। यदि चौथे भाव में सूर्य अशुभ है तो जातक लालची होगा। जातक को चोरी करने और दूसरों को नुकसान पहुचाने में मजा आता है। यह प्रवृत्ति अंततः बहुत बुरे परिणाम को जन्म देती है। यदि शनि सातवे भाव में हो तो जातक को रतौंधी रोग हो सकता है। यदि सूर्य चौथे भाव मे पीडित हो और मंगल दसम भाव में हो तो जातक की आंखों में दोष हो सकता है लेकिन उसकी किस्मत कमजोर नहीं होगी। यदि अशुभ सूर्य चतुर्थ भाव में हो साथ ही चंद्रमा पहले या दूसरे भाव में हो और शुक्र पंचम भाव तथा शनि सातवें भाव में हो तो जातक नपुंसक हो सकता है।

उपाय

1) जरतमंद और अंधे लोगों को दान दें और खाना बांटें।ढध्इतझ2) लोहे और लकघी के साथ जुघ व्यापार न करें।ढध्इतझ3) सोने, चांदी और कपघे से सम्बंधित व्यापार, लाभकारी रहेंगे।ढध्इतझ

।। लालकिताब फलकथन ।।

चन्द्र आपके बारहवें भाव में स्थित है:

यह घर चंद्रमा के मित्र बृहस्पति का है। यहाँ स्थित चंद्रमा मंगल और मंगल से संबंधित चीजों परर अच्छा प्रभाव डालता है, लेकिन यह अपने दुश्मन बुध और केतु तथा उनसे संबंधित चीजों को नुकसान पहुंचाएगा। इसलिए मं गल जिस भाव में बैठा है उससे जुडा व्यापार और चीजें जातक के लिए अत्यधिक लाभकारी रहेंगी। ठीक इसी तरह बुध और केतू जिस घर में बैठे हैं उससे जुडा व्यापार और चीजें जातक के लिए अत्यधिक हानिकारक रहेंगी। बारहवें घर में स्थित चंद्रमा जातक के मन में अप्रत्याशित मुसीबतों और खतरों को लेकर एक साधारण सा डर पैदा करता है। जिससे जातक की नींद और मानसिक शांति भंग होती है। यदि चौथे भाव में स्थित केतू कमजोर और पीडित हो तो जातक के पुत्र और मां पर प्रतिकूल असर पडता है।

उपाय

1) कान में सोना पहनें। दूध में सोना बुझाकर दूध पियें। धार्मिक स्थलों की यात्रा करें। ये उपाय न केवल 12वें भाव के चन्द्र के दुष्प्रभाव को दूर करते बल्कि चौथे भाव के केतू के दुष्प्रभाव को भी दूर करते हैं।
2) धार्मिक साधुसंतों को कभी भी दूध और भोजन न दें।
3) स्कूल, कॉलेज या अन्य कोई शैक्षणिक संस्थान न खोलें और निःशुल्क शिक्षा पाने वाले बच्चों की मदद न करें।

मंगल आपके पांचवें भाव में स्थित है:

पांचवां घर मंगल के नैसर्गिक मित्र सूर्य का घर होता है। इसलिए इस घर में मंगल बहुत अच्छे परिणाम देता है। जातक के पुत्र उसकी प्रसिद्धि और धनार्जन के माध्यम बनते हैं। जातक की समृधि पुत्र प्राप्ति के बाद कई गुना बढ़ जाती है। शुक्र और चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुएं और रिश्तेदार को हर तरीके से फायदेमंद साबित होंगे। जातक के पूर्वजों में से कोई चिकित्सक या वैद्य रहा होगा। जातक की उम्र के साथ उसकी समृधि भी बढती जाती है। लेकिन विपरीत लिंगी के साथ भावनात्मक लगाव और रोमांस जातक के लिए अत्यधिक विनाशकारी साबित होंगे और जातक की मानसिक शांति और रातों की नीद खराब करने के कारण बनेंगे।

उपाय

1) अपना नैतिक चरित्र अच्छा बनाए रखें।
2) रात को अपने बिस्तर के सिरहने एक बर्तन में पानी रखें और सुबह उसे किसी गमले में डाल दें।
3) अपने पूर्वजों की श्राद्ध करें और घर में एक नीम के पेड़ लगाएं।

।। लालकिताब फलकथन ।।

बुध आपके तीसरे भाव में स्थित है:

तीसरे घर में बुध अच्छा नहीं माना जाता। बुध ग्रह, मंगल ग्रह शत्रु है लेकिन मंगल ग्रह बुध से शत्रुता नहीं मानता। इसलिए जातक अपने भाई से लाभ प्राप्त करते हैं, लेकिन वह अपने भाई या दूसरों के लिए फायदेमंद नहीं होगा। इसके नौवें तथा ग्यारहवें घर में दृष्टि प्रभाव के कारण जातक की आय और पिता की हालत पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

उपाय

1) हर रोज फिटकिरी से अपने दाँत साफ करें।
2) पक्षियों की सेवा करें और एक बकरी दान करें।
3) दक्षिण्मुखी घर में न रहें।
4) अस्थमा की दवाएं वितरित करें।

गुरू आपके तीसरे भाव में स्थित है:

तीसरे भाव का बृहस्पति जातक को समझदार और अमीर बनाता है, जातक अपने पूरे जीवन काल में सरकार से निरंतर आय प्राप्त करता रहेगा। नवम भाव में स्थित शनि जातक को दीर्घायु बनाता है। यदि शनि दूसरे भाव में हो तो जातक बहुत चतुर और चालाक होता है। चतुर्थ भाव में स्थित शनि यह इशारा करता है कि जातक का पैसा और धन उसके अपने दोस्तों के द्वारा लूट लिया जाएगा। यदि बृहस्पति तीसरे भाव में किसी पापी ग्रह से पीडित है तो जातक अपने किसी करीबी के कारण बरबाद हो जाएगा और कर्जदार हो जाएगा।

उपाय

1) देवी दुर्गा की पूजा करें और कन्याओं अर्थात छोटी लड़कियों को मिठाई और फल देते हुए उनके पैर छू कर उनका आशीर्वाद लें।
2) चापलूसों से दूर रहें।

।। लालकिताब फलकथन ।।

शुक्र आपके पांचवें भाव में स्थित है:

पांचवां घर सूर्य का पक्का घर है जहां शुक्र सूर्य की गर्मी से जल जाएगा। नतीजन जातक इश्कबाज और कामुक होगा। उसे अपने जीवनकाल में बडे दुर्भाग्य का सामना करना पडेगा। हालांकि, यदि जातक अपने चरित्र को अच्छा बनाए रखता है वह जीवन की कठिनाइयों के को पार कर जाएगा और धनवान बनेगा। शादी के पांच साल के बाद उसे पदोन्नति मिलेगी। आम तौर पर ऐसा जातक अनुभवी और शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है।

उपाय

1) अपने माता पिता की मर्जी के खिलाफ शादी न करें।
2) गायों और माँ के समान स्त्रियों की सेवा करें।
3) पराई स्त्रियों से सम्बन्ध न रखें।
4) जातक दूध या दही से अपना गुप्तांग साफ करें।

शनि आपके चौथे भाव में स्थित है:

यह भाव चंद्रमा का घर होता है। इसलिए शनि इस भाव में मिलेजुले परिणाम देता है। जातक अपने माता पिता के प्रति समर्पित होगा और प्रेम मुहब्बत से रहने वाला होगा। जब कभी जातक बीमार होगा तो चंद्रमा से संबंधित चीजें फायदेमंद होंगी। जातक के परिवार से कोई व्यक्ति चिकित्सा विभाग से संबंधित होगा। जब शनि इस भाव में नीच का होकर स्थित हो तो शराब पीना, सांप मारना और रात के समय घर की नीव रखना जैसे काम बहुत बुरे परिणाम देते हैं। रात में दूध पीना भी अहितकर है।

उपाय

1) साँप को दूध पिलाएं अथवा दूध चावल किसी गाय या भैंस को खिलाएं।
2) किसी कुएं में दूध डालें और रात में दूध न पियें।
3) चलते पानी में रम डालें।

।। लालकिताब फलकथन ।।

राहू आपके पांचवें भाव में स्थित है:

पांचवां घर सूर्य का होता है जो पुरुष संतान का संकेतक है। यदि राहू शुभ हो तो जातक अमीर, बुद्धिमान और स्वस्थ होता है। वह अच्छी आमदनी और अच्छी प्रगति का आनंद पाता है। जातक भक्त या दार्शनिक होता है। यहां स्थित नीच का राहू गर्भपात करवाता है। पुत्र के जन्म के बाद जातक की पत्नी बारह सालों तक बीमार रहती है। यदि बृहस्पति भी पांचवें भाव मेम स्थित हो तो जातक के पिता को कष्ट होगा।

उपाय

1) अपने घर में चांदी से बना हाथी रखें।
2) शराब, मांशाहार, अण्डे के सेवन और व्यभिचार से बचें।
3) अपनी पत्नी से ही दो बार शादी करें।

केतु आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

यहाँ केतु बहुत अच्छा माना जाता है। यह धन देता है। यह घर बृहस्पति और शनि से प्रभावित होता है। यदि केतु यहाँ शुभ हो, और शनि तीसरे घर में हो तो यह बहुत धन देता है, जातक के द्वारा अर्जित धन उसके पैतृक धन से अधिक होगा, लेकिन फिर भी उसे अपने भविष्य के बारे में चिंता करने की आदत होगी। यदि बुध तीसरे भाव में हो तो यह एक राज योग होगा। यदि केतू यहां अशुभ हो तो जातक को पेट की परेशानी होती है। वह भविष्य के बारे में बहुत चिंता करता है, और बहुत परेशान होता है। यदि शनि भी अशुभ हो तो जातक की दादी अथवा माँ परेशान होती है। साथ की जातक को पुत्र या घर से कोई लाभ नहीं होता।

उपाय

1) काला कुत्ता पालें।
2) गोमेद या पन्ना पहनें।

।। रत्न विचार ।।

रत्न क्या हैं?

प्राचीन काल से रत्नों का उपयोग आध्यात्मिक क्रियाकलापों और उपचार के लिए किया जाता रहा है। हालाँकि रत्न कठिनाई से मिलते थे और बहुत सुन्दर होते थे, लेकिन उनके बहुमूल्य होने का प्रमुख कारण पहनने वाले को उनसे हासिल होने वाली शक्तियाँ थीं। रत्न शक्तियों के भण्डार की तरह हैं, जिनका असर स्पर्श के माध्यम से शरीर में जाता है। रत्नों का असर धारण करने वाले पर सकारात्मक या नकारात्मक रूप से हो सकता है – यह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें किस तरह उपयोग में लाया जाता है। सभी रत्नों में अलग–अलग परिमाण में चुम्बकीय शक्तियाँ होती हैं, जिनमें से कई उपचार के दृष्टिकोण से हमारे लिए बेहद लाभदायक हैं। ये रत्न ऐसे स्पन्दन पैदा करते हैं, जिनका हमारे पूरे अस्तित्व पर बहुत गहरा असर होता है। आइए, देखें कि आपके लिए रत्न–विचार किस प्रकार है।

आपका जीवन रत्न

जीवन–रत्न लग्न के स्वामी का रत्न है। इस रत्न की रहस्यमयी शक्तियों का अनुभव करने के लिए इसे जीवन भर धारण किया जा सकता है। जीवन रत्न धारण करना सारी बाधाएँ मिटा सकता है और जातक को प्रसन्न, सफल व समृद्ध कर सकता है। सामान्यतः इसे व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति के लिए धारण किया जाता है। इसके ब्रह्माण्डीय तरंगें व्यक्ति के सम्पूर्ण अस्तित्व को प्रभावित करती हैं।

सुझाव

रत्न–सुझाव	हीरा
रत्न की गुणवत्ता	1 रत्ती
धारण करने के नियम	स्वर्ण धातु या चाँदी धातु, मध्यमा अंगुली में
रत्न–धारण का मंत्र	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

आपका पुण्य–रत्न

जीवन परिश्रम और भाग्य का बढिया सम्मिश्रण है। अपना पुण्य–रत्न धारण करके भाग्य को अपने हित में कार्य करने दें। व्यक्ति का पुण्य–रत्न वह होता है, जो उस व्यक्ति के सौभाग्य को आकर्षित करके उसके जीवन में सुखद आश्चर्य घोलता रहता है। हमारे अनुसार आपका पुण्य–रत्न है –

सुझाव

रत्न–सुझाव	पन्ना
रत्न की गुणवत्ता	1.5 रत्ती
धारण करने के नियम	स्वर्ण धातु, अनामिका अंगुली में या कनिष्ठिका अंगुली में
रत्न–धारण का मंत्र	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

आपका भाग्य–रत्न

भाग्य–रत्न का निर्धारण नवम भाव के स्वामी के आधार पर किया जाता है। जब आपको वाकई भाग्य की आवश्यकता होती है, यह रत्न उस समय नियति को आपके पक्ष में करता है। व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में यह सकारात्मकता प्रवाहित करता है। आपकी समृद्धि के मार्ग में जो भी बाधाएँ हों, भाग्य–रत्न उन्हें दूर करने का कार्य करता है।

सुझाव

रत्न–सुझाव	नीलम
रत्न की गुणवत्ता	2 रत्ती
धारण करने के नियम	स्वर्ण धातु, मध्यमा अंगुली में
रत्न–धारण का मंत्र	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

आवश्यक जानकारी

रत्न–धारण करते समय कुछ बातों का सदैव ध्यान रखें। केवल असली रत्न ही खरीदें, क्योंकि नकली रत्न धारण करने से उनका कोई प्रभाव नहीं होता है। साथ ही आपको उस वजन का रत्न धारण करना चाहिए, जिसका सुझाव दिया गया हो। इसे प्रायः "रत्ती" के माध्यम से इंगित किया जाता है। आज–कल बाजार नकली रत्नों से भरे पडे हैं। अपने पाठकों की सहायता के लिए एस्ट्रोकैम्प/ऐस्ट्रोसेज आपके लिए असली रत्नों का संग्रह लाया है।

।। शुभ घड़ी ।।

विवाह के लिए शुभ समय

विवाह जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। कभी–कभी कुछ कारणों की वजह से विवाह में विलंब आते हैं। वहीं वैवाहिक जीवन में भी कुछ परेशानियां आती हैं। इस संबंध में हमने पूरी कोशिश की है कि आपको जन्म कुंडली के आधार पर सटीक जानकारी दी जाये। नीचे दी गई सारणी में सिलसिलेवार तरीके से उल्लेख किया है कि, आपके विवाह और वैवाहिक जीवन के लिए कौन सा समय सबसे अच्छा होगा? साथ ही इन मामलों में आपको कब–कब परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, इसकी जानकारी भी आप ले सकते हैं

18 से 45 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
सूर्य	शनि	12/10/1996	24/ 9/1997	शुभ
सूर्य	बुध	24/ 9/1997	30/ 7/1998	**सर्वोत्तम**
सूर्य	केतु	30/ 7/1998	6/12/1998	शुभ
चंद्र	मंगल	6/10/2000	6/ 5/2001	शुभ
चंद्र	राहु	6/ 5/2001	6/11/2002	शुभ
चंद्र	बृहस्पति	6/11/2002	6/ 3/2004	शुभ
चंद्र	शनि	6/ 3/2004	6/10/2005	शुभ
चंद्र	बुध	6/10/2005	6/ 3/2007	**उत्तम**
चंद्र	केतु	6/ 3/2007	6/10/2007	शुभ
चंद्र	सूर्य	6/ 6/2009	6/12/2009	**सर्वोत्तम**
मंगल	मंगल	6/12/2009	3/ 5/2010	शुभ
मंगल	राहु	3/ 5/2010	21/ 5/2011	शुभ
मंगल	बृहस्पति	21/ 5/2011	27/ 4/2012	शुभ
मंगल	शनि	27/ 4/2012	6/ 6/2013	शुभ
मंगल	बुध	6/ 6/2013	3/ 6/2014	**सर्वोत्तम**
मंगल	केतु	3/ 6/2014	30/10/2014	शुभ
मंगल	सूर्य	30/12/2015	6/ 5/2016	**उत्तम**

राहु	राहु	6/12/2016	18/ 8/2019	शुभ
राहु	बृहस्पति	18/ 8/2019	12/ 1/2022	शुभ
राहु	शनि	12/ 1/2022	18/11/2024	शुभ

।। शुभ घड़ी ।।

करियर के लिए शुभ समय

करियर को लेकर हर व्यक्ति की एक महत्वाकांक्षा होती है।

जीवन में हर कोई आगे बढ़ना चाहता है और कुछ करना चाहता है, लेकिन जीवन में कभी–कभी कुछ ऐसे मोड़ आते हैं जब करियर के क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर कभी ऐसा संयोग भी बनता है जब हमें करियर के क्षेत्र में तरक्की भी मिलती है। हमारा प्रयास है कि आपकी जन्म कुंडली के आधार पर आपकी करियर लाइफ का सटीक विश्लेषण करें। इस टेबल के जरिए आप जान सकते हैं आपके करियर का बेहतर और कठिन समय

18 से 65 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
सूर्य	शनि	12/10/1996	24/ 9/1997	शुभ
सूर्य	बुध	24/ 9/1997	30/ 7/1998	शुभ
सूर्य	केतु	30/ 7/1998	6/12/1998	**उत्तम**
सूर्य	शुक्र	6/12/1998	6/12/1999	शुभ
चंद्र	राहु	6/ 5/2001	6/11/2002	शुभ
चंद्र	बृहस्पति	6/11/2002	6/ 3/2004	शुभ
चंद्र	शनि	6/ 3/2004	6/10/2005	**उत्तम**
चंद्र	बुध	6/10/2005	6/ 3/2007	शुभ
चंद्र	केतु	6/ 3/2007	6/10/2007	शुभ
चंद्र	शुक्र	6/10/2007	6/ 6/2009	शुभ
चंद्र	सूर्य	6/ 6/2009	6/12/2009	**सर्वोत्तम**
मंगल	बृहस्पति	21/ 5/2011	27/ 4/2012	**सर्वोत्तम**
मंगल	शनि	27/ 4/2012	6/ 6/2013	शुभ
मंगल	बुध	6/ 6/2013	3/ 6/2014	शुभ
मंगल	केतु	3/ 6/2014	30/10/2014	शुभ
मंगल	शुक्र	30/10/2014	30/12/2015	शुभ
मंगल	सूर्य	30/12/2015	6/ 5/2016	**उत्तम**

मंगल	चंद्र	6/ 5/2016	6/12/2016	शुभ
राहु	बृहस्पति	18/ 8/2019	12/ 1/2022	**उत्तम**
राहु	शनि	12/ 1/2022	18/11/2024	शुभ
राहु	बुध	18/11/2024	6/ 6/2027	शुभ
राहु	केतु	6/ 6/2027	24/ 6/2028	**सर्वोत्तम**
राहु	सूर्य	24/ 6/2031	18/ 5/2032	शुभ
राहु	चंद्र	18/ 5/2032	18/11/2033	शुभ
राहु	मंगल	18/11/2033	6/12/2034	शुभ
बृहस्पति	बृहस्पति	6/12/2034	24/ 1/2037	शुभ
बृहस्पति	शनि	24/ 1/2037	6/ 8/2039	**सर्वोत्तम**
बृहस्पति	बुध	6/ 8/2039	12/11/2041	शुभ
बृहस्पति	केतु	12/11/2041	18/10/2042	**उत्तम**

।। शुभ घड़ी ।।

व्यापार के लिए शुभ अवधि

व्यापार में वृद्धि और जीवन में समृद्धि हर व्यक्ति की इच्छा होती है। जहां व्यापार में सफलता हमें उन्नति के शिखर पर लेकर जाती है, वहीं दूसरी ओर कई बार व्यापार में मिलने वाली असफलता से आर्थिक संकट खड़ा हो जाता है। हर व्यक्ति अपने व्यापार को बढ़ाना चाहता है और जीवन में आर्थिक रूप से समृद्ध होना चाहता है। नीचे दी गई तालिका में हमने प्रयास किया है कि आपको व्यापार के बारे में शुभ और चुनौतिपूर्ण समय की जानकारी दे सकें। जिसके द्वारा आप अपने व्यापार को एक नई दिशा दे सकें

18 से 65 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
सूर्य	शनि	12/10/1996	24/ 9/1997	शुभ
सूर्य	बुध	24/ 9/1997	30/ 7/1998	शुभ
सूर्य	केतु	30/ 7/1998	6/12/1998	**उत्तम**
चंद्र	मंगल	6/10/2000	6/ 5/2001	शुभ
चंद्र	राहु	6/ 5/2001	6/11/2002	शुभ
चंद्र	बृहस्पति	6/11/2002	6/ 3/2004	शुभ
चंद्र	शनि	6/ 3/2004	6/10/2005	**उत्तम**
चंद्र	बुध	6/10/2005	6/ 3/2007	शुभ
चंद्र	केतु	6/ 3/2007	6/10/2007	शुभ
चंद्र	सूर्य	6/ 6/2009	6/12/2009	**सर्वोत्तम**
मंगल	मंगल	6/12/2009	3/ 5/2010	शुभ
मंगल	राहु	3/ 5/2010	21/ 5/2011	शुभ
मंगल	बृहस्पति	21/ 5/2011	27/ 4/2012	**सर्वोत्तम**
मंगल	शनि	27/ 4/2012	6/ 6/2013	शुभ
मंगल	बुध	6/ 6/2013	3/ 6/2014	शुभ
मंगल	केतु	3/ 6/2014	30/10/2014	शुभ
मंगल	सूर्य	30/12/2015	6/ 5/2016	**उत्तम**

राहु	राहु	6/12/2016	18/ 8/2019	शुभ
राहु	बृहस्पति	18/ 8/2019	12/ 1/2022	**उत्तम**
राहु	शनि	12/ 1/2022	18/11/2024	शुभ
राहु	बुध	18/11/2024	6/ 6/2027	शुभ
राहु	केतु	6/ 6/2027	24/ 6/2028	**सर्वोत्तम**
राहु	सूर्य	24/ 6/2031	18/ 5/2032	शुभ
राहु	मंगल	18/11/2033	6/12/2034	शुभ
बृहस्पति	बृहस्पति	6/12/2034	24/ 1/2037	शुभ
बृहस्पति	शनि	24/ 1/2037	6/ 8/2039	**सर्वोत्तम**
बृहस्पति	बुध	6/ 8/2039	12/11/2041	शुभ
बृहस्पति	केतु	12/11/2041	18/10/2042	**उत्तम**

।। शुभ घड़ी ।।

गृह निर्माण के लिए शुभ अवधि

जीवन में अपना घर हर किसी का सपना होता है। हर व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसके पास एक अच्छा घर और खुशहाल जीवन हो। इसके लिए हर व्यक्ति अपने स्तर पर भरपूर प्रयास करता है। हालांकि अपने इस सपने को पूरा करने में कुछ लोग जल्दी सफल हो जाते हैं और कुछ लोगों को लंबा इंतजार करना पड़ता है। नीचे दी गई सारणी के माध्यम से आप जान सकते हैं कि, कौन सा समय आपके गृह निर्माण के लिए उपयुक्त रहेगा

18 से 75 वर्ष की आयु का विश्लेषण

दशा	अंतर्दशा	अवधि प्रारंभ	अवधि समाप्त	विश्लेषण
सूर्य	शनि	12/10/1996	24/ 9/1997	शुभ
सूर्य	केतु	30/ 7/1998	6/12/1998	शुभ
सूर्य	शुक्र	6/12/1998	6/12/1999	शुभ
चंद्र	मंगल	6/10/2000	6/ 5/2001	**उत्तम**
चंद्र	राहु	6/ 5/2001	6/11/2002	शुभ
चंद्र	बृहस्पति	6/11/2002	6/ 3/2004	शुभ
चंद्र	शनि	6/ 3/2004	6/10/2005	शुभ
चंद्र	केतु	6/ 3/2007	6/10/2007	शुभ
चंद्र	शुक्र	6/10/2007	6/ 6/2009	शुभ
चंद्र	सूर्य	6/ 6/2009	6/12/2009	**सर्वोत्तम**
मंगल	मंगल	6/12/2009	3/ 5/2010	शुभ
मंगल	राहु	3/ 5/2010	21/ 5/2011	शुभ
मंगल	बृहस्पति	21/ 5/2011	27/ 4/2012	शुभ
मंगल	शनि	27/ 4/2012	6/ 6/2013	**उत्तम**
मंगल	केतु	3/ 6/2014	30/10/2014	शुभ
मंगल	सूर्य	30/12/2015	6/ 5/2016	**सर्वोत्तम**
मंगल	चंद्र	6/ 5/2016	6/12/2016	शुभ
राहु	राहु	6/12/2016	18/ 8/2019	शुभ

राहु	बृहस्पति	18/ 8/2019	12/ 1/2022	शुभ
राहु	शनि	12/ 1/2022	18/11/2024	शुभ
राहु	केतु	6/ 6/2027	24/ 6/2028	शुभ
राहु	सूर्य	24/ 6/2031	18/ 5/2032	**सर्वोत्तम**
राहु	चंद्र	18/ 5/2032	18/11/2033	शुभ
राहु	मंगल	18/11/2033	6/12/2034	**उत्तम**
बृहस्पति	बृहस्पति	6/12/2034	24/ 1/2037	शुभ
बृहस्पति	शनि	24/ 1/2037	6/ 8/2039	शुभ
बृहस्पति	केतु	12/11/2041	18/10/2042	शुभ
बृहस्पति	सूर्य	18/ 6/2045	6/ 4/2046	**सर्वोत्तम**
बृहस्पति	चंद्र	6/ 4/2046	6/ 8/2047	शुभ
बृहस्पति	मंगल	6/ 8/2047	12/ 7/2048	शुभ
बृहस्पति	राहु	12/ 7/2048	6/12/2050	**उत्तम**
शनि	शनि	6/12/2050	9/12/2053	**उत्तम**

।। उपाय ।।

ज्योतिष में नौ ग्रह हैं जिनकी अपनी अलग–अलग प्रकृति है। ये ग्रह हमारी राशि के अनुसार हमें कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक परिणाम देते हैं। ग्रहों के नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए ज्योतिषीय उपाय का बड़ा महत्व है। ऐसा करने पर न केवल ग्रहों के बुरे प्रभाव दूर होते हैं बल्कि जातक को ग्रहों से शुभ फल भी प्राप्त होते हैं। यदि आप बीमार पड़ते हैं तो चिकित्सक के पास जाते हैं। अब चिकित्सक आपके रोग को पहचानने के लिए पहले जाँच–पड़ताल करता है और उसके बाद वह आपको दवा देता है ताकि आप रोग मुक्त हो सकें। ठीक उसी प्रकार एक ज्योतिषी आपकी जन्म कुंडली को देखकर आपकी समस्या का निदान हेतु आपको उन ग्रहों से संबंधित उपाय करने की सलाह देता है। जब आप उन उपायों को करते हैं तब जाकर आपकी समस्याओं का निदान होता है।

वेश–भूषा एवं जीवन शैली

हमारे जीवन में बड़े ही विचित्र रूप से ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। जब हमारे जीवन में किसी विशेष ग्रह की दशा की शुरुआत होती है तो हमारे आसपास उस ग्रह से संबंधित घटनाएँ घटने लगती हैं। प्रत्येक ग्रह का किसी न किसी रंग/वस्तुओं से संबंध होता है। ज्योतिष के अनुसार यदि कोई ग्रह आपके लिए शुभ फलदायी है तो आपको उस ग्रह से संबंधित वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए परंतु यदि वह ग्रह आपके लिए कष्टकारी है तो आपको उस ग्रह से संबंधित चीजों से परहेज अथवा उन्हे दान करना चाहिए।

यहाँ ग्रह एवं उनसे संबंधित रंग तथा क्रियाओं को बताया जा रहा हैः –

चमकदार सफेद एवं गुलाबी रंग का प्रयोग करें। प्रियतम एवं अन्य महिलाओं का सम्मान करें। यदि आप पुरुष हैं तो अपनी पत्नी का आदर करें। कलात्मक क्रियाओं का विकास करें, चरित्रवान बनें।

सुबह के लिए प्रार्थना

ईश्वर से आत्मीय संपर्क बनाने के लिए प्रार्थना को सबसे बेहतर माध्यम माना गया है। प्रार्थना में हम भगवान से अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों से लड़ने के लिए साहस एवं शक्ति अथवा इच्छापूर्ति के लिए कामना करते हैं। हिन्दू धर्म में प्रत्येक ग्रह को ईश्वर के स्वरूप माना गया है इसलिए किसी विशेष ग्रह से शुभ फल पाने के लिए हम उससे संबंधित देवी/देवताओं की प्रार्थना करते हैं।

माँ लक्ष्मी अथवा जगदम्बे माँ की पूजा करें।
भगवान परशुराम की आराधना करें।
श्री सूक्त का पाठ करें।

व्रत

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से व्रत धारण कर हम अपने ईश्वर की उपासना करते हैं। जबकि वैज्ञानिक दृष्टि से भी उपवास रखना हमारे स्वस्थ्य शरीर के लिए बहुत अच्छा है। इससे हमारे शरीर का आतंरिक एवं बाह्य भाग शुद्ध होता है। इसके

अलावा यह हमारी इच्छा शक्ति को भी मजबूत बनाता है। जीवन को स्वस्थ्य बनाने एवं ग्रहों का आशीर्वाद पाने हेतु यहाँ ग्रहों से संबंधित व्रत धारण करने का दिन बताया जा रहा हैः–

शुक्र ग्रह का शुभ आशीष पाने के लिए शुक्रवार के दिन उपवास रखें।

दान

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए दान करना शुभ माना जाता है। हालाँकि दान करते समय मन में किसी बात का लालच नहीं रहना चाहिए और पूरी श्रद्धा के साथ दान की प्रक्रिया पूर्ण की जानी चाहिए। ध्यान रखें, दान हमेशा जरुरतमंद लोगों को करें। ज्योतिष के अनुसार जिस ग्रह से संबंधित आप दान कर रहे हैं उस ग्रह से आपको शुभ परिणामों की प्रापति होगी और यदि उस ग्रह से आपको कष्टकारी परिणाम मिल रहे हैं तो उससे संबंधित चीजें दान करने से आपके कष्ट दूर हो जाएंगे। यहाँ नीचे ग्रह एवं उनसे संबंधित दान की जाने वस्तुओं एवं दान विधि बतायी जा रही हैः–

शुक्र ग्रह से संबंधित वस्तुओं को शुक्रवार के दिन शुक्र की होरा एवं इसके नक्षत्रों (भरानी, पूर्व फाल्गुनी, पूर्व षाढ़ा) के समय दान करना चाहिए।

दान करने वाली वस्तुएँ– दही, खीर, ज्वार, इत्र, रंग–बिरंगे कपड़े, चांदी, चावल इत्यादि।

जड़ी

ग्रहों से संबंधित जडयिाँ हमारे लिए बहुत ही लाभकारी होती हैं। ये हमारे जीवन में ग्रहों के प्रभाव को नियंत्रण में रखती हैं। यदि आप वैदिक ज्योतिष के अनुसार किसी विशेष ग्रह से संबंधित जड़ी धारण करते हैं तो उस ग्रह के बुरे प्रभाव आपके जीवन पर नहीं पड़ेंगे और आपको उस ग्रह से शुभ परिणामों की प्रापति होगी।

शुक्र ग्रह का आशीर्वाद पाने के लिए अरंड मूल अथवा सरपंखा मूल धारण करें। अरंड मूल/सरपंखा मूल को शुक्रवार के दिन शुक्र की होरा अथवा शुक्र के नक्षत्र में धारण किया जा सकता है।

रुद्राक्ष

ऐसा माना जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव की आँखों के जलबिन्दुओं से हुई है। रुद्राक्ष हमारी ऊर्जा एवं आध्यात्म शक्ति को बढ़ाता है। इसके साथ ही यह हमारे जीवन में सुख–शांति एवं समृद्धि लाता है। इसके प्रभाव से हमारे जीवन में आने वाली सारी चुनौतियाँ दूर हो जाती हैं। साथ ही हमारे स्वास्थ्य जीवन के लिए यह बेहद कारगर होता है। यदि आप इसको धारण करते हैं तो आपको भगवान शिव की अनुकम्पा प्राप्त होती है। प्रत्येक ग्रह की अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं इसलिए सभी ग्रहों के लिए अलग–अलग रुद्राक्ष निर्धारित किए गए हैं।

7 मुखी रुद्राक्ष
सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने हेतु मंत्रः

ऊँ हूं नमः।
ऊँ ह्रां क्रीं ह्रीं सौं।।

यंत्र

ज्योतिष में मंत्रों की भांति यंत्रों का प्रयोग कुंडली में स्थित दोषों को दूर करने के लिए किया जाता है। इसके साथ ही इनका प्रयोग किसी विशेष ग्रह, देवी, देवताओं से शुभ फल की प्राप्ति के लिए करते हैं। इसको भोजपत्र, कागज अथवा किसी सतह पर एक सममितीय ढांचे के द्वारा दर्शाया जाता है। इन यंत्रों में अलौकिक शक्तियाँ समाहित होती हैं। वैसे तो इन यंत्रों को आप अपने हाथों से बना सकते हैं। इसके अलावा आप इसे बाजार से खरीद सकते है।

यदि आप ग्रहों के यंत्रों को अपने हाथों से बनाना चाहते हैं तो आपको निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होगीः

1) अनार के वृक्ष की टहनीय जो एक छोर से पेन की तरह से कलम की गई हो।
2) अष्टगंधय यह आठ प्रकार की वस्तुओं को मिश्रण है।
3) भोज पत्र के छोटे–छोटे टुकड़े।
4) गंगा जल।
5) तांबे से बनी ताबीज। यह नीचे दिए गए चित्र के आकार की हो।

मुहूर्तः यंत्र को विशेष मुहूर्त में तैयार किया जाता है इसलिए हर एक ग्रह का भी अपना विशेष मुहूर्त होता है।

प्रक्रियाः एक चुटकी अष्टगंध लें इसमें गंगा जल की कुछ बूँदे डालकर इसकी स्याही बनाए। अब अनार की शाखा से निर्मित कलम से भोज पत्र के टुकड़ों पर ग्रहों से संबंधित यंत्र का चित्र बनाएँ और इसे सूखने दें। अब सूखे हुए यंत्र को अच्छी तरह से मोड़कर अपनी ताबीज में डालें। आप इस ताबीज को पीले अथवा लाल धागे में डालकर अपने गले अथवा दाहिनी भुजा में पहन सकते हैं। इस यंत्र को बनाते एवं धारण करते समय संबंधित ग्रह का मंत्र अवश्य उच्चारण करें।

शुक्र ग्रह के लाभ पाने के लिए शुक्र यंत्र को शुक्रवार को शुक्र की होरा एवं शुक्र के नक्षत्र के समय धारण करें।

11	6	13
12	10	8
7	14	9

मंत्र

प्राचीन काल से ही वैदिक ज्योतिष में मंत्रों का बड़ा महत्व है। मंत्र का सही उच्चारण करने पर वातावरण में एक प्रकार की सकारात्मक ऊर्जा बहती है। यदि जातक किसी विशेष ग्रह अथवा देवी, देवताओं से संबंधित मंत्र का जाप करता है तो उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। नीचे सभी नौ ग्रहों के मंत्रों को बताया जा रहा है–

शुक्र ग्रह को प्रसन्न करने के लिए आपको शुक्र बीज मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। मंत्र– ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

इस मंत्र को कम से कम 16000 बार उच्चारण करना चाहिए और देश–काल–पात्र सिद्धांत के अनुसार कलयुग में इस मंत्र को 64000 बार जपने के लिए कहा गया है।

आप इस मंत्र का भी जाप कर सकते हैं – ऊँ शुं शुक्राय नमः।

।। वर्षफल विवरण 2018 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2018
23:53:18	जन्म समय	5:59:58
बुधवार	जन्म दिन	शुक्रवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	05 : 38 : 49
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 55 : 00
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 08
वृषभ	लग्न	सिंह
शुक्र	लग्नस्वामी	सूर्य
मेष	राशि	मकर
मंगल	राशि स्वामी	शनि
भरणी	नक्षत्र	उ0षाढा
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
वृद्धि	योग	सौभाग्य
वणिज	करण	तैतिल
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–07–01
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

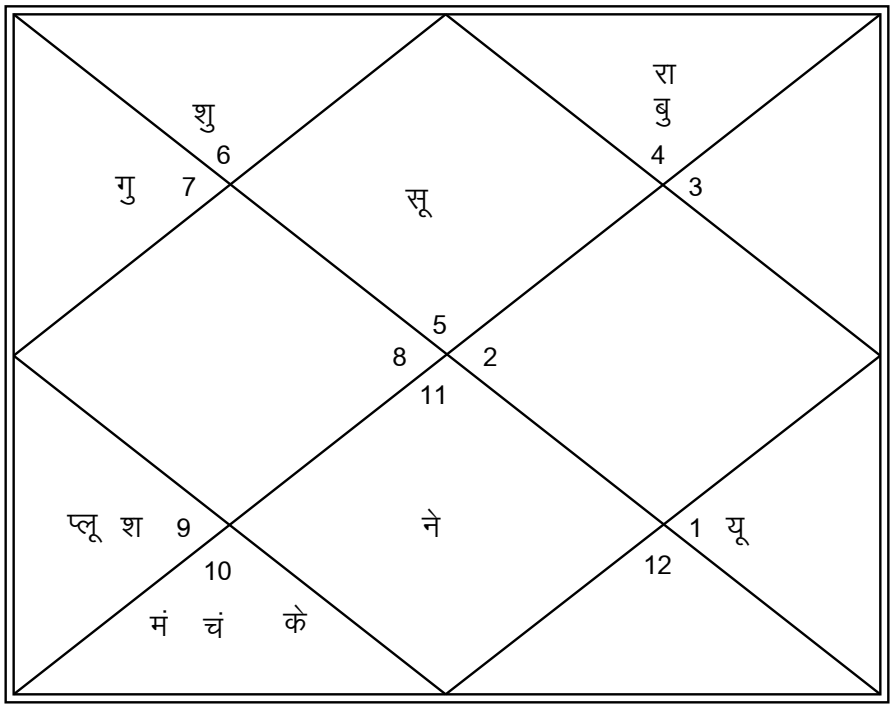

।। वर्षफल विवरण 2018 ।।

मुन्थाः 2 भाव

आकस्मिक धन प्राप्ति का योग है। यह धन लॉटरी, शेयर में सट्टेबाजी आदि माध्यमों से प्राप्त हो सकता है। विभिन्न व्यवसायिक सौदों से आप अधिक धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। पुराने घर की खरीद बिी से भी आपको धन मिलेगा। मान सम्मान की प्राप्ति होगी, बेहतर भोजन का आनंद लेंगे और प्रशासनिक सहयोग प्राप्त करेंगे।

अगस्त 24, 2018 – अक्टूबर 17, 2018 दशा राहू

राहू भाव संख्या 12

इस अवधि में निवास स्थान या नौकरी का परिवर्तन संभावित है। भारी व्यय से आप व्यथित रहेंगे। अपने लोगों से ही झगड़े विवाद हो सकते हैं। यात्राएं थकाने वाली और सफलदायक नहीं रहेंगी। पारिवारिक सदस्य आपके प्रति उदासीन रहेंगे। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। दुष्ट मित्रों से सावधान रहें। वह आपकी प्रतिष्ठा पर आंच लायेंगे। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी चिन्ता का एक कारण रहेगा। अभी किसी यात्रा की योजना न बनाएं।

अक्टूबर 17, 2018 – दिसम्बर 05, 2018 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 3

इस अवधि में आपके क्रियाकलाप प्रशंसा के हकदार होंगे और आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका आत्मविश्वास बढा चढ़ा रहेगा। आपका सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा। छोटी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। पारिवारिक उत्थान के लिये आप कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना चाहेंगे। अगर आप शादी शुदा हैं तो वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा। सहयोगियों और भागीदारों से खूब पटेगी। किसी बुजुर्ग से आप सहारा प्राप्तकरेंगे। छोटे मोटे रोगों के उभरने की भी संभावना है।

दिसम्बर 05, 2018 – फरवरी 01, 2019 दशा शनि

शनि भाव संख्या 5

आपकी सृजनात्मक क्षमता इस अवधि में छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। इस मामलें में अधिक ध्यान देने की जरूरत है जिससे आप सही निर्णय ले सके। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। मित्र व सहयोगी अपना वचन नहीं निभाएगें। झूठी आशाओं पर निर्भर करना ठीक नहीं। यात्राएं सफलदायक नहीं होगी। आर्थिक समस्याएं दिमागी शांति को भंग करेगी। जोखिम उठाने वाली प्रवृतियों पर पूरी तरह अंकुश लगाकर रखे।

फरवरी 01, 2019 – मार्च 25, 2019 दशा बुध

बुध भाव संख्या 12

यह अवधि आपको मानसिक चिन्ताएं देगी। विरोधी प्रतिष्ठा पर आंच लाने का प्रयत्न करेंगे। व्यय बढ़ता रहेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण परेशान रहेंगे। हानिकर कार्यों से भी सम्बंधित रह सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौमनस्यपूर्ण नहीं रहेगा। आपका मन अध्यात्म की ओर झुकेगा। समस्याओं परेशानियों का प्रतिरोध करने की कोशिश करें। जोखिम उठाने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें और सब प्रकार की सट्टेबाजी से बचें।

।। वर्षफल विवरण 2018 ।।

मार्च 25, 2019 – अप्रैल 15, 2019 दशा केतु

केतु भाव संख्या 6

व्यापार धन्धै में इस अवधि में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अगर नौकरी पेशा हैं तो नौकरी की हालतों में सुधार होगा। व्यापार के विस्तृत होने की संभावना है। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस दौरान हर क्षेत्र से आपको सम्मान मिलेगा। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्धा में सफल होंगे। दुश्मनों की आपका सामना करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। अचानक यात्रा सौभाग्य वृद्धि करेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारे प्रयास कर सौभाग्यकाल को पूरी तरह भुनाने के लिये यह श्रेयस्कर समय है।

अप्रैल 15, 2019 – जून 15, 2019 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 2

परिवारजनों के साथ आप अच्छा निबाह कर सकेंगे। आप परिस्थितियों का बड़ी चतुरता से सामना करेंगे। आय में वृद्धि होनी चाहिए। संदेहास्पद साधनों या गलत तरीकों से भी आपके पास पैसा आयेगा। परिवार में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा। स्त्री वर्ग का साथ आपको रूचिकर लगेगा। महंगे और स्वादिष्ट भोजन के लिये आपका स्वाद जागृत होगा। घर की चीजों के लिये आप पैसा खर्च कर सकते हैं। घर पर सब लोग इकट्ठे होंगे।

जून 15, 2019 – जुलाई 03, 2019 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 1

इस अवधि में जीवन के प्रति आपका धनात्मक दृष्टिकोण रहेगा और आप में जरूरत से अधिक आत्मविश्वास रहेगा। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार में आप कोई महत्वपूर्ण पद संभालेंगे या सत्ता प्राप्त करेंगे। छोटी अवधि की यात्राएं करेंगे जो आपकी कड़ी मेहनत के कारण सफलदायक होंगी। सामाजिक संस्थानों को आप खुलकर दान देंगे। स्वास्थ्य बुरा रह सकता है तथा परिवार में भी बीमारियां फैल सकती हैं।

जुलाई 03, 2019 – अगस्त 02, 2019 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 6

इस अवधि में किये उद्यमों में सफलता नहीं मिलेगी। शत्रु आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। नौकरी के हालात भी बदतर होते जायेंगे। स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें भी मानसिक शांति भंग करेगी। जल्दबाजी या हड़बड़ी से काम करने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी के कारण चिंतित रह सकते हैं।

अगस्त 02, 2019 – अगस्त 24, 2019 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 6

इस अवधि में आप काफी सुखी रहेंगे। नौकरी के हालात सुधरेंगे। प्रचुर लाभ होने की संभावना है। पारिवारिक वातावरण भी सुखद रहेगा। आप अपनी अड़चनें और बाधाएं दूर करने और शत्रुओं का दमन करने के लिये चेष्टारत रहेंगे। कार इत्यादि चलाते समय सावधानी बरतें।

।। वर्षफल विवरण 2019 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2019
23:53:18	जन्म समय	12:9:8
बुधवार	जन्म दिन	शनिवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	11 : 48 : 00
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 54 : 52
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 23
वृषभ	लग्न	तुला
शुक्र	लग्नस्वामी	शुक्र
मेष	राशि	वृषभ
मंगल	राशि स्वामी	शुक्र
भरणी	नक्षत्र	रोहिणी
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	चंद्र
वृद्धि	योग	व्याघात
वणिज	करण	तैतिल
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–07–51
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

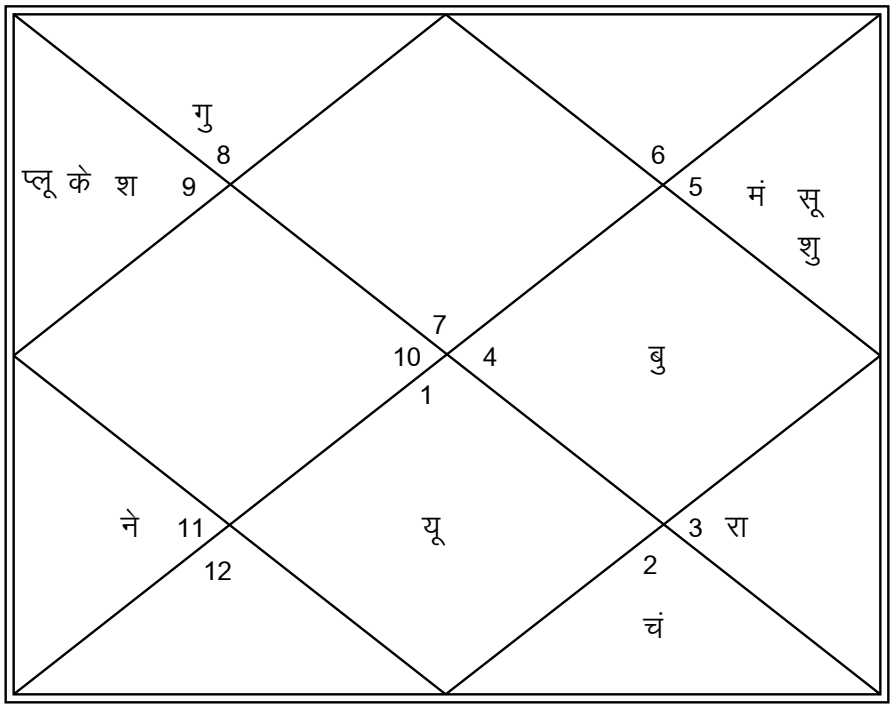

।। वर्षफल विवरण 2019 ।।

मुन्थाः 1 भाव

यह एक अनुकूल स्थिति है। आपको बेहतर कॅरिअर संभावनाएं और चतुर्मुख उन्नति के अवसर मिलेंगे। अपने विरोधियों को परास्त करने में आप सक्षम होंगे। आपका मान बढ़ेगा। आपको बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त होगा और आर्थिक दृष्टि से आप अधिक समृद्ध होंगे।

अगस्त 24, 2019 – अक्टूबर 12, 2019 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 2

इस अवधि के दौरान आय वृद्धि काफी होगी। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में आप पैसा रूपया छोड़ने से नहीं हिचकिचायेंगे। आप जन प्रिय रहेंगे। परिवार के सदस्यों की संख्या में बढोत्तरी हो सकती है। शत्रुओं का पराभव कर सकेंगे। वसीयत से लाभ भी शीघ्र प्राप्त होगा। कला कविता एवम् साहित्य में आपका शौक बढ़ा चढ़ा रहेगा। अपने रूचि के क्षेत्र में आप अच्छा काम करेंगे। साधारण तौर पर सब प्रकार का सुख भोगना सुनिश्चित है।

अक्टूबर 12, 2019 – दिसम्बर 08, 2019 दशा शनि

शनि भाव संख्या 3

हर काम को सलीके से करने की आपकी बलवती इच्छा रहेगी। आपका विश्वास बहुत बढ़ा चढ़ा रहेगा। नौकरी व्यापार या व्यवसाय में उत्साहवर्धक परिणाम निश्चित रूप से सामने आएंगें। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। आमदनी साधारण रूप से अच्छी रहेगी। पारिवारिक वातावरण बड़ा सौहार्दपूर्ण रहेगा। संचार माध्यमों से कोई अच्छी खबर मिल सकती है।

दिसम्बर 08, 2019 – जनवरी 29, 2020 दशा बुध

बुध भाव संख्या 10

व्यापार या व्यवसाय में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार भी हो सकता है। इस अवधि के दौरान आप पूरी तरह कर्मठ रहेंगे। वरिष्ठ लोगों या सत्तावान व्यक्तियों के साथ आपके संबंधों में सुधार आयेगा। पारिवारिक माहौल संतोषप्रद रहेगा। आपको वाहन भी प्राप्त हो सकता है। विदेशों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। घर में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

जनवरी 29, 2020 – फरवरी 19, 2020 दशा केतु

केतु भाव संख्या 3

आप अपने काम बुद्धिमानी से नहीं निपटायेंगे। वैसे इस पूरी अवधि में आप आशावादी रहेंगे। संचार द्वारा प्राप्त समाचार से लाभावत होंगे। अचानक यात्रा करने से भी अच्छे फल निकलेंगे। आमदनी में इजाफा होगा। पारिवारिक जीवन पर राहतकारी प्रभाव पड़ेगा। अगर पदोन्नति होने वाली है तो जैसी आप चाहेंगे वैसी ही होगी। मित्र मंडली बढ़ेगी। दिमाग का अध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। वास्तव में यह आपके लिये एक सौभाग्यशाली समय है।

।। वर्षफल विवरण 2019 ।।

फरवरी 19, 2020 – अप्रैल 20, 2020 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 11

इस अवधि में आपको हर प्रयास में सफलता मिलेगी। मित्र और सहयोगी आपको पूरा सहयोग देंगे। बहु प्रतीक्षित अभिलाषाओं और इच्छाओं की सम्पूर्ति होगी। भाई बहिन भी अपने अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य करेंगे। यात्राओं से लाभ होगा। उच्च कोटि का पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मिलने वाले मित्रों और सहयोगियों से अच्छी पटेगी। खर्चे अधिक होंगे लेकिन आमदनी से पूर पड़ती रहेगी।

अप्रैल 20, 2020 – मई 09, 2020 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 11

आपकी इच्छाएं व महत्वाकांक्षायें पूरी होंगी। मित्रों और रिश्तेदारों से सहायता पायेंगे। इस समय के सौदे सफलदायक सिद्ध होंगे। अनुबन्धों और समझौतों से आपको प्रचुर लाभ मिलेगा। प्रेम एवम् प्रणय संबंधों के लिये भी यह एक श्रेष्ठ समय है। आमदनी में अच्छी खासी वृद्धि होगी। लम्बी यात्राएं सुखद व सफलदायक सिद्ध होगी।

मई 09, 2020 – जून 08, 2020 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 8

अपने प्रयत्नों में आपको निराशा मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी रहेंगी। अपने आपको किसी बड़े उद्यम से सम्बद्दीत न कीजिये। यह जोखिम लेने का समय नहीं है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित रह सकते हैं। फालतु की यात्राओं से बचें।

जून 08, 2020 – जून 29, 2020 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 11

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

जून 29, 2020 – अगस्त 23, 2020 दशा राहू

राहू भाव संख्या 9

इस अवधि में आपको मिले जुले फल मिलेंगे। वैसे आप अपने व्यवसाय/व्यापार में अच्छा काम करेंगे। आप अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होंगे और एक बार हाथ में लेने के बाद काम छोड़ेंगे नहीं। आपका निश्चय दृढ़ रहेगा। लेकिन गुरूजनों और माता पिता से संबंध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे। कभी कभी आप तर्क बुद्धि से इतना काम लेंगे कि मामले की तह तक ही न पहुंच पायेंगे। आपके व्यक्तित्व में अहंकार का प्रवेश हो जायेगा। आपके इस बर्ताव से आप जनप्रिय नहीं रह पायेंगे। अपनी अर्न्तदृष्टि से अपने आप को जांचने परखने का प्रयत्न करें।

।। वर्षफल विवरण 2020 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	23/8/2020
23:53:18	जन्म समय	18:18:18
बुधवार	जन्म दिन	रविवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	17 : 57 : 10
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 54 : 45
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 38
वृषभ	लग्न	मकर
शुक्र	लग्नस्वामी	शनि
मेष	राशि	तुला
मंगल	राशि स्वामी	शुक्र
भरणी	नक्षत्र	स्वाती
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	राहु
वृद्धि	योग	शुक्ल
वणिज	करण	कौलव
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–08–41
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

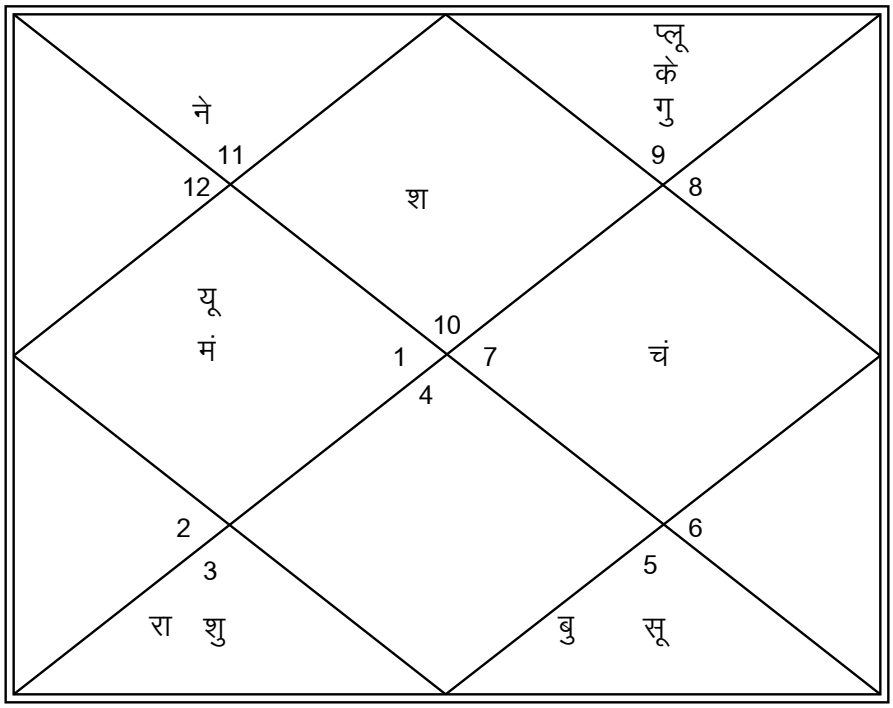

।। वर्षफल विवरण 2020 ।।

मुन्थाः 11 भाव

आप बेहतर स्वास्थ्य, लोकप्रियता, मित्रता व सुखद पारिवारिक जीवन का आनंद लेंगे। आपको उच्च प्रशासनिक अथवा राजकीय पदों से सहयोग मिलेगा। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी और आपकी समस्याओं का अंत होगा।

अगस्त 23, 2020 – अक्टूबर 20, 2020 दशा शनि

शनि भाव संख्या 1

आपके हर काम में अड़चनें आएगी और देरी होगी। कभी कभी असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगें। काम का बोझ बहुत रहेगा और फालतू के कामों में भी आप फंसे रह सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखद नहीं रहेगा। रिश्तेदारों के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। भागीदारों या सहयोगियों की लापरवाही के कारण आपको धक्का पहुंच सकता है। वैसे इस अवधि का आखिरी हिस्सा आपको कुछ राहत देगा। आशावादी होना निराशावादी होने से सदैव अच्छा है।

अक्टूबर 20, 2020 – दिसम्बर 11, 2020 दशा बुध

बुध भाव संख्या 8

प्रयत्नों के बावजूद असफलता आपको निराश करेगी। आपको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि काम का बोझ बहुत रहेगा। छोटी छोटी बातों को लेकर विवाद बढ़ने की संभावना है। बेकार के व अमहत्वपूर्ण कामों में आप अपनी शक्ति और समय व्यय करेंगे। जल्दी धन कमाने की अपनी प्रवृति पर अंकुश लगायें। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण कुछ काम आप नहीं कर पायेंगे। पारिवारिक जीवन में तनावग्रस्त रहेंगे। वैसे इस अवधि में गूढ़ एवं परामनोवैाानिक अनुभव आपको प्राप्त होंगे। बेकार की यात्राओं से बचें।

दिसम्बर 11, 2020 – जनवरी 01, 2021 दशा केतु

केतु भाव संख्या 12

दूसरों की सही सलाह पर ध्यान न देने की आपकी चेष्टा रह सकती है। गलत और पापपूर्ण कार्यो से संलग्न रहने की संभावना है। गलत निर्णय के कारण आप चिन्ताग्रस्त रह सकते हैं। इस अवधि में सनक और उन्माद से प्रेरित होकर काम न करें व आप गहरी मुसीबत में पड़ सकते हैं। वैसे इस अवधि में आप गूढ़ विज्ञान संबंधी कार्यों में प्रवृती रह सकते हैं। इस अवधि के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा।

जनवरी 01, 2021 – मार्च 03, 2021 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 6

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

।। वर्षफल विवरण 2020 ।।

मार्च 03, 2021 – मार्च 21, 2021 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 8

अचानक समस्यायें खड़ी हो सकतीं हैं। संबंधियों से व्यवहार अच्छा रखें नहीं तो बेवजह झगड़े होंगे। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। लम्बी अवधि के लिये बीमार रहने की आशंका रहेगी। अनैतिक कार्यों में प्रवृती न होईये तथा सन्देहास्पद सौदों से बचें। महत्वपूर्ण कागजों पर दस्तखत करने से पहले कागज अच्छी तरह पढें।

मार्च 21, 2021 – अप्रैल 21, 2021 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 10

आप अपने ही विचारों और योजनाओं को रचनात्मक रूप दे सकेंगे। नौकरी या व्यापार से संबंधित कुछ ठोस परिणाम सामने आयेंगे। आपको सारे ही उद्यमों में सफलता निचत है। अपने से वरिष्ठ लोगों या पर्यवेक्षकों के साथ अति मधुर संबंध रहेंगे। इस समय का पूरा सदुपयोग कीजिये।

अप्रैल 21, 2021 – मई 12, 2021 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 4

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और चावों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पती, वाहन सुख एवम् स्त्रीयों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिये व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिये भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है।

मई 12, 2021 – जुलाई 06, 2021 दशा राहू

राहू भाव संख्या 6

इस अवधि में आप अपने उद्यमों में काफी सफल रहेंगे। काम करने के हालात में सुधार होगा। पैसा साधारण रूप से आपके पास आयेगा। सरकार और सत्ताधारी व्यक्तियों व्दारा आप का सब काम पूरा कर दिया जायेगा। अपने विरोधियों का आप निश्चित रूप से पराभव कर देंगे। इस अवधि के मध्य में एक सुखद यात्रा अवश्य करेंगे। पारिवारिक वातावरण भी अच्छा रहेगा। नफे की सौदा होने की पूरी संभावना है। अगर आपने प्रार्थना की है तो आर्थिक साधन व रूपया पैसा अवश्य प्राप्त करेंगे। छोटी मोटी बीमारियां लगी रह सकती हैं।

जुलाई 06, 2021 – अगस्त 23, 2021 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 12

आपमें किसी के प्रति लगाव नहीं होगा और लोग आपके प्रति वैमनस्य का भाव रखेंगे। असुरक्षा की भावना से ग्रसित रहेंगे। फालतू के कामों में आप अपना समय और पैसा बर्बाद करेंगे। आपको दूसरों के लिये काम करना पड़ सकता है। खर्चे बहुत होंगे। विरोधी आपको तनावग्रस्त रखेंगे। जहां तक संभव हो यात्राओं से आप बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें नहीं तो समस्यायें उठ खड़ी होंगी। परिवारजनों के बर्ताव मे भी काफी फर्क रहेगा। यह अच्छा रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

।। वर्षफल विवरण 2021 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2021
23:53:18	जन्म समय	0:27:28
बुधवार	जन्म दिन	सोमवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	00 : 06 : 20
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 55 : 09
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 51 : 50
वृषभ	लग्न	वृषभ
शुक्र	लग्नस्वामी	शुक्र
मेष	राशि	कुंभ
मंगल	राशि स्वामी	शनि
भरणी	नक्षत्र	पूर्वाभाद्रपद
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	गुरू
वृद्धि	योग	सुकर्मा
वणिज	करण	तैतिल
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–09–32
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

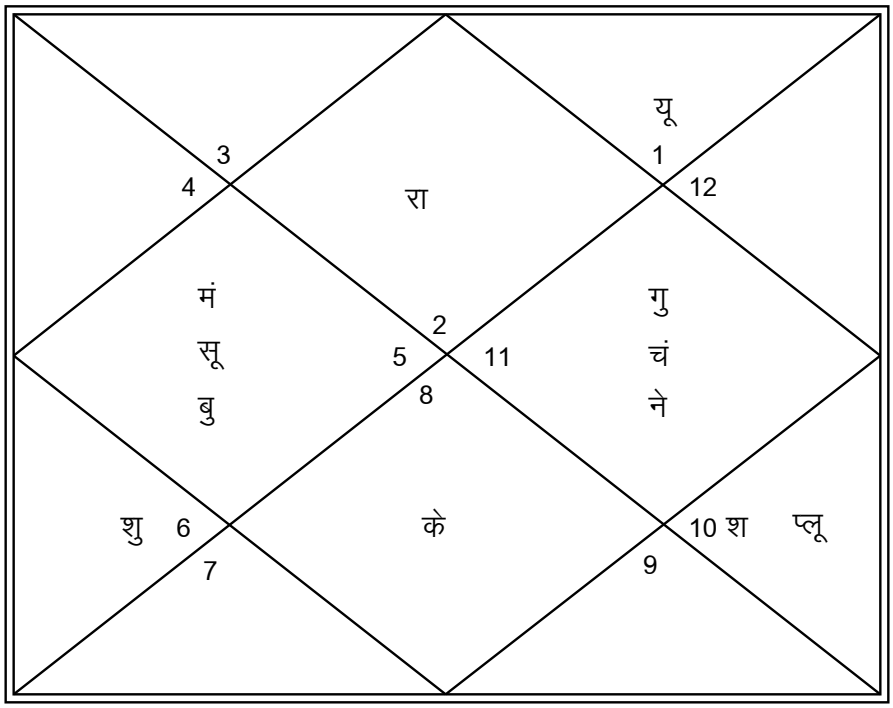

।। वर्षफल विवरण 2021 ।।

मुन्थाः 8 भाव

आपके लिए यह कठिन समय है। मृत्यु रूपी राक्षस आपके निकट मंडराता रहेगा। कई बीमारियॉ हो सकती है। निकट रिश्तेदार की आकस्मिक मृत्यु भी संभव है। दुर्घटना का योग है। धन की, आत्मविश्वास की हानि होगी। मानसिक तनाव रहेगा। आपका स्थानांतरण प्रियजनों से दूर किसी अनजानी सी जगह हो सकता है।

अगस्त 24, 2021 – अक्टूबर 14, 2021 दशा बुध

बुध भाव संख्या 4

इस अवधि में आपके अन्दर बैठी हुई व्यवसाय कि सहज योग्यता विकास प्राप्त करेगी। आपकी व्यवहार बुद्धि और समीक्षात्मक दृष्टि चैतन्य रहेगी। आप बहुत सलीके से काम करेंगे। सुखी रहेंगे और साधारण तौर पर प्रसन्नता प्राप्त होगी। अपनी कर्मठता से आप बहुत लाभ उठायेंगे। पारिवारिक वातावरण सौमनस्यपूर्ण रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। विलास सामग्री पर व्यय करेंगे। संचार माध्यम से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शुभ संस्कार भी मनाया जा सकता है।

अक्टूबर 14, 2021 – नवम्बर 05, 2021 दशा केतु

केतु भाव संख्या 7

इस अवधि के दौरान आपको मिले जुले फल मिलेंगे। अचानक भाग्य चमकेगा। आपका सामाजिक क्षेत्र विकसित होगा। प्रणय और प्रेम के लिये यह समय अच्छा नहीं है। प्रेमिका से झगड़े और विवाद होने की पूरी संभावना है। खर्च भी अचानक बहुत बढ़ जायेगा। भ्रमण से कोई विशेष लाभ नहीं होने वाला। जोखिम भरे कामों में फंसने की संभावना है। शायद जोखिम उठाने के लिये यह उपयुक्त समय नहीं है। छोटी मोटी बीमारियां भी लगी रह सकती हैं।

नवम्बर 05, 2021 – जनवरी 04, 2022 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 5

इस अवधि के दौरान आप स्त्रीवर्ग की ओर आकर्षित रहेंगे। इस अवधि में अचानक ऐसी घटनाएं घटेंगी जो आपके लिये हितकर हो। इसके अलावा इस दौरान आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और खुशहाली भी बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। बहु प्रतीक्षित अभिलाषाओं की सम्पूर्ति होगी। यदि आप में सृजनात्मक क्षमता है तो इस अवधि के दौरान आपकी कला संगीत इत्यादि में सफलदायक गति रहेगी। सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा और पुराने मित्रों सहयोगियों से मुलाकात होगी। संचार के माध्यम से आपको कोई बहुत अच्छी खबर भी मिल सकती है।

जनवरी 04, 2022 – जनवरी 23, 2022 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 4

इस अवधि में आपको मेहनत करनी पड़ेगी जो आप कर नहीं पायेंगे। लगातार किया गया कड़ा परिश्रम थका भी शीघ्र देगा और कार्य क्षमता भी कम हो जायेगी। बुरे कार्यों में प्रवृती रहने की आपकी चेष्टा रहेगी। मां बाप का बुरा स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा। कार या कोईवाहन बहुत तेजी से न चलाएं।

।। वर्षफल विवरण 2021 ।।

जनवरी 23, 2022 – फरवरी 22, 2022 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 10

आप अपने ही विचारों और योजनाओं को रचनात्मक रूप दे सकेंगे। नौकरी या व्यापार से संबंधित कुछ ठोस परिणाम सामने आयेंगे। आपको सारे ही उद्यमों में सफलता निचत है। अपने से वरिष्ठ लोगों या पर्यवेक्षकों के साथ अति मधुर संबंध रहेंगे। इस समय का पूरा सदुपयोग कीजिये।

फरवरी 22, 2022 – मार्च 15, 2022 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 4

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और चावों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पती, वाहन सुख एवम् स्त्रीयों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिये व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिये भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है।

मार्च 15, 2022 – मई 09, 2022 दशा राहू

राहू भाव संख्या 1

उल्टी सीधी तरह से काम करने की आपकी प्रवृति होगी। किसी भ्रम में न रहें। इस अवधि में आपको डर सताता रहेगा। आपके अपने लोग बार बार आपको धोखा देंगे। जल्दबाजी या हड़बड़ी से कोई फायदा नहीं होगा। स्त्री वर्ग से आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच विचार कर अमल करें। तथ्यजीवी रहें स्मृतिजीवी नहीं। किसी गुप्त रोग के कारण आप परेशान रह सकते हैं।

मई 09, 2022 – जून 27, 2022 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 10

व्यापार नौकरी या धन्धे में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार होगा और पद बढ़ेगा। इस अवधि में वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। व्यापार और नौकरी के सिलसिले में आप काफी भ्रमण करेंगे। शत्रु प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे पर उसमें कामयाब नहीं होंगे। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा।

जून 27, 2022 – अगस्त 24, 2022 दशा शनि

शनि भाव संख्या 9

इस अवधि के दौरान आप खूब खुश रहेंगे। आपके प्रयास अच्छे परिणाम देना शुरू कर देंगे। सरकारी अफसरों, वरिष्ठ लोगों एवं माता पिता से संबंध अति मधुर रहेंगे। एक लम्बी यात्रा बहुत फायदेमंद रहेगी। आपके मित्र व सहयोगी आपकी पूरी सहायता करेंगे। आपका मन अध्यात्म और जीवन के उच्च दर्शन की ओर मुड़ जाएगा। नए व्यापार करने या नौकरी बदलने की पूरी संभावना है। विरोधी आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएगें। छोटी मोटी बीमारियां लगी रहेंगी।

।। वर्षफल विवरण 2022 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2022
23:53:18	जन्म समय	6:36:38
बुधवार	जन्म दिन	बुधवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	06 : 15 : 29
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 55 : 01
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 06
वृषभ	लग्न	सिंह
शुक्र	लग्नस्वामी	सूर्य
मेष	राशि	मिथुन
मंगल	राशि स्वामी	बुध
भरणी	नक्षत्र	पुनर्वसु
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	गुरू
वृद्धि	योग	व्यतिपात
वणिज	करण	तैतिल
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–10–22
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

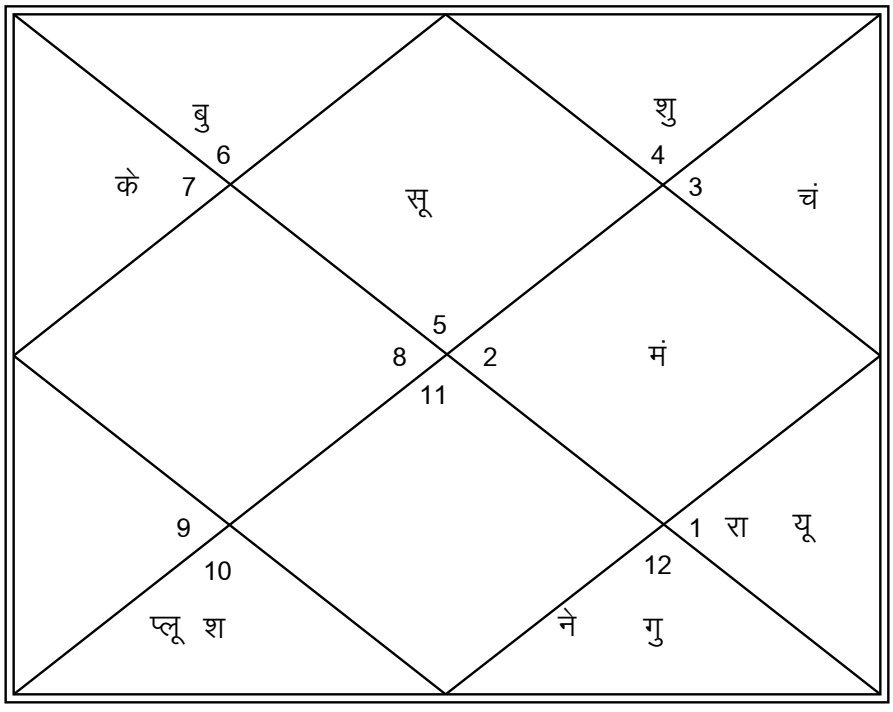

।। वर्षफल विवरण 2022 ।।

मुन्थाः 6 भाव

स्वास्थ्य संबंधी अनेक परेशानियॉ आपको तनावग्रस्त करेंगी। कुछ निकट रिश्तेदार गंभीर रूप से बीमार हो सकते हैं। विरोधियों से खतरा है। संभव है कि चोरी की वजह से आपको नुकसान हो। शत्रु की किसी गतिविधी की वजह से चोट लगने का भी डर है। आपके कार्यस्थल पर आपके विरोधियों को प्रशासनिक सहयोग मिलने की वजह से आप मानसिक यंत्रणा के शिकार हो सकते हैं।

अगस्त 24, 2022 – सितम्बर 14, 2022 दशा केतु

केतु भाव संख्या 3

आप अपने काम बुद्धिमानी से नहीं निपटायेंगे। वैसे इस पूरी अवधि में आप आशावादी रहेंगे। संचार द्वारा प्राप्त समाचार से लाभावत होंगे। अचानक यात्रा करने से भी अच्छे फल निकलेंगे। आमदनी में इजाफा होगा। पारिवारिक जीवन पर राहतकारी प्रभाव पड़ेगा। अगर पदोन्नति होने वाली है तो जैसी आप चाहेंगे वैसी ही होगी। मित्र मंडली बढ़ेगी। दिमाग का अध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। वास्तव में यह आपके लिये एक सौभाग्यशाली समय है।

सितम्बर 14, 2022 – नवम्बर 14, 2022 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 12

आप सुविधा और विलास के साधनों पर खर्च करेंगे। उच्च कोटि का वैवाहिक सुख भोगेंगे। फिर भी अच्छा होगा कि आप अपनी भोग वृती पर अंकुश लगायें वरना आनन्द प्राप्त करने के बजाय परेशानी उठानी पड़ जायेगी। छोटी मोटी बीमारी परेशान करेगी। प्रणय संबंधों की गति धीमी रखें। विरोधी और प्रतिद्वन्दी नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। यघपि आप उनकी परवाह नहीं करेंगे फिर भी आप को सलाह दी जाती है कि ऐसा न करें। आर्थिक रूप से यह बुरा समय नहीं है पर खर्चो पर नियंत्रण रखें। परिवार जन के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं।

नवम्बर 14, 2022 – दिसम्बर 02, 2022 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 1

इस अवधि में जीवन के प्रति आपका धनात्मक दृष्टिकोण रहेगा और आप में जरूरत से अधिक आत्मविश्वास रहेगा। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार में आप कोई महत्वपूर्ण पद संभालेंगे या सत्ता प्राप्त करेंगे। छोटी अवधि की यात्राएं करेंगे जो आपकी कड़ी मेहनत के कारण सफलदायक होंगी। सामाजिक संस्थानों को आप खुलकर दान देंगे। स्वास्थ्य बुरा रह सकता है तथा परिवार में भी बीमारियां फैल सकती हैं।

दिसम्बर 02, 2022 – जनवरी 02, 2023 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 11

आपके मित्र और सहयोगी आपकी सहायता करेंगे। इस अवधि में आपकी महत्वाकांक्षा और इच्छाओं की पूर्ति होगी। किसी लाभप्रद सौदे से आप सम्बंधित रहेंगे। लम्बी यात्राओं की प्रबल संभावना है। सभी लिहाज से परिणाम बहुत अच्छे रहेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2022 ।।

जनवरी 02, 2023 – जनवरी 23, 2023 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 10

आपको लेन देन के व्यवसाय। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार द्वारा फायदा मिलेगा। उच्च पदस्थ और महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपकी मित्रता रहेगी जिनसे आप लाभावत होंगे। व्यापार का विस्तार भी शीघ्र होगा। विपरीत परिस्थितियों को कुशलता से झेलने के लिये आपमें प्रचुर आत्मविश्वास रहेगा। शत्रु आपको नुकसान नहीं पहुंचा पायेंगे।

जनवरी 23, 2023 – मार्च 19, 2023 दशा राहू

राहू भाव संख्या 9

इस अवधि में आपको मिले जुले फल मिलेंगे। वैसे आप अपने व्यवसाय/व्यापार में अच्छा काम करेंगे। आप अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होंगे और एक बार हाथ में लेने के बाद काम छोड़ेंगे नहीं। आपका निश्चय दृढ़ रहेगा। लेकिन गुरूजनों और माता पिता से संबंध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे। कभी कभी आप तर्क बुद्धि से इतना काम लेंगे कि मामले की तह तक ही न पहुंच पायेंगे। आपके व्यक्तित्व में अहंकार का प्रवेश हो जायेगा। आपके इस बर्ताव से आप जनप्रिय नहीं रह पायेंगे। अपनी अर्न्तदृष्टि से अपने आप को जांचने परखने का प्रयत्न करें।

मार्च 19, 2023 – मई 06, 2023 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 8

मानसिक चिन्ताओं के कारण तकलीफ होगी। शारीरिक रोग भी घेरे रह सकते हैं। दिमाग को शांति नहीं मिलेगी। परिवार जनों का बर्ताव भी फर्क रहेगा। लेकिन गूढ़ विाान और परामनोविाान में आपकी रूचि जागृत होगी। इन क्षेत्रों के कुछ अनुभव भी प्राप्त होंगे। अचानक धन लाभ होने की भी संभावना है। पूंजी निवेश का प्रयत्न न करें क्योंकि मन चाहा परिणाम प्राप्त नहीं होगा। मित्र व सहयोगी अपना वचन नहीं निभायेंगे। असुरक्षा की भावना सदैव विद्यमान रहेगी।

मई 06, 2023 – जुलाई 03, 2023 दशा शनि

शनि भाव संख्या 6

आप अपने कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा काम करेंगे। नौकरी या व्यवसाय की परिस्थितियों में काफी सुधार आएगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। रोजमर्रा के जीवन में आप अत्यधिक स्फूर्तिवान महसूस करेंगे। विरोधियों की आपके सामने पड़ने की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। आर्थिक रूप से यह बहुत अच्छा समय सिद्ध होगा। छोटी यात्राएं उपयोगी रहेंगी। परिवार का माहौल पूर्ण संतोषप्रद रहेगा। इस अवधि के मध्य में छोटी मोटी बीमारी होने की संभावना है जिस पर आपको थोड़ा बहुत ध्यान रखने की आवश्यकता है।

जुलाई 03, 2023 – अगस्त 24, 2023 दशा बुध

बुध भाव संख्या 2

आर्थिक रूप से यह उनम समय रहेगा। नफा के सौदा से काफी लाभ होगा। परिस्थितियों और योजनाओं की गहरी समझ के कारण आप दूसरों को आसानी से कोई बात मनवा सकेंगे। इस अवधि में आप काफी प्रसिद्ध रहेंगे। परिवार के सदस्यों का आपके प्रति बहुत अच्छा बर्ताव रहेगा। पुराने रीण इत्यादि की वसूली भी हो जायेगी। इस काल में भ्रमण से काफी लाभ मिलेगा। आपकी प्रकृति दार्शनिक और गम्भीर हो जायेगी। गूढ़ विज्ञान में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा हो सकता है आपको परामनोवैानिक अनुभव भी प्राप्त हो।

।। वर्षफल विवरण 2023 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2023
23:53:18	जन्म समय	12:45:48
बुधवार	जन्म दिन	गुरूवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	12 : 24 : 40
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 54 : 54
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 21
वृषभ	लग्न	वृश्चिक
शुक्र	लग्नस्वामी	मंगल
मेष	राशि	वृश्चिक
मंगल	राशि स्वामी	मंगल
भरणी	नक्षत्र	अनुराधा
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शनि
वृद्धि	योग	इन्द्र
वणिज	करण	विष्टि
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–11–12
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

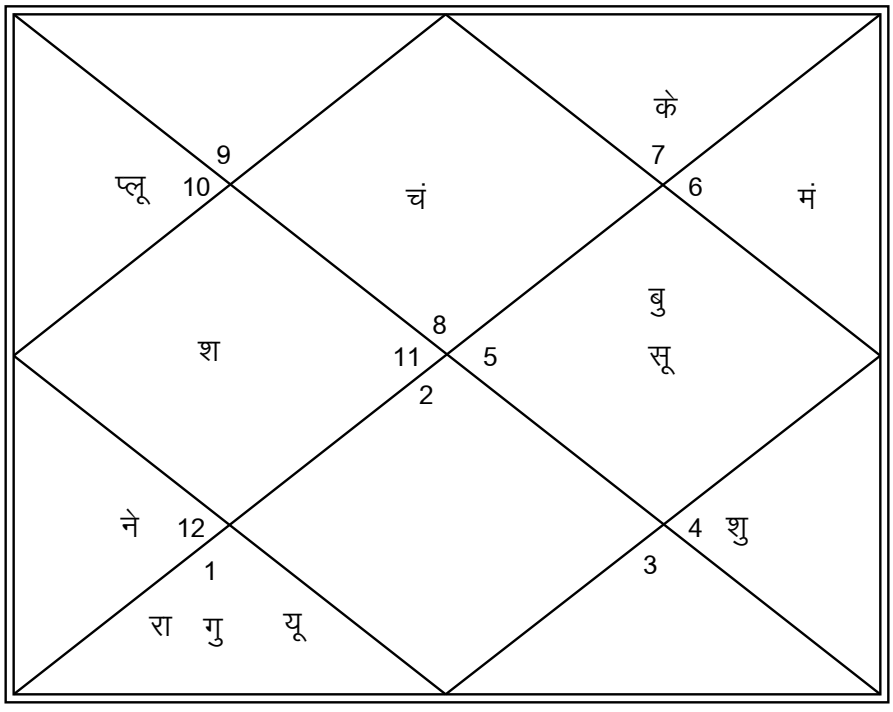

।। वर्षफल विवरण 2023 ।।

मुन्थाः 4 भाव

मुंथा के लिए यह स्थिति अनुकूल नहीं है। यह वर्ष आपके लिए परेशानियों भरा रहेगा। माता की वजह से आप तनावग्रस्त रहेंगे। अपने घनिष्ठ सहयोगियों व रिश्तेदारों से विवाद की संभावना है। पद खोने अथवा घटने की भी संभावनाएं हैं।

अगस्त 24, 2023 – अक्टूबर 24, 2023 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 9

उच्च पदस्थ लोगों से आप सम्मान प्राप्त करेंगे और उनके कृपा भाजन रहेंगे। माता पिता और गुरूजनों से संबंध अति मधुर रहेंगे। इस अवधि के दौरान आप सुदूर प्रदेशों की यात्रा करेंगे। पारिवारिक जीवन आपके लिये सुखद एवम् अनुकूल रहेगा। आप के थोड़े प्रयत्न करने पर भी आपकी आमदनी बढ जायेगी। इस अवधि के दौरान विपरीत परिस्थितियों से सही तौर पर निपटने की आपकी क्षमता का विकास होगा। अगर आपकी पदोन्नति होने ही वाली है तो जैसी चाहेंगे वैसी ही होगी। आपका दिमाग धार्मिक क्रियाकलापों एवम् जीवन संबंधी उच्च दर्शन की ओर आकृष्ट रहेगा। हर लिहाज से यह समय अच्छा है।

अक्टूबर 24, 2023 – नवम्बर 11, 2023 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 10

इस अवधि में आप बहुत क्रियाशील एवम् व्यस्त रहेंगे। व्यापार या नौकरी में सफलता प्राप्त करेंगे और अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कृपाभाजन रहेंगे। यह समय आपकी कर्मठता का समय सिद्ध होगा। व्यापार के कारण सफलदायक यात्राएं करेंगे। सब लिहाज से यह समय काफी संतोषप्रद सिद्ध होगा। इस समय में आप अपनी सारी आर्थिक समस्याओं से छुटकारा पा जायेंगे।

नवम्बर 11, 2023 – दिसम्बर 12, 2023 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 1

इस अवधि में भी मिले जुले फल मिलेंगे। कई अच्छे अवसर मिलेंगे पर आप उनका पूरा उपयोग नहीं कर पायेंगे। स्वास्थ्य के कारण परेशान रहेंगे। मित्र, परिवार और सहयोगियों के साथ बर्ताव में सर्तक रहें। यात्राएं सफलदायक नहीं होंगी इसलिये उनसे बचें। मां बाप का रूग्ण स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा।

दिसम्बर 12, 2023 – जनवरी 02, 2024 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 11

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

।। वर्षफल विवरण 2023 ।।

जनवरी 02, 2024 – फरवरी 26, 2024 दशा राहू

राहू भाव संख्या 6

इस अवधि में आप अपने उद्यमों में काफी सफल रहेंगे। काम करने के हालात में सुधार होगा। पैसा साधारण रूप से आपके पास आयेगा। सरकार और सत्ताधारी व्यक्तियों व्दारा आप का सब काम पूरा कर दिया जायेगा। अपने विरोधियों का आप निश्चित रूप से पराभव कर देंगे। इस अवधि के मध्य में एक सुखद यात्रा अवश्य करेंगे। पारिवारिक वातावरण भी अच्छा रहेगा। नफे की सौदा होने की पूरी संभावना है। अगर आपने प्रार्थना की है तो आर्थिक साधन व रूपया पैसा अवश्य प्राप्त करेंगे। छोटी मोटी बीमारियां लगी रह सकती हैं।

फरवरी 26, 2024 – अप्रैल 14, 2024 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 6

थोड़े से लाभ के लिये आपको बहुत मेहनत करनी पड़ सकती है। नौकरी के हालात बदतर होते जायेंगे। स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें परेशान करेंगी। परिवारजनों से संबंध भी इस अवधि में अच्छे नहीं रहेंगे। विरोधी प्रबल होंगे। व्यर्थ की यात्राओं से बचें। वैसे मुकदमाबाजी और न्यायालयों के मामलों के लिये यह समय अच्छा है। जीवन शक्ति और स्फूर्ति में कमी महसूस होने के कारण झगड़े और झंझटों से दूर रहने का प्रयत्न करें।

अप्रैल 14, 2024 – जून 11, 2024 दशा शनि

शनि भाव संख्या 4

आप पर ऐसी बातों के झुठे इल्जाम लगाए जा सकते हैं जिनमें आपका सहयोग नगण्य रहा हो। पारिवारिक सुख का भी अभाव रहेगा। प्रयासों में असफलता अवसाद पैदा कर देगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अगर कोई लंबी बीमारी भोग रहे हैं तो पूरे परहेज से रहें। आपके विरोधी आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। बहसों में न उलझें तो ठीक रहेगा। सांसारिक सुखों के लिहाज से यह समय अच्छा नहीं है फिर भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में लगे रहने से कुछ राहत महसूस होगी।

जून 11, 2024 – अगस्त 02, 2024 दशा बुध

बुध भाव संख्या 10

व्यापार या व्यवसाय में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार भी हो सकता है। इस अवधि के दौरान आप पूरी तरह कर्मठ रहेंगे। वरिष्ठ लोगों या सत्तावान व्यक्तियों के साथ आपके संबंधों में सुधार आयेगा। पारिवारिक माहौल संतोषप्रद रहेगा। आपको वाहन भी प्राप्त हो सकता है। विदेशों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। घर में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

अगस्त 02, 2024 – अगस्त 23, 2024 दशा केतु

केतु भाव संख्या 12

दूसरों की सही सलाह पर ध्यान न देने की आपकी चेष्टा रह सकती है। गलत और पापपूर्ण कार्यो से संलग्न रहने की संभावना है। गलत निर्णय के कारण आप चिन्ताग्रस्त रह सकते हैं। इस अवधि में सनक और उन्माद से प्रेरित होकर काम न करें व आप गहरी मुसीबत में पड़ सकते हैं। वैसे इस अवधि में आप गूढ़ विज्ञान संबंधी कार्यों में प्रवृती रह सकते हैं। इस अवधि के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा।

।। वर्षफल विवरण 2024 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	23/8/2024
23:53:18	जन्म समय	18:54:58
बुधवार	जन्म दिन	शुक्रवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	18 : 33 : 50
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 54 : 46
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 37
वृषभ	लग्न	कुंभ
शुक्र	लग्नस्वामी	शनि
मेष	राशि	मीन
मंगल	राशि स्वामी	गुरू
भरणी	नक्षत्र	रेवती
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	बुध
वृद्धि	योग	गण्ड
वणिज	करण	कौलव
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–12–03
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

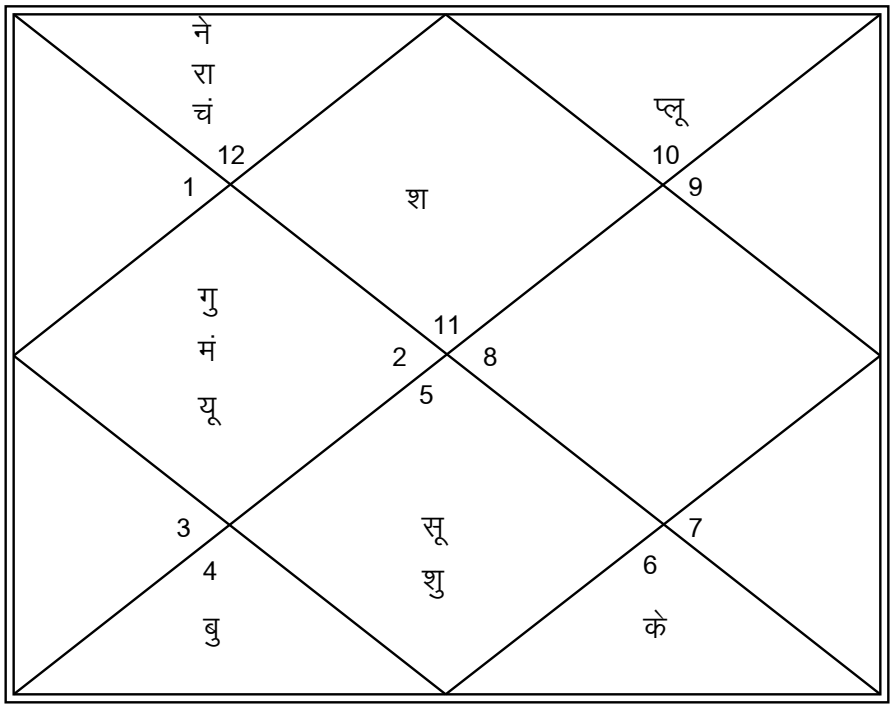

।। वर्षफल विवरण 2024 ।।

मुन्थाः 2 भाव

आकस्मिक धन प्राप्ति का योग है। यह धन लॉटरी, शेयर में सट्टेबाजी आदि माध्यमों से प्राप्त हो सकता है। विभिन्न व्यवसायिक सौदों से आप अधिक धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। पुराने घर की खरीद बिी से भी आपको धन मिलेगा। मान सम्मान की प्राप्ति होगी, बेहतर भोजन का आनंद लेंगे और प्रशासनिक सहयोग प्राप्त करेंगे।

अगस्त 23, 2024 – सितम्बर 11, 2024 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 7

यह एक कठिन काल सिद्ध होगा। कड़ी मेहनत का अच्छा फल नहीं मिलेगा। व्यवसायिक या व्यापार के साथी नुकसान करेंगे और आपके लिये समस्यायें पैदा कर देंगे। घरेलु झंझटों में अपने मिजाज पर काबू रखें अन्यथा अप्रीतिकर स्थितियां झेलनी पड़ सकतीं हैं। आप भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त और बीमार रह सकते हैं।

सितम्बर 11, 2024 – अक्टूबर 11, 2024 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 2

आप बेहद प्रसन्न रहेंगे। इस अवधि में आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। परिवार में मेल–जोल रहेगा और परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार रहेगा। मित्र और सहयोगी काफी सहायक सिद्ध होंगे। यात्राएं शुभ सिद्ध होंगी। इस समय का जितना सदुपयोग करेंगे उतना ही अच्छा रहेगा।

अक्टूबर 11, 2024 – नवम्बर 01, 2024 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 4

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और चावों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पती, वाहन सुख एवम् स्त्रीयों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिये व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिये भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है।

नवम्बर 01, 2024 – दिसम्बर 26, 2024 दशा राहू

राहू भाव संख्या 2

रोजमर्रा के जीवन में पैसा वसूल करने में आपको परेशानी हो सकती है। किसी भी उघम की प्रायोजना की पूरी जांच परख कर के ही पूंजी निवेश की सोचें। घर का वातावरण भी तनावपूर्ण रहेगा। परिवारजनों से कभी कभी मतभेद रहेगा।इस अवधि में आंख की पीड़ा भी आप भोग सकते हैं। साधारण रूप से स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। घर के मामलों में एक असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2024 ।।

दिसम्बर 26, 2024 – फरवरी 13, 2025 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 4

इस अवधि में जीवन व्यापन सुविधा सम्पन्न रहेगा। पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। सम्पती पर धन व्यय होगा। घर की वस्तुओं चल अचल सम्पती आदि पर व्यय होगा तथा व्यापार/व्यवसाय के विकास पर भी धन व्यय करेंगे। अचानक व अयाचित लाभ प्राप्त करेंगे। बड़ें अफसरों और शक्तिवान व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। आपकी ख्याति और सम्मान में इजाफा होगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी की पदोन्नति की संभावना है। धर्म के प्रति आपका झुकाव रहेगा और पवित्र स्थलों की यात्रा करेंगे। इस पूरी अवधि में दिमाग सान्कूल रहेगा और सुख भोगेंगे।

फरवरी 13, 2025 – अप्रैल 11, 2025 दशा शनि

शनि भाव संख्या 1

आपके हर काम में अड़चनें आएगी और देरी होगी। कभी कभी असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगें। काम का बोझ बहुत रहेगा और फालतू के कामों में भी आप फंसे रह सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखद नहीं रहेगा। रिश्तेदारों के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। भागीदारों या सहयोगियों की लापरवाही के कारण आपको धक्का पहुंच सकता है। वैसे इस अवधि का आखिरी हिस्सा आपको कुछ राहत देगा। आशावादी होना निराशावादी होने से सदैव अच्छा है।

अप्रैल 11, 2025 – जून 02, 2025 दशा बुध

बुध भाव संख्या 6

खर्च नियंत्रण से बाहर हो जाएंगे। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी रहेंगी। विरोधी प्रतिष्ठा बिगाड़ने की चेष्टा करेंगे। वैसे नौकरी के हालात में सुधार होगा लेकिन काम का बोझ बढ़ा चढ़ा रहेगा। इसके अलावा व्यर्थ के कामों में भी आप उलझे रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें और कटु शब्द न बोलें तथा दूसरों की आलोचना करने की प्रवृति को भी कम करें। पारिवारिक जीवन से तनाव मिलेगा। जहां तक संभव हो यात्रा से बचें।

जून 02, 2025 – जून 23, 2025 दशा केतु

केतु भाव संख्या 8

इस अवधि में अचानक लाभ होने की संभावना है। अगर वसीयत प्राप्त करने की संभावना है या आप उसको प्राप्त करने के लिये इच्छुक है तो आप उसे प्राप्त कर सकते हैं। आपका मन धार्मिक क्रियाकलापों की ओर झुका रहेगा। कुछ अतीन्द्रिय अनुभव भी प्राप्त कर सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौहार्दपूर्ण रहेगा। अचानक यात्राएं सफलदायक सिद्ध होंगी। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सम्मान में इजाफा होगा। छोटी मोटी बीमारियां मानसिक शांति भंग कर सकती हैं। आप तीर्थाटन पर जा सकते हैं। कुल मिलाकर सुखी रहेंगे।

जून 23, 2025 – अगस्त 23, 2025 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 7

इस अवधि में आपका सौजन्यता पूर्ण व्यवहार रहेगा और आप मनमुटाव से बचेंगे। एक आनन्द दायक यात्रा की प्रबल संभावना है। स्त्री वर्ग का भी साथ रहेगा। संगति व अन्य ललित कलाओं सुगध एवम् सौन्दर्यपूर्ण वस्तुओं की ओर आपका झुकाव रहेगा। अपने व्यवसाय और व्यापार में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अपने प्रयत्नों से आय वृव्दि प्राप्त करेंगे। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। छोटी मोटी बीमारियां हो सकती हैं। आपका मिलनसार स्वभाव होगा और कई लोगों के सम्पर्क में आयेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2025 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2025
23:53:18	जन्म समय	1:4:8
बुधवार	जन्म दिन	शनिवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	00 : 43 : 00
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 55 : 10
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 51 : 49
वृषभ	लग्न	मिथुन
शुक्र	लग्नस्वामी	बुध
मेष	राशि	सिंह
मंगल	राशि स्वामी	सूर्य
भरणी	नक्षत्र	पू0फाल्गुनी
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
वृद्धि	योग	वि
वणिज	करण	भाव
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–12–53
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

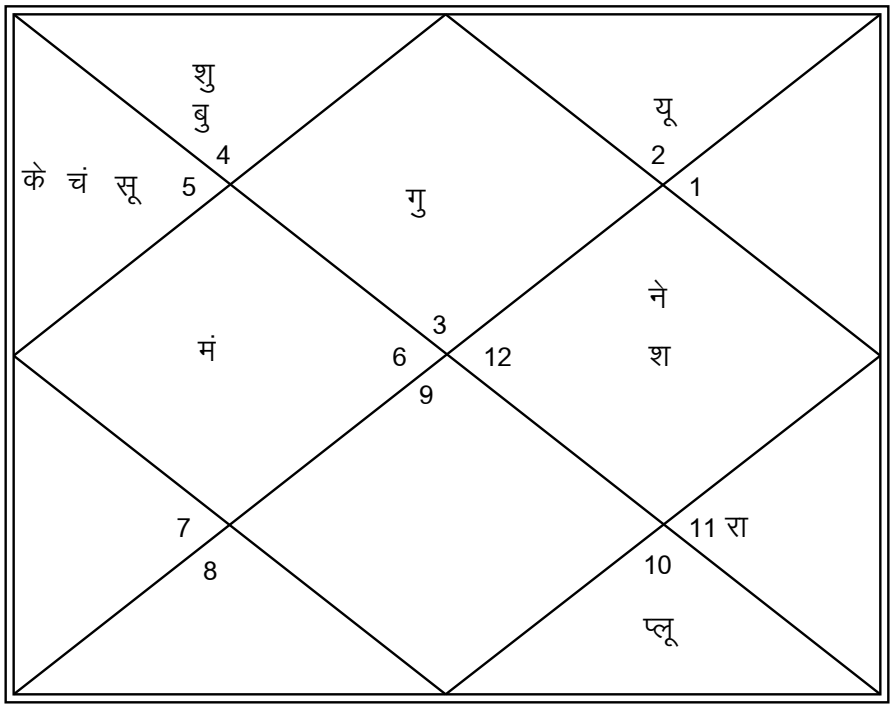

|| वर्षफल विवरण 2025 ||

मुन्थाः 11 भाव

आप बेहतर स्वास्थ्य, लोकप्रियता, मित्रता व सुखद पारिवारिक जीवन का आनंद लेंगे। आपको उच्च प्रशासनिक अथवा राजकीय पदों से सहयोग मिलेगा। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी और आपकी समस्याओं का अंत होगा।

अगस्त 24, 2025 – सितम्बर 23, 2025 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 3

इस अवधि में आपका आत्म विश्वास बढ़ा चढ़ा रहेगा। भाई बहिन भी खुशहाल रहेंगे। मां बाप से संबंध बहुत अच्छे रहेंगे। अगर नौकरी करते हैं तो पदोन्नति की संभावना है। स्थान परिवर्तन या व्यवसाय में बदलाव की भी संभावना है।

सितम्बर 23, 2025 – अक्टूबर 14, 2025 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 4

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और चावों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पती, वाहन सुख एवम् स्त्रीयों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिये व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिये भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है।

अक्टूबर 14, 2025 – दिसम्बर 08, 2025 दशा राहू

राहू भाव संख्या 9

इस अवधि में आपको मिले जुले फल मिलेंगे। वैसे आप अपने व्यवसाय/व्यापार में अच्छा काम करेंगे। आप अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होंगे और एक बार हाथ में लेने के बाद काम छोड़ेंगे नहीं। आपका निश्चय दृढ़ रहेगा। लेकिन गुरूजनों और माता पिता से संबंध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे। कभी कभी आप तर्क बुद्धि से इतना काम लेंगे कि मामले की तह तक ही न पहुंच पायेंगे। आपके व्यक्तित्व में अहंकार का प्रवेश हो जायेगा। आपके इस बर्ताव से आप जनप्रिय नहीं रह पायेंगे। अपनी अर्न्तदृष्टि से अपने आप को जांचने परखने का प्रयत्न करें।

दिसम्बर 08, 2025 – जनवरी 26, 2026 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 1

आप शुभ एवम श्रेष्ठ कृत्यों से सम्बदीत रहेंगे। इस दौरान आप काफी प्रसन्न रहेंगे और परिवार में कोई श्रेष्ठ संस्कार भी सम्पन्न होगा। आपकी आमदनी बढेगी तथा घ ६५चे सरकारी अफसरों से आपके संबंध भी सुधरेंगे। अपनी योग्यता के कारण आप विपरीत परिस्थितियों का भी भली प्रकार सामना कर लेंगे। पारिवारिक सुख सुनिश्चित रहेगा। दर्शन एवम् तत्व मीमांसा में आपकी विशेष रूचि रहेगी। इस अवधि मे दिमाग पूरी तरह चैतन्य और सानकूल रहेगा।

।। वर्षफल विवरण 2025 ।।

जनवरी 26, 2026 – मार्च 24, 2026 दशा शनि

शनि भाव संख्या 10

अपना मनचाहा परिणाम पाने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। वैसे मोटे तौर पर परिणाम आशाजनक नहीं निकलेंगे लेकिन काम विलम्ब से पूरा होगा। इस अवधि में किसी काम में बड़ा परिवर्तन नहीं करना चाहिए। धैर्य की हर क्रिया में बहुत आवश्यकता रहेगी। साथी का स्वास्थ्य आपको मानसिक रूप से चिन्तित रख सकता है। व्यापार नौकरी के सिलसिले में किए गए भ्रमण लाभकारी सिद्ध होंगे। जमीन की खरीद और किसी अच्छे समय करने के लिए मुल्तवी रखिए।

मार्च 24, 2026 – मई 15, 2026 दशा बुध

बुध भाव संख्या 2

आर्थिक रूप से यह उनम समय रहेगा। नफा के सौदा से काफी लाभ होगा। परिस्थितियों और योजनाओं की गहरी समझ के कारण आप दूसरों को आसानी से कोई बात मनवा सकेंगे। इस अवधि में आप काफी प्रसिद्ध रहेंगे। परिवार के सदस्यों का आपके प्रति बहुत अच्छा बर्ताव रहेगा। पुराने रीण इत्यादि की वसूली भी हो जायेगी। इस काल में भ्रमण से काफी लाभ मिलेगा। आपकी प्रकृति दार्शनिक और गम्भीर हो जायेगी। गूढ़ विज्ञान में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा हो सकता है आपको परामनोवैानिक अनुभव भी प्राप्त हो।

मई 15, 2026 – जून 05, 2026 दशा केतु

केतु भाव संख्या 3

आप अपने काम बुद्धिमानी से नहीं निपटायेंगे। वैसे इस पूरी अवधि में आप आशावादी रहेंगे। संचार द्वारा प्राप्त समाचार से लाभावत होंगे। अचानक यात्रा करने से भी अच्छे फल निकलेंगे। आमदनी में इजाफा होगा। पारिवारिक जीवन पर राहतकारी प्रभाव पड़ेगा। अगर पदोन्नति होने वाली है तो जैसी आप चाहेंगे वैसी ही होगी। मित्र मंडली बढ़ेगी। दिमाग का अध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। वास्तव में यह आपके लिये एक सौभाग्यशाली समय है।

जून 05, 2026 – अगस्त 05, 2026 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 2

परिवारजनों के साथ आप अच्छा निबाह कर सकेंगे। आप परिस्थितियों का बड़ी चतुरता से सामना करेंगे। आय में वृद्धि होनी चाहिए। संदेहास्पद साधनों या गलत तरीकों से भी आपके पास पैसा आयेगा। परिवार में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा। स्त्री वर्ग का साथ आपको रूचिकर लगेगा। महंगे और स्वादिष्ट भोजन के लिये आपका स्वाद जागृत होगा। घर की चीजों के लिये आप पैसा खर्च कर सकते हैं। घर पर सब लोग इकट्ठे होंगे।

अगस्त 05, 2026 – अगस्त 24, 2026 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 3

घरेलु जीवन में आप सुखी रहेंगे और बहु प्रतीक्षित इच्छाओं की संपूर्ति होगी। इस अवधि में आप बहुत भ्रमण करेंगे। छोटी यात्राएं भाग्यशाली सिद्ध होंगी और सुखद रहेंगी। धन लाभ के समाचार प्राप्त करेंगे। पारिवारिक मित्रों और रिश्तेदारों से सामाजिक संबंध और अच्छे होंगे। इस काल में स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

।। वर्षफल विवरण 2026 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2026
23:53:18	जन्म समय	7:13:18
बुधवार	जन्म दिन	सोमवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	06 : 52 : 10
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 55 : 03
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 04
वृषभ	लग्न	सिंह
शुक्र	लग्नस्वामी	सूर्य
मेष	राशि	धनु
मंगल	राशि स्वामी	गुरू
भरणी	नक्षत्र	पूर्वाषाढा
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
वृद्धि	योग	आयुष्मान
वणिज	करण	भाव
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–13–43
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

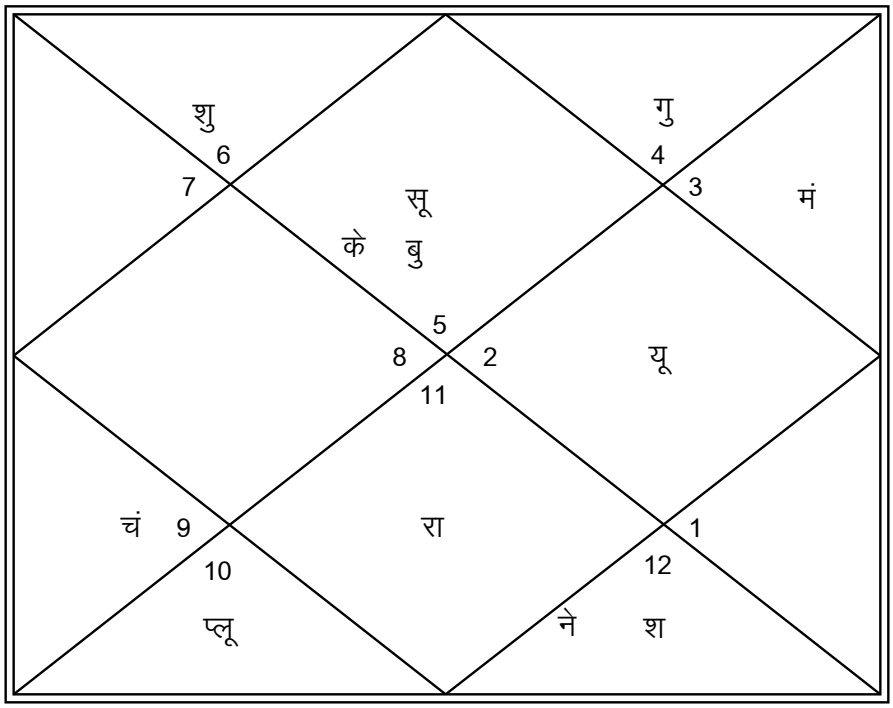

।। वर्षफल विवरण 2026 ।।

मुन्थाः 10 भाव

आपको कॅरिअर में बेहतर अवसर मिलेगे। इसके अलावा जमीन व वाहन की प्राप्ति होगी। आराम की वस्तुओं का उपभोग करेंगे। उच्च पदों से सहयोग मिलेगा और आपके पद व मान में बढोत्तरी होगी। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी।

अगस्त 24, 2026 – सितम्बर 14, 2026 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 11

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

सितम्बर 14, 2026 – नवम्बर 08, 2026 दशा राहू

राहू भाव संख्या 7

इस अवधि में आपके लाख चाहने के बावजूद भागीदारों और सहयोगियों से आपके संबंध मधुर नहीं रह पायेंगे। नित्य चर्चा में भी व्यवधान उपस्थित होंगे। पारिवारिक सदस्यों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। आपके मुकदमाबाजी और कानूनी पचड़ों में फंसने की पूरी संभावना है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें क्योंकि आपके मित्रगण जरूरी अवसर पर आपको नीचा दिखायेंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। फूड पाइजनिंग का खतरा हो सकता है। जहां तक संभव हो, यात्राओं से बचें।

नवम्बर 08, 2026 – दिसम्बर 27, 2026 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 12

आपमें किसी के प्रति लगाव नहीं होगा और लोग आपके प्रति वैमनस्य का भाव रखेंगे। असुरक्षा की भावना से ग्रसित रहेंगे। फालतू के कामों में आप अपना समय और पैसा बर्बाद करेंगे। आपको दूसरों के लिये काम करना पड़ सकता है। खर्चे बहुत होंगे। विरोधी आपको तनावग्रस्त रखेंगे। जहां तक संभव हो यात्राओं से आप बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें नहीं तो समस्यायें उठ खड़ी होंगी। परिवारजनों के बर्ताव मे भी काफी फर्क रहेगा। यह अच्छा रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

दिसम्बर 27, 2026 – फरवरी 22, 2027 दशा शनि

शनि भाव संख्या 8

कोई महत्वपूर्ण चीज खोने का खतरा बना रहेगा। वरिष्ठ जनों या सत्ताधारी अफसरों से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। लेन देन के व्यापार में हानि होने की भी संभावना है। आपके मित्र या सहयोगी अपना वचन नहीं निभाएंगें। परिवारजनों के व्यवहार में भी फर्क आ जाएगा। मानसिक वेदना की स्थिति आपके व्यवहार से परिलक्षित होती रहेगी। वैसे इस अवधि में गूढ मान या परामनोविाान आदि क्षेत्रों स`कुछ मदद मिल सकती है। अच्छा यही होगा कि अपनी योग्यता और प्रतिभा पर ही निर्भर करें। अगर वसीयत प्राप्ति के इच्छुक है तो वह अचानक प्राप्त होकर आपको चमत्कृत कर देगी। किसी की मौत की बुरी खबर मिल सकती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

।। वर्षफल विवरण 2026 ।।

फरवरी 22, 2027 – अप्रैल 15, 2027 दशा बुध

बुध भाव संख्या 1

इस अवधि में आप अति सुखी रहेंगे। अपनी प्रतिभा योग्यता और निपुणता के बल पर अच्छे परिणाम प्राप्त करेंगे। महत्वपूर्ण विद्वानों के सम्पर्क में आयेंगे। आपका सम्मान होगा तथा ख्याति बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन संतोषप्रद रहेगा। अपनी महत्वाकांक्षाएं प्राप्त करने के लिये आप कड़ा प्रयत्न करेंगे। साधारण तौर पर आप सफल व्यक्ति समझे जायेंगे। यद्यपि काम का बोझ बहुत रहेगा और थकान होगी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

अप्रैल 15, 2027 – मई 06, 2027 दशा केतु

केतु भाव संख्या 1

इस अवधि में व्यवहारिक रहने का प्रयत्न करें। वस्तुतः इस दौरान आपकी व्यर्थ के कामों में फंसे रहने की चेष्टा रहेगी। इन सब बातों के कारण आप व्यर्थ में ही परेशान रहेंगे। अधिक आत्मविश्वास आपको आपदग्रस्त कर सकता है। पैसा खोने का भी खतरा है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें और अपनी समस्याओं के समाधान के लिये परिवार के सहारे/मदद पर अधिक निर्भर न रहें। मित्र व हितैषी अपना वचन नहीं निभायेंगे। यात्रा से जितना बचें उतना अच्छा है। विरोधी प्रबल रहेंगे। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा इसलिये उसका ध्यान रखें।

मई 06, 2027 – जुलाई 06, 2027 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 2

परिवारजनों के साथ आप अच्छा निबाह कर सकेंगे। आप परिस्थितियों का बड़ी चतुरता से सामना करेंगे। आय में वृद्धि होनी चाहिए। संदेहास्पद साधनों या गलत तरीकों से भी आपके पास पैसा आयेगा। परिवार में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा। स्त्री वर्ग का साथ आपको रूचिकर लगेगा। महंगे और स्वादिष्ट भोजन के लिये आपका स्वाद जागृत होगा। घर की चीजों के लिये आप पैसा खर्च कर सकते हैं। घर पर सब लोग इकट्ठे होंगे।

जुलाई 06, 2027 – जुलाई 24, 2027 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 1

इस अवधि में जीवन के प्रति आपका धनात्मक दृष्टिकोण रहेगा और आप में जरूरत से अधिक आत्मविश्वास रहेगा। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार में आप कोई महत्वपूर्ण पद संभालेंगे या सत्ता प्राप्त करेंगे। छोटी अवधि की यात्राएं करेंगे जो आपकी कड़ी मेहनत के कारण सफलदायक होंगी। सामाजिक संस्थानों को आप खुलकर दान देंगे। स्वास्थ्य बुरा रह सकता है तथा परिवार में भी बीमारियां फैल सकती हैं।

जुलाई 24, 2027 – अगस्त 24, 2027 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 5

यह वह समय है जब आपकी योजनाएं सफलीभूत होंगी। अपनी सृजनात्मक बुद्धि के कारण आप सफल होंगे। प्रणय एवम् प्रेम संबंधों के लिहाज से भी यह अच्छा समय है। आपकी सारी जरूरतें पूर्ण करने के लिये मित्र तत्पर रहेंगे। आपके लेखन की लोग सराहना करेंगे।

।। वर्षफल विवरण 2027 ।।

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
23/8/1978	जन्म दिनांक	24/8/2027
23:53:18	जन्म समय	13:22:28
बुधवार	जन्म दिन	मंगलवार
Delhi	जन्म स्थान	Delhi
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 21 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 21 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 32 : 10	स्थानीय औसत समय	13 : 01 : 19
05 : 54 : 14	सूर्योदय	05 : 54 : 55
18 : 53 : 28	सूर्यास्त	18 : 52 : 20
वृषभ	लग्न	वृश्चिक
शुक्र	लग्नस्वामी	मंगल
मेष	राशि	मेष
मंगल	राशि स्वामी	मंगल
भरणी	नक्षत्र	कृतिका
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
वृद्धि	योग	ध्रुव
वणिज	करण	भाव
कन्या	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कन्या
023–33–30	अयनांश	024–14–33
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली

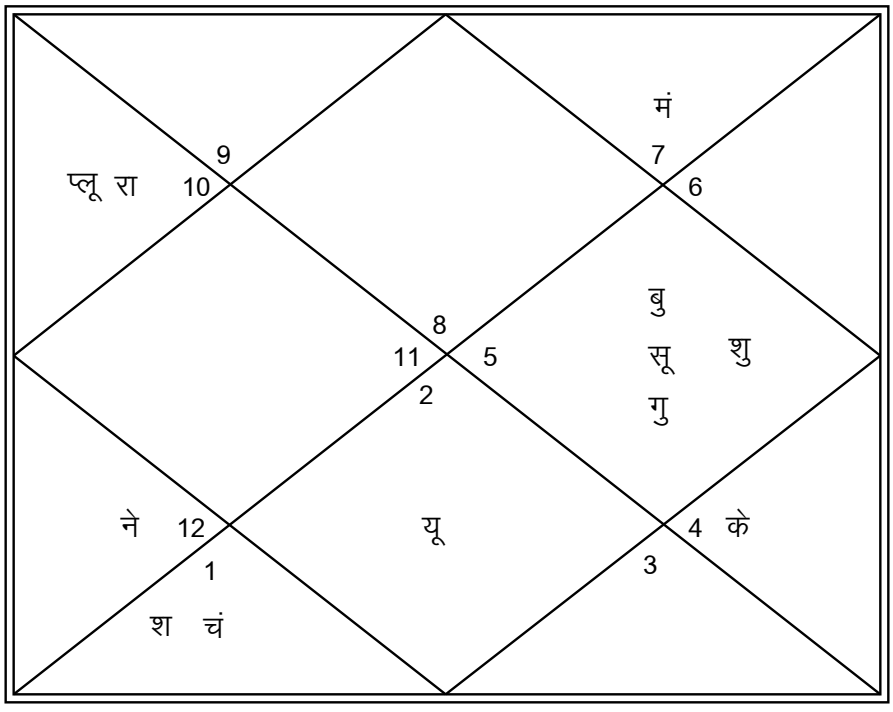

।। वर्षफल विवरण 2027 ।।

मुन्थाः 8 भाव

आपके लिए यह कठिन समय है। मृत्यु रूपी राक्षस आपके निकट मंडराता रहेगा। कई बीमारियॉ हो सकती है। निकट रिश्तेदार की आकस्मिक मृत्यु भी संभव है। दुर्घटना का योग है। धन की, आत्मविश्वास की हानि होगी। मानसिक तनाव रहेगा। आपका स्थानांतरण प्रियजनों से दूर किसी अनजानी सी जगह हो सकता है।

अगस्त 24, 2027 – अक्टूबर 18, 2027 दशा राहू

राहू भाव संख्या 3

अपनी उधम शक्ति और महती घ र्जा के द्वारा आप किसी भी काम को बहुत अच्छे तरीके से पूरा करने में सक्षम रहेंगे। आपके उद्देश्य की दृढ़ता सराही जायेगी। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण विपरीत परिस्थिति में भी आपको मति भ्रम नहीं होगा और सही काम करेंगे। आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा और आपकी प्रतिष्ठा में भी बढोत्तरी होगी। काफी भ्रमण करना पड़ेगा। भाई बहिनों से संबंध अच्छे रहेंगे। संचार माध्यम व्दारा आपको उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा। व्यापार और लेन देन के सौदों की बहुत अच्छे रहने की संभावना है। अगर नौकरी में हैं तो शीघ्र पदोन्नति होनी चाहिये।

अक्टूबर 18, 2027 – दिसम्बर 05, 2027 दशा गुरू

गुरू भाव संख्या 10

व्यापार नौकरी या धन्धे में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार होगा और पद बढ़ेगा। इस अवधि में वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। व्यापार और नौकरी के सिलसिले में आप काफी भ्रमण करेंगे। शत्रु प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे पर उसमें कामयाब नहीं होंगे। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा।

दिसम्बर 05, 2027 – फरवरी 01, 2028 दशा शनि

शनि भाव संख्या 6

आप अपने कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा काम करेंगे। नौकरी या व्यवसाय की परिस्थितियों में काफी सुधार आएगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। रोजमर्रा के जीवन में आप अत्यधिक स्फूर्तिवान महसूस करेंगे। विरोधियों की आपके सामने पड़ने की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। आर्थिक रूप से यह बहुत अच्छा समय सिद्ध होगा। छोटी यात्राएं उपयोगी रहेंगी। परिवार का माहौल पूर्ण संतोषप्रद रहेगा। इस अवधि के मध्य में छोटी मोटी बीमारी होने की संभावना है जिस पर आपको थोड़ा बहुत ध्यान रखने की आवश्यकता है।

फरवरी 01, 2028 – मार्च 24, 2028 दशा बुध

बुध भाव संख्या 10

व्यापार या व्यवसाय में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार भी हो सकता है। इस अवधि के दौरान आप पूरी तरह कर्मठ रहेंगे। वरिष्ठ लोगों या सत्तावान व्यक्तियों के साथ आपके संबंधों में सुधार आयेगा। पारिवारिक माहौल संतोषप्रद रहेगा। आपको वाहन भी प्राप्त हो सकता है। विदेशों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। घर में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

।। वर्षफल विवरण 2027 ।।

मार्च 24, 2028 – अप्रैल 14, 2028 दशा केतु

केतु भाव संख्या 9

किसी संस्थान के प्रमुख व्यक्ति के आप सम्पर्क में आयेंगे। औरों के प्रति जनकल्याण की भावना से काम करने की प्रवृति होगी। किसी नयी सृजनात्मक उपलब्धि के कारण आपको मान्यता मिल सकती है। वैसे इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा बढेंगी और सम्मान में इजाफा होगा। आप अति सम्मानीय व्यक्ति समझे जायेंगे। यात्रा का बहुत महत्व होगा। आपकी धर्म एवम् अध्यात्म की ओर झुकने की प्रवृति में भावनात्मक गहराई का समावेश होगा। पारिवारिक जीवन हर्षोल्लास से सम्पन्न रहेगा। परिवार में कोई मंगल कृत्य होगा। इस अवधि का पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करें।

अप्रैल 14, 2028 – जून 14, 2028 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 10

अपने कार्य क्षेत्र में आप महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। प्रतिष्ठा और सम्मान में प्रचुर वृद्धि होगी। इस अवधि में विपरीत परिस्थितियों से भी आप कुशलता से निपट सकेंगे। व्यापारी सहयोगियों या व्यवसायकि लोगों ग्राहकों के साथ आपके संबंध दिन व रात सुधरेंगे। समय के साथ साथ आप संग्रहशील होते जायेंगे और विलास सामग्री पर भी व्यय करेंगे। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। व्यापारिक यात्राओं की संभावना है।

जून 14, 2028 – जुलाई 02, 2028 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 10

इस अवधि में आप बहुत कियाशील एवम् व्यस्त रहेंगे। व्यापार या नौकरी में सफलता प्राप्त करेंगे और अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कृपाभाजन रहेंगे। यह समय आपकी कर्मठता का समय सिद्ध होगा। व्यापार के कारण सफलदायक यात्राएं करेंगे। सब लिहाज से यह समय काफी संतोषप्रद सिद्ध होगा। इस समय में आप अपनी सारी आर्थिक समस्याओं से छुटकारा पा जायेंगे।

जुलाई 02, 2028 – अगस्त 02, 2028 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 6

इस अवधि में किये उद्यमों में सफलता नहीं मिलेगी। शत्रु आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। नौकरी के हालात भी बदतर होते जायेंगे। स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें भी मानसिक शांति भंग करेगी। जल्दबाजी या हड़बड़ी से काम करने की प्रवृति पर नियंत्रण रखें। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी के कारण चिंतित रह सकते हैं।

अगस्त 02, 2028 – अगस्त 23, 2028 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 12

इस अवधि में आपको कई प्रतिकूल परिस्थितियों और परेशानियों का सामना करना पड़ेगा और इस कारण दुख उठायेंगे। कुछ दुख इसलिये भी बढेंगे कि आप झुकना नहीं जानते और अपने घमण्ड के कारण परिस्थितियों को और खराब करेंगे। स्वास्थ्य से भी परेशान रहेंगे। खर्चा बढ़ता ही जायेगा। यद्यपि साथी के स्वास्थ्य में सुधार के लक्षण दिखाई पड़ेंगे। परन्तु पूर्ण सुधार में समय लगेगा। आपकी मानसिक शांति भंग रहेगी।

।। शोडषवर्ग तालिका ।।

क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	2	5	1	6	4	4	6	5	6	12	7	8	6
2	भ्वतं	5	5	4	5	5	4	5	5	4	4	4	5	5
3	द्रेष्काण	6	5	5	10	12	4	2	5	6	12	11	4	2
4	चतुर्थांश	8	5	7	12	1	4	3	8	6	12	1	2	12
5	सप्तमांश	11	6	4	4	4	10	5	7	0	6	11	6	4
6	नवमांश	2	3	5	3	12	5	4	3	11	5	12	10	4
7	दशमांश	3	7	6	8	9	1	9	8	3	9	1	11	9
8	द्वादशांश	8	7	7	1	3	5	2	8	7	1	2	4	2
9	षोडशांश	1	8	9	6	4	3	9	10	11	11	11	4	8
10	विंशांश	7	1	11	5	7	3	8	3	8	8	1	11	7
11	चतुर्विंशांश	4	10	6	6	2	7	10	12	7	7	8	9	9
12	सप्तविंशाश	5	7	3	8	11	1	12	9	8	2	12	5	11
13	त्रिंशांश	12	11	9	12	8	2	10	11	2	2	3	10	10
14	खवेदांश	3	9	10	7	8	12	1	2	1	1	2	12	11
15	अक्षवेदांश	4	3	1	1	7	6	7	7	3	3	5	1	4
16	षष्टयंश	9	6	9	7	12	11	3	12	3	9	9	3	12

शोडषवर्ग भाव तालिका

क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	1	4	12	5	3	3	5	4	5	11	6	7	5
2	भ्वतं	1	1	12	1	1	12	1	1	12	12	12	1	1
3	द्रेष्काण	1	12	12	5	7	11	9	12	1	7	6	11	9
4	चतुर्थांश	1	10	12	5	6	9	8	1	11	5	6	7	5
5	सप्तमांश	1	8	6	6	6	12	7	9	2	8	1	8	6
6	नवमांश	1	2	4	2	11	4	3	2	10	4	11	9	3
7	दशमांश	1	5	4	6	7	11	7	6	1	7	11	9	7
8	द्वादशांश	1	12	12	6	8	10	7	1	12	6	7	9	7
9	षोडशांश	1	8	9	6	4	3	9	10	11	11	11	4	8
10	विंशांश	1	7	5	11	1	9	2	9	2	2	7	5	1
11	चतुर्विंशांश	1	7	3	3	11	4	7	9	4	4	5	6	6
12	सप्तविंशाश	1	3	11	4	7	9	8	5	4	10	8	1	7
13	त्रिंशांश	1	12	10	1	9	3	11	12	3	3	4	11	11
14	खवेदांश	1	7	8	5	6	10	11	12	11	11	12	10	9
15	अक्षवेदांश	1	12	10	10	4	3	4	4	12	12	2	10	1
16	षष्टयंश	1	10	1	11	4	3	7	4	7	1	1	7	4

।। शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ।।

लग्न चक्र

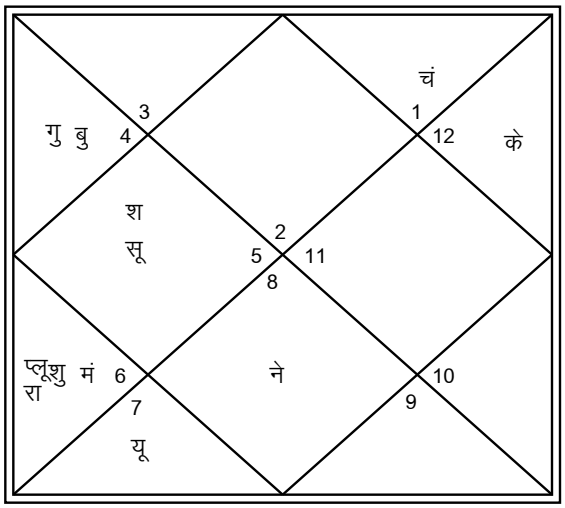

होरा–धन–सम्पत्ति

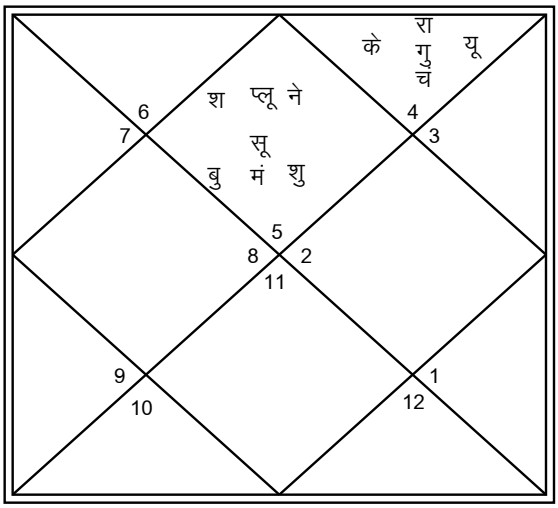

द्रेष्काण–भाई–बहन

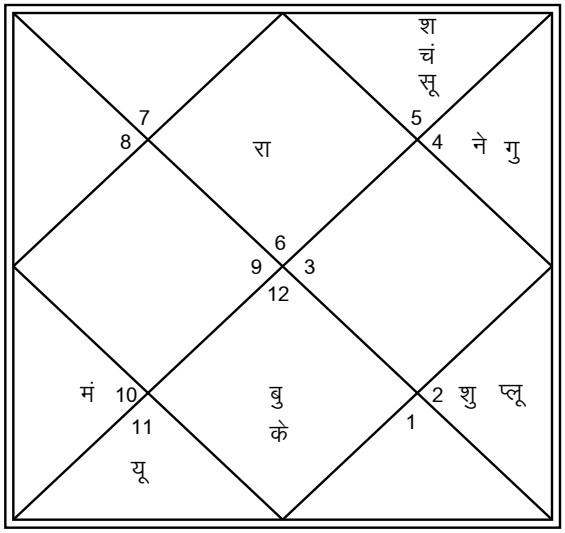

चतुर्थांश–भाग्य

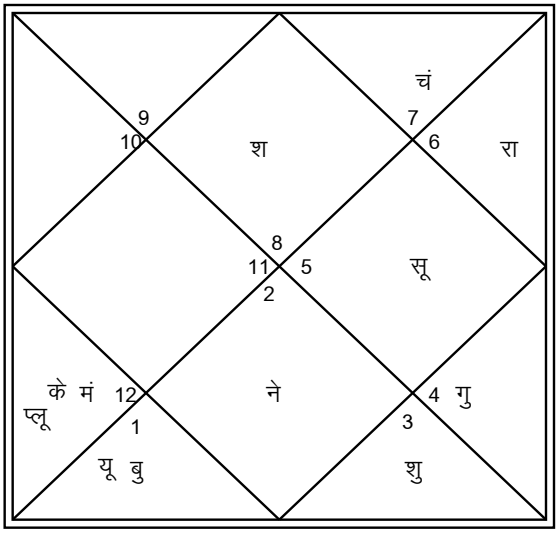

सप्तमांश–बच्चे

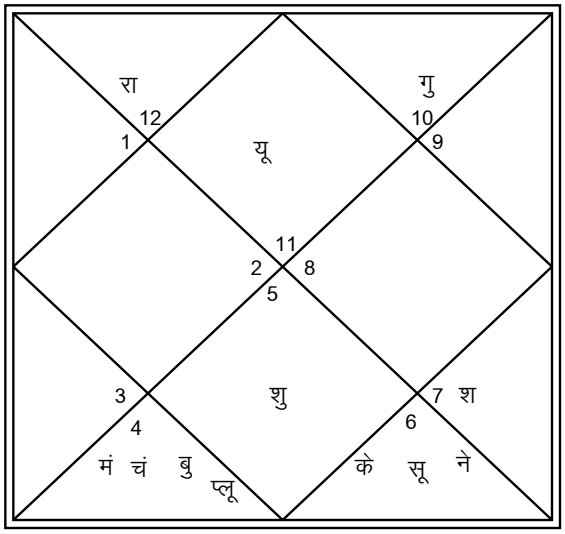

नवमांश–पति–पत्नी

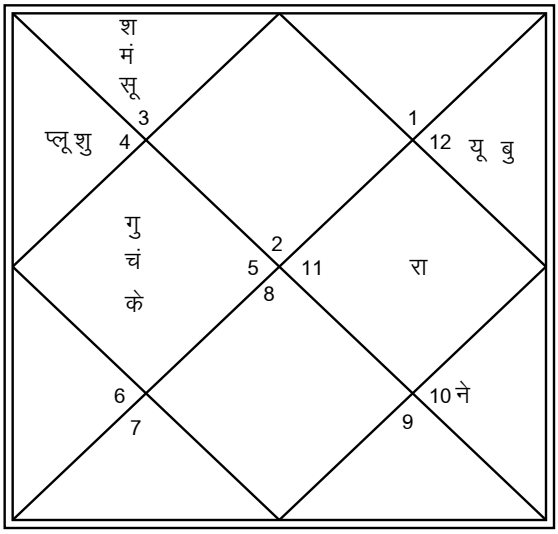

।। शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ।।

दशमांश–व्यवसाय

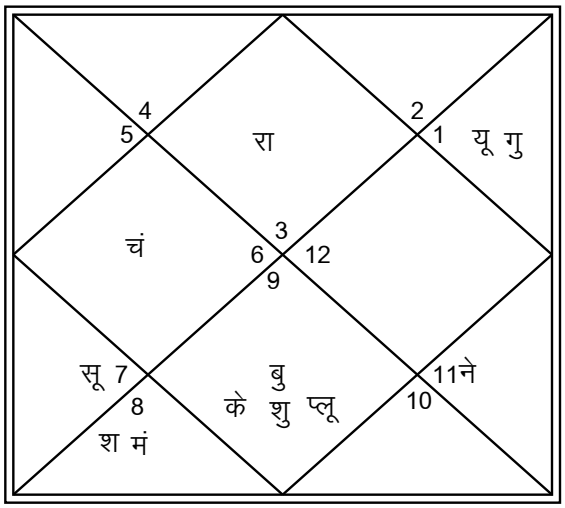

द्वादशांश–माता–पिता

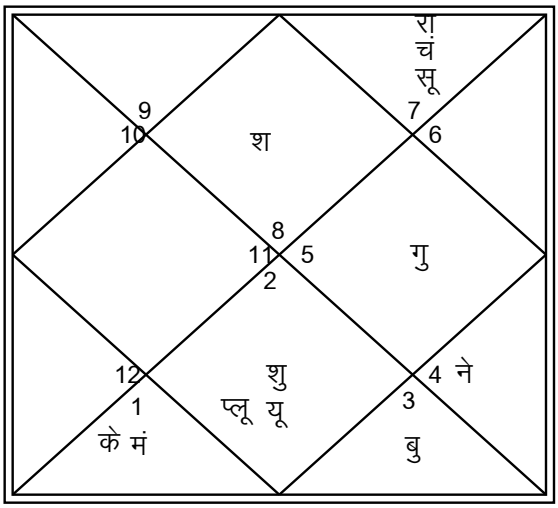

षोडशांश–वाहन

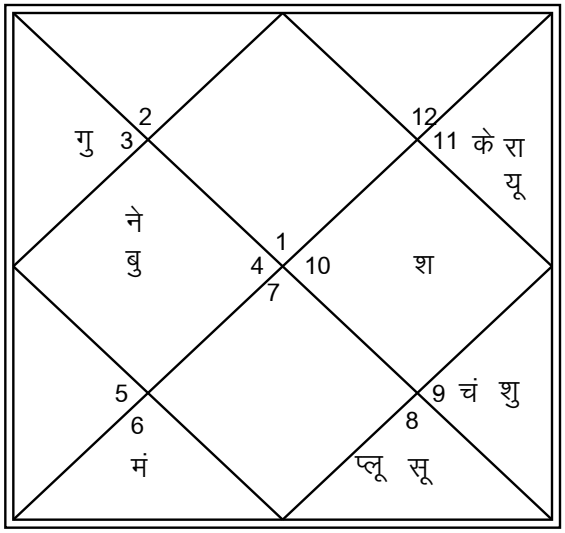

विंशांश–धार्मिक रुचि

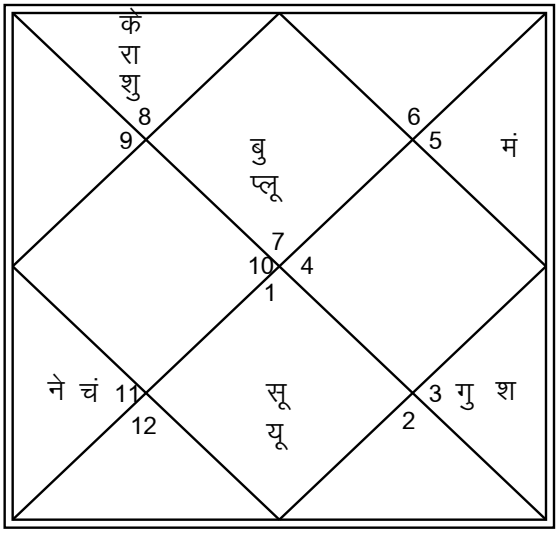

सप्तविंशाश–बल

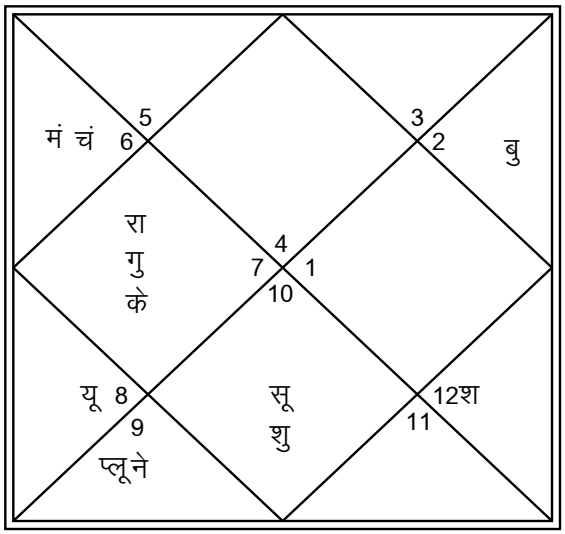

चतुर्विंशांश–शिक्षा

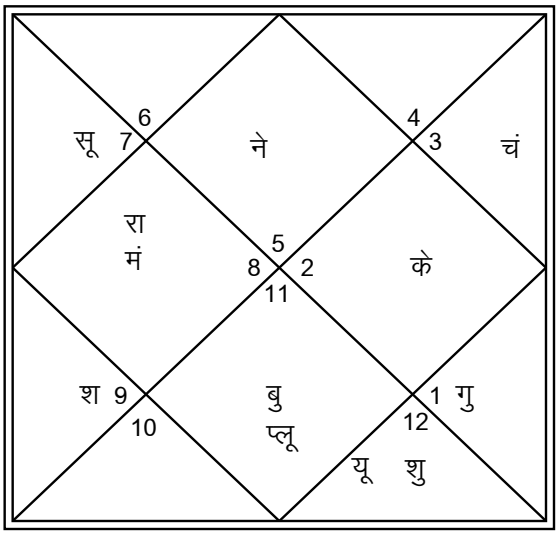

।। शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ।।

त्रिंशांश–दुर्भाग्य

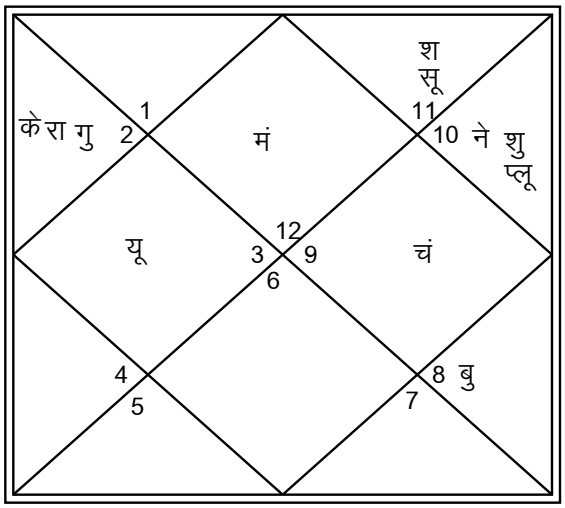

खवेदांश–शुभ फल

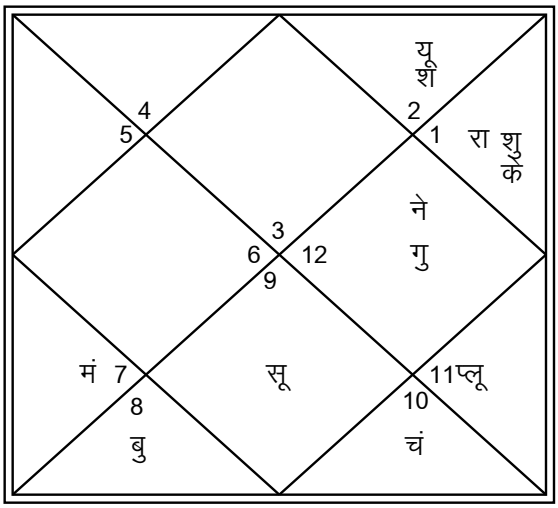

अक्षवेदांश–सामान्य जीवन

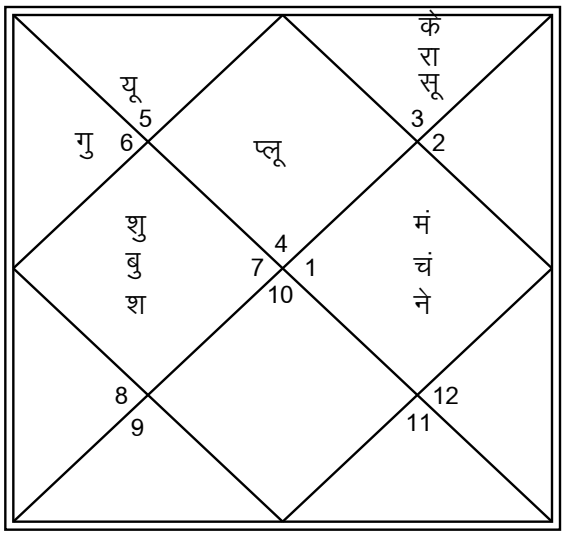

षष्टयंश–सामान्य जीवन

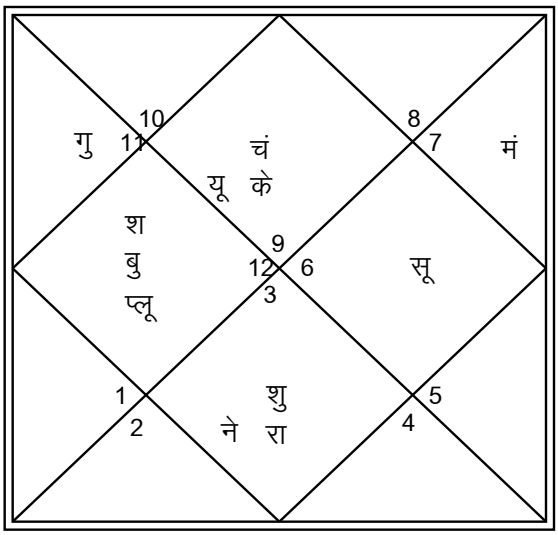

|| मैत्री चक्र ||

नैसर्गिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम
गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...

तात्कालिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
सूर्य	...	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	...	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	...	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	...	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	...

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
सूर्य	...	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु
चंद्र	सम	...	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	...	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	...	शत्रु	अतिमित्र	मित्र
गुरू	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिशत्रु	...	सम	मित्र
शुक्र	सम	अतिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	...	अतिमित्र
शनि	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	...

।। षड्बल एवं भावबल तालिका ।।

षड्बल, वैदिक ज्योतिष में एक विधि है जो ग्रहों और घरों की ताकत में त्वरित जानकारी देता है। संस्कृत, इसका मतलब है छह इसलिए षड्बल ताकत के 6 विभिन्न स्रोतों के होते हैं। षड्बल गणना एक थका देने वाली प्रक्रिया है लेकिन कंप्यूटर को एक धन्यवाद जो सिर्फ एक माउस क्लिक करके इन ताकत की गणना को प्राप्त कर सकते हैं। षड्बल विधि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक घर के लिए एक मूल्य देता है। अधिक अंक एक घर और एक ग्रह में प्राप्त होते है तो षड्बल मजबूत होता है।

षड्बल तालिका

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	21.1	54.46	16.89	44.43	59.64	1.44	36.66
सप्तवर्गज बल	144.38	97.5	112.5	90	135	121.88	88.12
ओजयुग्मरस्यांश बल	30	0	15	0	15	30	30
केन्द्र बल	60	15	30	15	15	30	60
द्रेष्काण बल	1	1	1	1	1	1	1
कुल स्थान बल	270.47	166.96	174.39	149.43	239.64	198.32	214.78
कुल दिग्बल	2.63	25.86	16.62	35.74	43.86	42.04	28.15
नतोनंत बल	2.55	57.45	57.45	60	2.55	2.55	57.45
पक्ष बल	23.23	23.23	23.23	36.77	36.77	36.77	23.23
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	89.04	11.22	23.85	48.04	56.32	21.87	17.02
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल काल बल	129.81	91.9	104.53	189.81	215.64	151.19	97.7
कुल चेष्टा बल	39.91	36.77	19.68	44.21	12.46	37.71	0.1
कुल नैसर्गिक बल	60	51.42	17.16	25.74	34.26	42.84	8.58
कुल द्रिक् बल	9.06	-5.06	8.55	9.76	8.63	11.05	9.06
कुल षड्बल	511.89	367.86	340.93	454.69	554.49	483.16	358.37
षड्बल (रुपस)	8.53	6.13	5.68	7.58	9.24	8.05	5.97
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	6.5	5.5	5
अनुपात	1.71	1.02	1.14	1.08	1.42	1.46	1.19
सापेक्षिक क्रम	1	7	5	6	3	2	4

भावबल तालिका

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपती बल	483.16	454.69	367.86	511.89	454.69	483.16	340.93	554.49	358.37	358.37	554.49	340.93
भाव दिग्बल	30	50	50	60	20	10	60	10	50	0	10	40
भावदृष्टि बल	-13.82	-7.81	8.75	9.7	21.51	72.12	74.95	23.51	71.98	90.02	76.23	22.06
कुल भाव बल	499.34	496.88	426.61	581.59	496.2	565.27	475.88	587.99	480.35	448.39	640.72	402.99
कुल भाव बल (रुपस में)	8.32	8.28	7.11	9.69	8.27	9.42	7.93	9.8	8.01	7.47	10.68	6.72
सापेक्षिक क्रम	5	6	11	3	7	4	9	2	8	10	1	12

।। केपी पद्धति ।।

नाम	Pooja Sharma			**सूर्योदय**	05. 54. 14	**दशा भोग्य**	VEN 15 Y 5 M 1 D
लिंग	Female	**रेखांश**	77.13.E	**तिथि**	षष्ठी	**सूर्यास्त**	18. 53. 28
दिनांक	23.8.1978	**अक्षांश**	28.40.N	**योग**	वृद्धि	**करण**	वणिज
दिन	बुधवार	**जन्म स्थान**	Delhi	**लग्न**	वृषभ	**लग्न स्वामी**	शुक्र
समय	23.53.18	**अयनांश**	023-28-06	**राशि**	मेष	**राशि स्वामी**	मंगल
साम्पातिक काल	21.38.53	**अयनांश नाम**	केपी	**नक्षत्र**	भरणी–1	**नक्षत्र स्वामी**	शुक्र

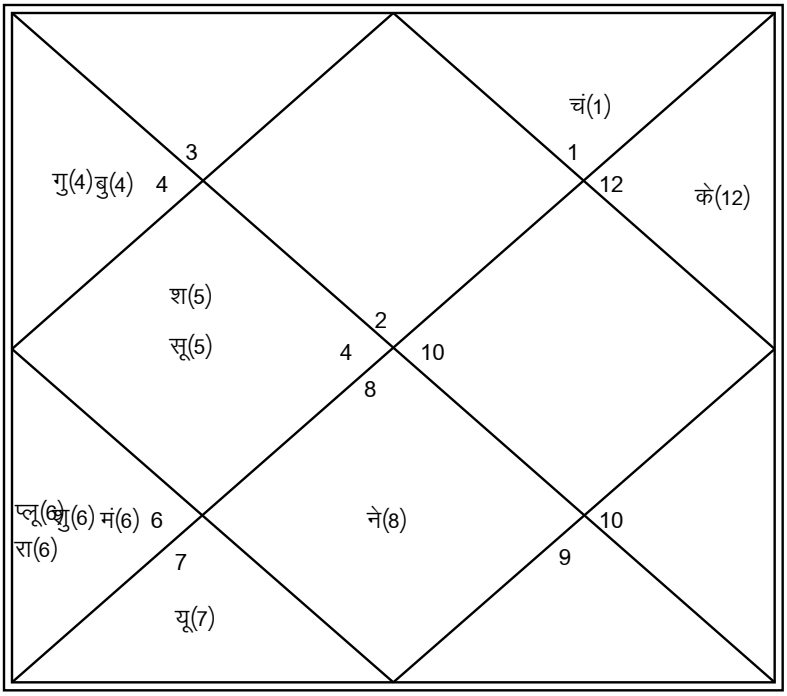

शासक ग्रह

ग्रह	राशि स्वामी	नक्षत्र	सब स्वामी
लग्न	शुक्र	चंद्र	गुरू
चन्द्र	मंगल	शुक्र	चंद्र
दिन स्वामी		बुध	

भाव स्थिति

भाव	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
1	045.35.37	शुक्र	चंद्र	गुरू	राहु
2	070.03.35	बुध	राहु	गुरू	चंद्र
3	093.13.51	चंद्र	गुरू	राहु	मंगल
4	118.53.48	चंद्र	बुध	शनि	शुक्र
5	150.17.12	बुध	सूर्य	राहु	बुध
6	187.50.31	शुक्र	राहु	राहु	केतु
7	225.35.37	मंगल	शनि	गुरू	बुध
8	250.03.35	गुरू	केतु	शनि	केतु
9	273.13.51	शनि	सूर्य	शनि	शनि
10	298.53.48	शनि	मंगल	शनि	शुक्र
11	330.17.12	गुरू	गुरू	चंद्र	केतु
12	007.50.31	मंगल	केतु	गुरू	शनि

ग्रह स्थिति

ग्रह	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
सूर्य	126.47.53	सूर्य	केतु	राहु	केतु
चन्द्र	016.28.33	मंगल	शुक्र	चंद्र	राहु
मंगल	168.46.11	बुध	चंद्र	बुध	मंगल
बुध	118.22.06	चंद्र	बुध	शनि	बुध
गुरू	094.00.03	चंद्र	शनि	शनि	केतु
शुक्र	172.46.05	बुध	चंद्र	सूर्य	मंगल
शनि	130.03.20	सूर्य	केतु	शनि	केतु
राहू	154.39.03	बुध	सूर्य	शनि	राहु
केतु	334.39.03	गुरू	शनि	शनि	चंद्र
अरूण	199.20.52	शुक्र	राहु	मंगल	राहु
वरूण	232.03.50	मंगल	बुध	सूर्य	बुध
यम	171.24.57	बुध	चंद्र	शुक्र	राहु

घर के कारक ग्रह

भाव	ग्रह
1	चं शु
2	बु
3	चं मं बु गु शु
4	सू चं मं गु शु श रा के
5	चं मं बु शु रा
6	चं शु
7	मं
8	गु
9	गु श के
10	गु श के
11	सू गु श के
12	चं मं शु

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4 11
चन्द्र	1 3 4 5 6 12
मंगल	3 4 5 7 12
बुध	2 3 5
गुरू	3 4 8 9 10 11
शुक्र	1 3 4 5 6 12
शनि	4 9 10 11
राहू	4 5
केतु	4 9 10 11

शुक्र –20 वर्ष
23/ 8/78 से 25/ 1/94

शुक्र	00/00/00
सूर्य	25/5/78
चंद्र	25/1/80
मंगल	25/3/81
राहु	25/3/84
गुरू	25/11/86
शनि	25/1/90
बुध	25/11/92
केतु	25/1/94

सूर्य –6 वर्ष
25/ 1/94 से 25/ 1/00

सूर्य	13/5/94
चंद्र	13/11/94
मंगल	19/3/95
राहु	13/2/96
गुरू	1/12/96
शनि	13/11/97
बुध	19/9/98
केतु	25/1/99
शुक्र	25/1/00

चंद्र –10 वर्ष
25/ 1/00 से 25/ 1/10

चंद्र	25/11/00
मंगल	25/6/01
राहु	25/12/02
गुरू	25/4/04
शनि	25/11/05
बुध	25/4/07
केतु	25/11/07
शुक्र	25/7/09
सूर्य	25/1/10

मंगल –7 वर्ष
25/ 1/10 से 25/ 1/17

मंगल	22/6/10
राहु	10/7/11
गुरू	16/6/12
शनि	25/7/13
बुध	22/7/14
केतु	19/12/14
शुक्र	19/2/16
सूर्य	25/6/16
चंद्र	25/1/17

राहु –18 वर्ष
25/ 1/17 से 25/ 1/35

राहु	7/10/19
गुरू	1/3/22
शनि	7/1/25
बुध	25/7/27
केतु	13/8/28
शुक्र	13/8/31
सूर्य	7/7/32
चंद्र	7/1/34
मंगल	25/1/35

गुरू –16 वर्ष
25/ 1/35 से 25/ 1/51

गुरू	13/3/37
शनि	25/9/39
बुध	1/1/42
केतु	7/12/42
शुक्र	7/8/45
सूर्य	25/5/46
चंद्र	25/9/47
मंगल	1/9/48
राहु	25/1/51

शनि –19 वर्ष
25/ 1/51 से 25/ 1/70

शनि	28/1/54
बुध	7/10/56
केतु	16/11/57
शुक्र	16/1/61
सूर्य	28/12/61
चंद्र	28/7/63
मंगल	7/9/64
राहु	13/7/67
गुरू	25/1/70

बुध –17 वर्ष
25/ 1/70 से 25/ 1/87

बुध	22/6/72
केतु	19/6/73
शुक्र	19/4/76
सूर्य	25/2/77
चंद्र	25/7/78
मंगल	22/7/79
राहु	10/2/82
गुरू	16/5/84
शनि	25/1/87

केतु –7 वर्ष
25/ 1/87 से 25/ 1/94

केतु	22/6/87
शुक्र	22/8/88
सूर्य	28/12/88
चंद्र	28/7/89
मंगल	25/12/89
राहु	13/1/91
गुरू	19/12/91
शनि	28/1/93
बुध	25/1/94

दशा भोग्यः VEN 15 Y 5 M 1 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः लाहिरी

शुक्र — चंद्र 23/ 8/78 से 25/ 1/80	
चंद्र	00/00/00
मंगल	00/00/00
राहु	20/11/78
गुरू	10/2/79
शनि	15/5/79
बुध	10/8/79
केतु	15/9/79
शुक्र	25/12/79
सूर्य	25/1/80

शुक्र — मंगल 25/ 1/80 से 25/ 3/81	
मंगल	19/2/80
राहु	22/4/80
गुरू	18/6/80
शनि	25/8/80
बुध	24/10/80
केतु	19/11/80
शुक्र	29/1/81
सूर्य	20/2/81
चंद्र	25/3/81

शुक्र — राहु 25/ 3/81 से 25/ 3/84	
राहु	7/9/81
गुरू	1/2/82
शनि	22/7/82
बुध	25/12/82
केतु	28/2/83
शुक्र	28/8/83
सूर्य	22/10/83
चंद्र	22/1/84
मंगल	25/3/84

शुक्र — गुरू 25/ 3/84 से 25/11/86	
गुरू	3/8/84
शनि	5/1/85
बुध	21/5/85
केतु	17/7/85
शुक्र	27/12/85
सूर्य	15/2/86
चंद्र	5/5/86
मंगल	1/7/86
राहु	25/11/86

शुक्र — शनि 25/11/86 से 25/ 1/90	
शनि	25/5/87
बुध	7/11/87
केतु	13/1/88
शुक्र	23/7/88
सूर्य	20/9/88
चंद्र	25/12/88
मंगल	2/3/89
राहु	23/8/89
गुरू	25/1/90

शुक्र — बुध 25/ 1/90 से 25/11/92	
बुध	19/6/90
केतु	19/8/90
शुक्र	9/2/91
सूर्य	30/3/91
चंद्र	25/6/91
मंगल	24/8/91
राहु	27/1/92
गुरू	13/6/92
शनि	25/11/92

शुक्र — केतु 25/11/92 से 25/ 1/94	
केतु	19/12/92
शुक्र	1/3/93
सूर्य	20/3/93
चंद्र	25/4/93
मंगल	20/5/93
राहु	23/7/93
गुरू	19/9/93
शनि	25/11/93
बुध	25/1/94

सूर्य — सूर्य 25/ 1/94 से 13/ 5/94	
सूर्य	30/1/94
चंद्र	9/2/94
मंगल	16/2/94
राहु	2/3/94
गुरू	16/3/94
शनि	3/4/94
बुध	19/4/94
केतु	25/4/94
शुक्र	13/5/94

सूर्य — चंद्र 13/ 5/94 से 13/11/94	
चंद्र	28/5/94
मंगल	8/6/94
राहु	5/7/94
गुरू	29/7/94
शनि	28/8/94
बुध	23/9/94
केतु	4/10/94
शुक्र	4/11/94
सूर्य	13/11/94

सूर्य — मंगल 13/11/94 से 19/ 3/95	
मंगल	20/11/94
राहु	9/12/94
गुरू	26/12/94
शनि	16/1/95
बुध	4/2/95
केतु	11/2/95
शुक्र	2/3/95
सूर्य	8/3/95
चंद्र	19/3/95

सूर्य — राहु 19/ 3/95 से 13/ 2/96	
राहु	8/5/95
गुरू	21/6/95
शनि	12/8/95
बुध	28/9/95
केतु	17/10/95
शुक्र	11/12/95
सूर्य	27/12/95
चंद्र	24/1/96
मंगल	13/2/96

सूर्य — गुरू 13/ 2/96 से 1/12/96	
गुरू	21/3/96
शनि	7/5/96
बुध	18/6/96
केतु	5/7/96
शुक्र	23/8/96
सूर्य	7/9/96
चंद्र	1/10/96
मंगल	18/10/96
राहु	1/12/96

सूर्य — शनि 1/12/96 से 13/11/97	
शनि	25/1/97
बुध	14/3/97
केतु	3/4/97
शुक्र	30/5/97
सूर्य	18/6/97
चंद्र	16/7/97
मंगल	6/8/97
राहु	27/9/97
गुरू	13/11/97

सूर्य — बुध 13/11/97 से 19/ 9/98	
बुध	26/12/97
केतु	14/1/98
शुक्र	5/3/98
सूर्य	20/3/98
चंद्र	16/4/98
मंगल	4/5/98
राहु	20/6/98
गुरू	30/7/98
शनि	19/9/98

सूर्य — केतु 19/ 9/98 से 25/ 1/99	
केतु	26/9/98
शुक्र	17/10/98
सूर्य	24/10/98
चंद्र	4/11/98
मंगल	11/11/98
राहु	30/11/98
गुरू	17/12/98
शनि	7/1/99
बुध	25/1/99

दशा भोग्यः VEN 15 Y 5 M 1 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः लाहिरी

सूर्य — शुक्र 25/ 1/99 से 25/ 1/00	
शुक्र	25/3/99
सूर्य	13/4/99
चंद्र	13/5/99
मंगल	4/6/99
राहु	28/7/99
गुरू	16/9/99
शनि	13/11/99
बुध	4/1/00
केतु	25/1/00

चंद्र — चंद्र 25/ 1/00 से 25/11/00	
चंद्र	20/2/00
मंगल	7/3/00
राहु	22/4/00
गुरू	2/6/00
शनि	20/7/00
बुध	2/9/00
केतु	20/9/00
शुक्र	10/11/00
सूर्य	25/11/00

चंद्र — मंगल 25/11/00 से 25/ 6/01	
मंगल	7/12/00
राहु	9/1/01
गुरू	7/2/01
शनि	10/3/01
बुध	10/4/01
केतु	22/4/01
शुक्र	27/5/01
सूर्य	7/6/01
चंद्र	25/6/01

चंद्र — राहु 25/ 6/01 से 25/12/02	
राहु	16/9/01
गुरू	28/11/01
शनि	23/2/02
बुध	10/5/02
केतु	11/6/02
शुक्र	11/9/02
सूर्य	8/10/02
चंद्र	23/11/02
मंगल	25/12/02

चंद्र — गुरू 25/12/02 से 25/ 4/04	
गुरू	1/3/03
शनि	15/5/03
बुध	23/7/03
केतु	21/8/03
शुक्र	11/11/03
सूर्य	5/12/03
चंद्र	15/1/04
मंगल	13/2/04
राहु	25/4/04

चंद्र — शनि 25/ 4/04 से 25/11/05	
शनि	25/7/04
बुध	16/10/04
केतु	19/11/04
शुक्र	24/2/05
सूर्य	23/3/05
चंद्र	10/5/05
मंगल	13/6/05
राहु	9/9/05
गुरू	25/11/05

चंद्र — बुध 25/11/05 से 25/ 4/07	
बुध	7/2/06
केतु	7/3/06
शुक्र	2/6/06
सूर्य	27/6/06
चंद्र	10/8/06
मंगल	10/9/06
राहु	26/11/06
गुरू	4/2/07
शनि	25/4/07

चंद्र — केतु 25/ 4/07 से 25/11/07	
केतु	7/5/07
शुक्र	12/6/07
सूर्य	23/6/07
चंद्र	10/7/07
मंगल	22/7/07
राहु	24/8/07
गुरू	22/9/07
शनि	25/10/07
बुध	25/11/07

चंद्र — शुक्र 25/11/07 से 25/ 7/09	
शुक्र	5/3/08
सूर्य	5/4/08
चंद्र	25/5/08
मंगल	30/6/08
राहु	30/9/08
गुरू	20/12/08
शनि	25/3/09
बुध	20/6/09
केतु	25/7/09

चंद्र — सूर्य 25/ 7/09 से 25/ 1/10	
सूर्य	4/8/09
चंद्र	19/8/09
मंगल	29/8/09
राहु	26/9/09
गुरू	20/10/09
शनि	19/11/09
बुध	14/12/09
केतु	25/12/09
शुक्र	25/1/10

मंगल — मंगल 25/ 1/10 से 22/ 6/10	
मंगल	4/2/10
राहु	26/2/10
गुरू	15/3/10
शनि	8/4/10
बुध	29/4/10
केतु	8/5/10
शुक्र	2/6/10
सूर्य	10/6/10
चंद्र	22/6/10

मंगल — राहु 22/ 6/10 से 10/ 7/11	
राहु	19/8/10
गुरू	9/10/10
शनि	9/12/10
बुध	2/2/11
केतु	24/2/11
शुक्र	27/4/11
सूर्य	16/5/11
चंद्र	18/6/11
मंगल	10/7/11

मंगल — गुरू 10/ 7/11 से 16/ 6/12	
गुरू	25/8/11
शनि	18/10/11
बुध	6/12/11
केतु	25/12/11
शुक्र	21/2/12
सूर्य	8/3/12
चंद्र	6/4/12
मंगल	26/4/12
राहु	16/6/12

मंगल — शनि 16/ 6/12 से 25/ 7/13	
शनि	19/8/12
बुध	16/10/12
केतु	9/11/12
शुक्र	15/1/13
सूर्य	5/2/13
चंद्र	9/3/13
मंगल	2/4/13
राहु	2/6/13
गुरू	25/7/13

मंगल — बुध 25/ 7/13 से 22/ 7/14	
बुध	16/9/13
केतु	6/10/13
शुक्र	6/12/13
सूर्य	24/12/13
चंद्र	23/1/14
मंगल	14/2/14
राहु	8/4/14
गुरू	25/5/14
शनि	22/7/14

दशा भोग्यः VEN 15 Y 5 M 1 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः लाहिरी

मंगल — बुध 25/ 7/13 से 22/ 7/14	
बुध	16/ 9/13
केतु	6/10/13
शुक्र	6/12/13
सूर्य	24/12/13
चंद्र	23/ 1/14
मंगल	14/ 2/14
राहु	8/ 4/14
गुरू	25/ 5/14
शनि	22/ 7/14

मंगल — केतु 22/ 7/14 से 19/12/14	
केतु	1/ 8/14
शुक्र	25/ 8/14
सूर्य	2/ 9/14
चंद्र	15/ 9/14
मंगल	23/ 9/14
राहु	15/10/14
गुरू	5/11/14
शनि	28/11/14
बुध	19/12/14

मंगल — शुक्र 19/12/14 से 19/ 2/16	
शुक्र	1/ 3/15
सूर्य	20/ 3/15
चंद्र	25/ 4/15
मंगल	19/ 5/15
राहु	22/ 7/15
गुरू	18/ 9/15
शनि	25/11/15
बुध	24/ 1/16
केतु	19/ 2/16

मंगल — सूर्य 19/ 2/16 से 25/ 6/16	
सूर्य	25/ 2/16
चंद्र	6/ 3/16
मंगल	13/ 3/16
राहु	2/ 4/16
गुरू	19/ 4/16
शनि	9/ 5/16
बुध	27/ 5/16
केतु	4/ 6/16
शुक्र	25/ 6/16

मंगल — चंद्र 25/ 6/16 से 25/ 1/17	
चंद्र	12/ 7/16
मंगल	25/ 7/16
राहु	26/ 8/16
गुरू	24/ 9/16
शनि	27/10/16
बुध	27/11/16
केतु	9/12/16
शुक्र	14/ 1/17
सूर्य	25/ 1/17

राहु — राहु 25/ 1/17 से 7/10/19	
राहु	21/ 6/17
गुरू	30/10/17
शनि	4/ 4/18
बुध	22/ 8/18
केतु	19/10/18
शुक्र	1/ 4/19
सूर्य	19/ 5/19
चंद्र	10/ 8/19
मंगल	7/10/19

राहु — गुरू 7/10/19 से 1/ 3/22	
गुरू	2/ 2/20
शनि	19/ 6/20
बुध	21/10/20
केतु	12/12/20
शुक्र	6/ 5/21
सूर्य	19/ 6/21
चंद्र	1/ 9/21
मंगल	21/10/21
राहु	1/ 3/22

राहु — शनि 1/ 3/22 से 7/ 1/25	
शनि	13/ 8/22
बुध	9/ 1/23
केतु	9/ 3/23
शुक्र	30/ 8/23
सूर्य	21/10/23
चंद्र	16/ 1/24
मंगल	16/ 3/24
राहु	20/ 8/24
गुरू	7/ 1/25

राहु — बुध 7/ 1/25 से 25/ 7/27	
बुध	17/ 5/25
केतु	11/ 7/25
शुक्र	14/12/25
सूर्य	29/ 1/26
चंद्र	16/ 4/26
मंगल	9/ 6/26
राहु	27/10/26
गुरू	2/ 3/27
शनि	25/ 7/27

राहु — केतु 25/ 7/27 से 13/ 8/28	
केतु	17/ 8/27
शुक्र	20/10/27
सूर्य	9/11/27
चंद्र	10/12/27
मंगल	2/ 1/28
राहु	1/ 3/28
गुरू	20/ 4/28
शनि	19/ 6/28
बुध	13/ 8/28

राहु — शुक्र 13/ 8/28 से 13/ 8/31	
शुक्र	13/ 2/29
सूर्य	7/ 4/29
चंद्र	7/ 7/29
मंगल	10/ 9/29
राहु	22/ 2/30
गुरू	16/ 7/30
शनि	7/ 1/31
बुध	10/ 6/31
केतु	13/ 8/31

राहु — सूर्य 13/ 8/31 से 7/ 7/32	
सूर्य	29/ 8/31
चंद्र	26/ 9/31
मंगल	15/10/31
राहु	4/12/31
गुरू	17/ 1/32
शनि	8/ 3/32
बुध	24/ 4/32
केतु	13/ 5/32
शुक्र	7/ 7/32

राहु — चंद्र 7/ 7/32 से 7/ 1/34	
चंद्र	22/ 8/32
मंगल	23/ 9/32
राहु	14/12/32
गुरू	26/ 2/33
शनि	22/ 5/33
बुध	8/ 8/33
केतु	10/ 9/33
शुक्र	10/12/33
सूर्य	7/ 1/34

राहु — मंगल 7/ 1/34 से 25/ 1/35	
मंगल	29/ 1/34
राहु	26/ 3/34
गुरू	16/ 5/34
शनि	16/ 7/34
बुध	9/ 9/34
केतु	2/10/34
शुक्र	5/12/34
सूर्य	23/12/34
चंद्र	25/ 1/35

गुरू — गुरू 25/ 1/35 से 13/ 3/37	
गुरू	7/ 5/35
शनि	9/ 9/35
बुध	28/12/35
केतु	13/ 2/36
शुक्र	21/ 6/36
सूर्य	29/ 7/36
चंद्र	3/10/36
मंगल	18/11/36
राहु	13/ 3/37

दशा भोग्यः VEN 15 Y 5 M 1 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः लाहिरी

गुरू — बुध 25/ 9/39 से 1/ 1/42	
बुध	21/ 1/40
केतु	8/ 3/40
शुक्र	24/ 7/40
सूर्य	5/ 9/40
चंद्र	13/11/40
मंगल	1/ 1/41
राहु	3/ 5/41
गुरू	22/ 8/41
शनि	1/ 1/42

गुरू — केतु 1/ 1/42 से 7/12/42	
केतु	21/ 1/42
शुक्र	17/ 3/42
सूर्य	3/ 4/42
चंद्र	1/ 5/42
मंगल	21/ 5/42
राहु	11/ 7/42
गुरू	26/ 8/42
शनि	19/10/42
बुध	7/12/42

गुरू — शुक्र 7/12/42 से 7/ 8/45	
शुक्र	17/ 5/43
सूर्य	5/ 7/43
चंद्र	25/ 9/43
मंगल	21/11/43
राहु	15/ 4/44
गुरू	23/ 8/44
शनि	25/ 1/45
बुध	11/ 6/45
केतु	7/ 8/45

गुरू — सूर्य 7/ 8/45 से 25/ 5/46	
सूर्य	21/ 8/45
चंद्र	15/ 9/45
मंगल	2/10/45
राहु	15/11/45
गुरू	24/12/45
शनि	9/ 2/46
बुध	20/ 3/46
केतु	7/ 4/46
शुक्र	25/ 5/46

गुरू — चंद्र 25/ 5/46 से 25/ 9/47	
चंद्र	5/ 7/46
मंगल	3/ 8/46
राहु	15/10/46
गुरू	19/12/46
शनि	5/ 3/47
बुध	13/ 5/47
केतु	11/ 6/47
शुक्र	1/ 9/47
सूर्य	25/ 9/47

गुरू — मंगल 25/ 9/47 से 1/ 9/48	
मंगल	15/10/47
राहु	5/12/47
गुरू	20/ 1/48
शनि	13/ 3/48
बुध	1/ 5/48
केतु	20/ 5/48
शुक्र	16/ 7/48
सूर्य	3/ 8/48
चंद्र	1/ 9/48

गुरू — राहु 1/ 9/48 से 25/ 1/51	
राहु	11/ 1/49
गुरू	6/ 5/49
शनि	23/ 9/49
बुध	25/ 1/50
केतु	15/ 3/50
शुक्र	9/ 8/50
सूर्य	23/ 9/50
चंद्र	5/12/50
मंगल	25/ 1/51

शनि — शनि 25/ 1/51 से 28/ 1/54	
शनि	16/ 7/51
बुध	20/12/51
केतु	23/ 2/52
शुक्र	24/ 8/52
सूर्य	18/10/52
चंद्र	18/ 1/53
मंगल	21/ 3/53
राहु	4/ 9/53
गुरू	28/ 1/54

शनि — बुध 28/ 1/54 से 7/10/56	
बुध	15/ 6/54
केतु	12/ 8/54
शुक्र	23/ 1/55
सूर्य	12/ 3/55
चंद्र	2/ 6/55
मंगल	29/ 7/55
राहु	24/12/55
गुरू	4/ 5/56
शनि	7/10/56

शनि — केतु 7/10/56 से 16/11/57	
केतु	30/10/56
शुक्र	7/ 1/57
सूर्य	27/ 1/57
चंद्र	2/ 3/57
मंगल	23/ 3/57
राहु	23/ 5/57
गुरू	16/ 7/57
शनि	19/ 9/57
बुध	16/11/57

शनि — शुक्र 16/11/57 से 16/ 1/61	
शुक्र	26/ 5/58
सूर्य	23/ 7/58
चंद्र	28/10/58
मंगल	4/ 1/59
राहु	25/ 6/59
गुरू	27/11/59
शनि	28/ 5/60
बुध	9/11/60
केतु	16/ 1/61

शनि — सूर्य 16/ 1/61 से 28/12/61	
सूर्य	3/ 2/61
चंद्र	2/ 3/61
मंगल	21/ 3/61
राहु	13/ 5/61
गुरू	28/ 6/61
शनि	23/ 8/61
बुध	11/10/61
केतु	1/11/61
शुक्र	28/12/61

शनि — चंद्र 28/12/61 से 28/ 7/63	
चंद्र	15/ 2/62
मंगल	19/ 3/62
राहु	14/ 6/62
गुरू	30/ 8/62
शनि	30/11/62
बुध	21/ 2/63
केतु	24/ 3/63
शुक्र	29/ 6/63
सूर्य	28/ 7/63

शनि — मंगल 28/ 7/63 से 7/ 9/64	
मंगल	21/ 8/63
राहु	21/10/63
गुरू	14/12/63
शनि	17/ 2/64
बुध	14/ 4/64
केतु	7/ 5/64
शुक्र	14/ 7/64
सूर्य	4/ 8/64
चंद्र	7/ 9/64

शनि — राहु 7/ 9/64 से 13/ 7/67	
राहु	11/ 2/65
गुरू	28/ 6/65
शनि	10/12/65
बुध	5/ 5/66
केतु	5/ 7/66
शुक्र	26/12/66
सूर्य	18/ 2/67
चंद्र	13/ 5/67
मंगल	13/ 7/67

।। योगिनी दशा ।।

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	10. 2.78
अंत	1. 7.82
भद्रि	10. 2.78
उल	10.12.78
सि	30.11.79
सं	9. 1.81
मं	1. 3.81
पिं	11. 6.81
ध	11.11.81
भ्र	1. 7.82

उल 6 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.82
अंत	1. 7.88
उल	31. 5.83
सि	31. 7.84
सं	30.11.85
मं	30. 1.86
पिं	30. 5.86
ध	30.11.86
भ्र	30. 7.87
भद्रि	1. 7.88

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.88
अंत	1. 7.95
सि	10.10.89
सं	30. 4.91
मं	10. 7.91
पिं	30.11.91
ध	30. 6.92
भ्र	9. 4.93
भद्रि	29. 3.94
उल	1. 7.95

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.95
अंत	1. 7.03
सं	11. 3.97
मं	31. 5.97
पिं	10.11.97
ध	10. 7.98
भ्र	30. 5.99
भद्रि	10. 7.00
उल	9.11.01
सि	1. 7.03

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.03
अंत	1. 7.04
मं	8. 6.03
पिं	28. 6.03
ध	28. 7.03
भ्र	7. 9.03
भद्रि	27.10.03
उल	27.12.03
सि	8. 3.04
सं	1. 7.04

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.04
अंत	1. 7.06
पिं	8. 7.04
ध	8. 9.04
भ्र	28.11.04
भद्रि	10. 3.05
उल	10. 7.05
सि	30.11.05
सं	10. 5.06
मं	1. 7.06

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.06
अंत	1. 7.09
ध	30. 8.06
भ्र	30.12.06
भद्रि	30. 5.07
उल	30.11.07
सि	29. 6.08
सं	1. 3.09
मं	1. 4.09
पिं	1. 7.09

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.09
अंत	1. 7.13
भ्र	11.11.09
भद्रि	31. 5.10
उल	31. 1.11
सि	10.11.11
सं	30. 9.12
मं	9.11.12
पिं	29. 1.13
ध	1. 7.13

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.13
अंत	1. 7.18
भद्रि	8. 2.14
उल	8.12.14
सि	28.11.15
सं	7. 1.17
मं	27. 2.17
पिं	6. 6.17
ध	6.11.17
भ्र	1. 7.18

उल 6 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.18
अंत	1. 7.24
उल	26. 5.19
सि	26. 7.20
सं	25.11.21
मं	25. 1.22
पिं	25. 5.22
ध	25.11.22
भ्र	25. 7.23
भद्रि	1. 7.24

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.24
अंत	1. 7.31
सि	5.10.25
सं	25. 4.27
मं	5. 7.27
पिं	25.11.27
ध	25. 6.28
भ्र	4. 4.29
भद्रि	24. 3.30
उल	1. 7.31

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.31
अंत	1. 7.39
सं	6. 3.33
मं	26. 5.33
पिं	5.11.33
ध	5. 7.34
भ्र	25. 5.35
भद्रि	5. 7.36
उल	4.11.37
सि	1. 7.39

।। योगिनी दशा ।।

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.39
अंत	1. 7.40
मं	3. 6.39
पिं	23. 6.39
ध	23. 7.39
भ्र	2. 9.39
भद्रि	22.10.39
उल	22.12.39
सि	3. 3.40
सं	1. 7.40

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.40
अंत	1. 7.42
पिं	3. 7.40
ध	3. 9.40
भ्र	23.11.40
भद्रि	5. 3.41
उल	5. 7.41
सि	25.11.41
सं	5. 5.42
मं	1. 7.42

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.42
अंत	1. 7.45
ध	25. 8.42
भ्र	25.12.42
भद्रि	25. 5.43
उल	25.11.43
सि	24. 6.44
सं	24. 2.45
मं	24. 3.45
पिं	1. 7.45

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.45
अंत	1. 7.49
भ्र	3.11.45
भद्रि	23. 5.46
उल	23. 1.47
सि	2.11.47
सं	22. 9.48
मं	1.11.48
पिं	21. 1.49
ध	1. 7.49

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.49
अंत	1. 7.54
भद्रि	31. 1.50
उल	1.12.50
सि	21.11.51
सं	31.12.52
मं	20. 2.53
पिं	30. 5.53
ध	30.10.53
भ्र	1. 7.54

उल 6 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.54
अंत	1. 7.60
उल	20. 5.55
सि	20. 7.56
सं	19.11.57
मं	19. 1.58
पिं	19. 5.58
ध	19.11.58
भ्र	19. 7.59
भद्रि	1. 7.60

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.60
अंत	1. 7.67
सि	29. 9.61
सं	18. 4.63
मं	28. 6.63
पिं	17.11.63
ध	17. 6.64
भ्र	27. 3.65
भद्रि	19. 3.66
उल	1. 7.67

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.67
अंत	1. 7.75
सं	1. 3.69
मं	21. 5.69
पिं	31.10.69
ध	1. 7.70
भ्र	21. 5.71
भद्रि	1. 7.72
उल	31.10.73
सि	1. 7.75

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.75
अंत	1. 7.76
मं	31. 5.75
पिं	20. 6.75
ध	20. 7.75
भ्र	30. 8.75
भद्रि	20.10.75
उल	20.12.75
सि	1. 3.76
सं	1. 7.76

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.76
अंत	1. 7.78
पिं	1. 7.76
ध	1. 9.76
भ्र	21.11.76
भद्रि	3. 3.77
उल	3. 7.77
सि	23.11.77
सं	3. 5.78
मं	1. 7.78

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.78
अंत	1. 7.81
ध	23. 8.78
भ्र	23.12.78
भद्रि	23. 5.79
उल	23.11.79
सि	22. 6.80
सं	22. 2.81
मं	22. 3.81
पिं	1. 7.81

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	1. 7.81
अंत	1. 7.85
भ्र	1.11.81
भद्रि	21. 5.82
उल	21. 1.83
सि	31.10.83
सं	20. 9.84
मं	30.10.84
पिं	19. 1.85
ध	1. 7.85

।। जैमिनी पद्धति – कारकांश एवं स्वांश ।।

कारकांश चक्र

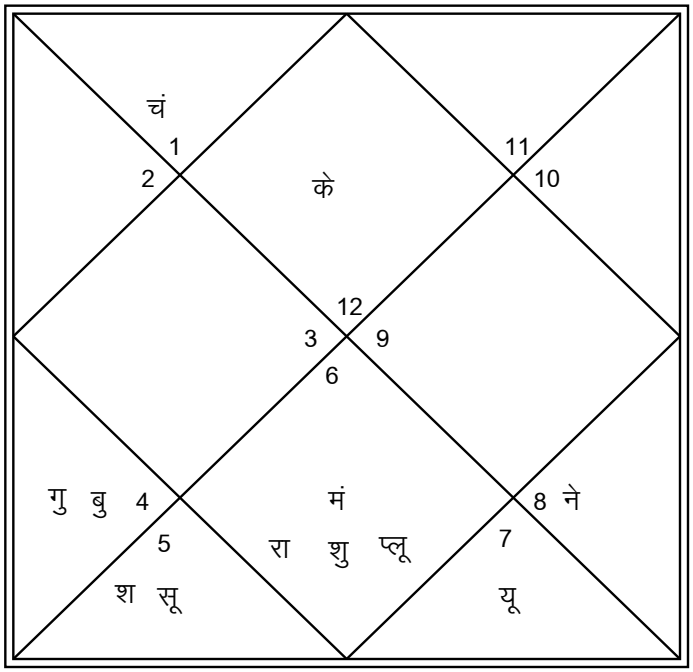

स्वांश चक्र

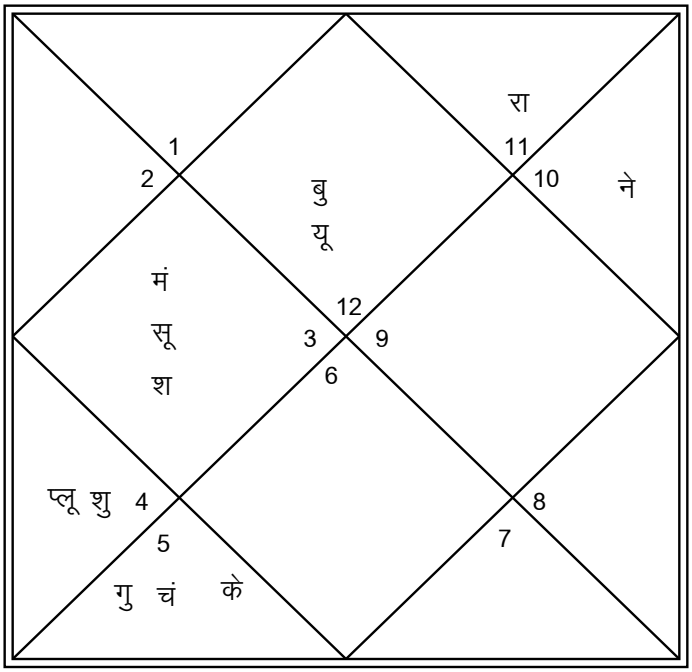

कारक

कारक	स्थिर	चर
आत्म	सूर्य	बुध
आमात्य	बुध	शुक्र
भ्रात	मंगल	मंगल
मातृ	चंद्र	चंद्र
पितृ	गुरू	शनि
ज्ञाति	शनि	सूर्य
दारा	शुक्र	गुरू

अवस्था

ग्रह	जागृत	बलादि	दीप्तादि
सूर्य	जाग्रत	कुमार	दीप्त
चंद्र	स्वप्न	युवा	मुदित
मंगल	स्वप्न	कुमार	खल
बुध	जाग्रत	बाल	दीन
गुरू	सुसुप्त	मृत	दीन
शुक्र	जाग्रत	कुमार	दीन
शनि	जाग्रत	कुमार	मुदित

।। चरदशा ।।

चर महादशा

वृष 04 वर्ष	23. 8.78	23. 8.82
मेष 05 वर्ष	23. 8.82	23. 8.87
मीन 08 वर्ष	23. 8.87	23. 8.95

कुंभ 05 वर्ष	23. 8.95	23. 8.00
मकर 05 वर्ष	23. 8.00	23. 8.05
धनु 07 वर्ष	23. 8.05	23. 8.12

वृश्चिक 10 वर्ष	23. 8.12	23. 8.22
तुला 11 वर्ष	23. 8.22	23. 8.33
कन्या 02 वर्ष	23. 8.33	23. 8.35

सिंह 12 वर्ष	23. 8.35	23. 8.47
कर्क 03 वर्ष	23. 8.47	23. 8.50
मिथुन 01 वर्ष	23. 8.50	23. 8.51

चर अन्तरदशा

वृष 4 वर्ष		
मेष	23.8.78	23.12.78
मीन	23.12.78	23. 4.79
कुंभ	23.4.79	23. 8.79
मकर	23.8.79	23.12.79
धनु	23.12.79	23. 4.80
वृश्चिक	23.4.80	23. 8.80
तुला	23.8.80	23.12.80
कन्या	23.12.80	23. 4.81
सिंह	23.4.81	23. 8.81
कर्क	23.8.81	23.12.81
मिथुन	23.12.81	23. 4.82
वृष	23.4.82	23. 8.82

मेष 5 वर्ष		
वृष	23.8.82	23. 1.83
मिथुन	23.1.83	23. 6.83
कर्क	23.6.83	23.11.83
सिंह	23.11.83	23. 4.84
कन्या	23.4.84	23. 9.84
तुला	23.9.84	23. 2.85
वृश्चिक	23.2.85	23. 7.85
धनु	23.7.85	23.12.85
मकर	23.12.85	23. 5.86
कुंभ	23.5.86	23.10.86
मीन	23.10.86	23. 3.87
मेष	23.3.87	23. 8.87

मीन 8 वर्ष		
मेष	23.8.87	23. 4.88
वृष	23.4.88	23.12.88
मिथुन	23.12.88	23. 8.89
कर्क	23.8.89	23. 4.90
सिंह	23.4.90	23.12.90
कन्या	23.12.90	23. 8.91
तुला	23.8.91	23. 4.92
वृश्चिक	23.4.92	23.12.92
धनु	23.12.92	23. 8.93
मकर	23.8.93	23. 4.94
कुंभ	23.4.94	23.12.94
मीन	23.12.94	23. 8.95

।। चरदशा ।।

कुंभ 5 वर्ष		
मीन	23.8.95	23. 1.96
मेष	23.1.96	23. 6.96
वृष	23.6.96	23.11.96
मिथुन	23.11.96	23. 4.97
कर्क	23.4.97	23. 9.97
सिंह	23.9.97	23. 2.98
कन्या	23.2.98	23. 7.98
तुला	23.7.98	23.12.98
वृश्चिक	23.12.98	23. 5.99
धनु	23.5.99	23.10.99
मकर	23.10.99	23. 3.00
कुंभ	23.3.00	23. 8.00

मकर 5 वर्ष		
धनु	23.8.00	23. 1.01
वृश्चिक	23.1.01	23. 6.01
तुला	23.6.01	23.11.01
कन्या	23.11.01	23. 4.02
सिंह	23.4.02	23. 9.02
कर्क	23.9.02	23. 2.03
मिथुन	23.2.03	23. 7.03
वृष	23.7.03	23.12.03
मेष	23.12.03	23. 5.04
मीन	23.5.04	23.10.04
कुंभ	23.10.04	23. 3.05
मकर	23.3.05	23. 8.05

धनु 7 वर्ष		
वृश्चिक	23.8.05	23. 3.06
तुला	23.3.06	23.10.06
कन्या	23.10.06	23. 5.07
सिंह	23.5.07	23.12.07
कर्क	23.12.07	23. 7.08
मिथुन	23.7.08	23. 2.09
वृष	23.2.09	23. 9.09
मेष	23.9.09	23. 4.10
मीन	23.4.10	23.11.10
कुंभ	23.11.10	23. 6.11
मकर	23.6.11	23. 1.12
धनु	23.1.12	23. 8.12

वृश्चिक 10 वर्ष		
तुला	23.8.12	23. 6.13
कन्या	23.6.13	23. 4.14
सिंह	23.4.14	23. 2.15
कर्क	23.2.15	23.12.15
मिथुन	23.12.15	23.10.16
वृष	23.10.16	23. 8.17
मेष	23.8.17	23. 6.18
मीन	23.6.18	23. 4.19
कुंभ	23.4.19	23. 2.20
मकर	23.2.20	23.12.20
धनु	23.12.20	23.10.21
वृश्चिक	23.10.21	23. 8.22

तुला 11 वर्ष		
वृश्चिक	23.8.22	23. 7.23
धनु	23.7.23	23. 6.24
मकर	23.6.24	23. 5.25
कुंभ	23.5.25	23. 4.26
मीन	23.4.26	23. 3.27
मेष	23.3.27	23. 2.28
वृष	23.2.28	23. 1.29
मिथुन	23.1.29	23.12.29
कर्क	23.12.29	23.11.30
सिंह	23.11.30	23.10.31
कन्या	23.10.31	23. 9.32
तुला	23.9.32	23. 8.33

कन्या 2 वर्ष		
तुला	23.8.33	23.10.33
वृश्चिक	23.10.33	23.12.33
धनु	23.12.33	23. 2.34
मकर	23.2.34	23. 4.34
कुंभ	23.4.34	23. 6.34
मीन	23.6.34	23. 8.34
मेष	23.8.34	23.10.34
वृष	23.10.34	23.12.34
मिथुन	23.12.34	23. 2.35
कर्क	23.2.35	23. 4.35
सिंह	23.4.35	23. 6.35
कन्या	23.6.35	23. 8.35

सिंह 12 वर्ष		
कन्या	23.8.35	23. 8.36
तुला	23.8.36	23. 8.37
वृश्चिक	23.8.37	23. 8.38
धनु	23.8.38	23. 8.39
मकर	23.8.39	23. 8.40
कुंभ	23.8.40	23. 8.41
मीन	23.8.41	23. 8.42
मेष	23.8.42	23. 8.43
वृष	23.8.43	23. 8.44
मिथुन	23.8.44	23. 8.45
कर्क	23.8.45	23. 8.46
सिंह	23.8.46	23. 8.47

कर्क 3 वर्ष		
मिथुन	23.8.47	23.11.47
वृष	23.11.47	23. 2.48
मेष	23.2.48	23. 5.48
मीन	23.5.48	23. 8.48
कुंभ	23.8.48	23.11.48
मकर	23.11.48	23. 2.49
धनु	23.2.49	23. 5.49
वृश्चिक	23.5.49	23. 8.49
तुला	23.8.49	23.11.49
कन्या	23.11.49	23. 2.50
सिंह	23.2.50	23. 5.50
कर्क	23.5.50	23. 8.50

मिथुन 1 वर्ष		
वृष	23.8.50	23. 9.50
मेष	23.9.50	23.10.50
मीन	23.10.50	23.11.50
कुंभ	23.11.50	23.12.50
मकर	23.12.50	23. 1.51
धनु	23.1.51	23. 2.51
वृश्चिक	23.2.51	23. 3.51
तुला	23.3.51	23. 4.51
कन्या	23.4.51	23. 5.51
सिंह	23.5.51	23. 6.51
कर्क	23.6.51	23. 7.51
मिथुन	23.7.51	23. 8.51

।। ग्रह दृष्टि (पाश्चात्य) ।।

	सूर्य 126 42	चंद्र 16 23	मंगल 168 40	बुध 118 16	गुरू 93 54	शुक्र 172 40	शनि 129 57	राहु 154 33	केतु 334 33	अरूण 199 15	वरूण 231 58	यम 171 19
सूर्य 126. 42	..	..	..	..	..	अर्धद्वितीय 0.03	युति 7.83	..	..	पंचा 0.45	..	अर्धद्वितीय 0.62
चंद्र 16. 23	..	..	..	..	..	..	..	..	..	सप्त 8.09	..	..
मंगल 168. 40	..	..	..	..	..	युति 7.33	..	..	सप्त 0.59	..	तृती 1.35	युति 8.24
बुध 118. 16	युति 4.38	..	..	..	..	तृती 0.2	युति 2.21	..	..	..	..	..
गुरू 93. 54	..	..	..	..	..	..	..	तृती 2.68	..	..	..	..
शुक्र 172. 40	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	तृती 2.65	..
शनि 129. 57	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
राहु 154. 33	..	..	युति 0.59	..	..	..	..	..	सप्त 10.0	अर्धद्वितीय 0.7	..	..
केतु 334. 33	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
अरूण 199. 15	..	..	..	..	..	..	..	..	अष्टा 0.7	..	..	..
वरूण 231. 58	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
यम 171. 19	..	..	..	..	..	युति 9.1	..	..	..	..	तृती 2.68	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त–दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त–दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।
3. ग्रहों के नाम के नीचे ग्रहों के अंश व कला दिए गए हैं।
4. एप्पलाइंग दृष्टि के लिए बांए से ऊपर देखें और सेपरेटिंग दृष्टि के लिए ऊपर से बांए देखें।

।। भावमध्य पर दृष्टि ।।

	1 45 30	2 69 56	3 94 22	4 118 48	5 154 22	6 189 56	7 225 30	8 249 56	9 274 22	10 298 48	11 334 22	12 9 56
सूर्य 126. 42	..	..	..	..	..	तृती 1.38	..	पंच 1.38	..	सप्त 4.73	..	..
चंद्र 16. 23	..	..	..	..	..	सप्त 5.7	..	..	..	..	..	..
मंगल 168. 40	..	..	..	..	..	..	तृती 1.41	..	..	..	सप्त 0.46	..
बुध 118. 16	..	..	..	युति 9.65	..	पंचा 0.66	..	..	..	सप्त 9.65	..	..
गुरू 93. 54	..	..	युति 9.69	..	तृती 2.77	..	..	..	सप्त 9.69	..	..	..
शुक्र 172. 40	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
शनि 129. 57	..	..	..	..	..	तृती 2.99	चतुर्थ 0.23	पंच 2.99	..	सप्त 2.56	..	..
राहु 154. 33	..	..	..	..	..	..	..	चतुर्थ 0.31	पंच 2.91	..	सप्त 9.87	..
केतु 334. 33	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
अरूण 199. 15	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	अष्टा 0.89	..
वरूण 231. 58	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
यम 171. 19	..	..	..	..	..	..	तृती 0.09	..	..	..	..	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त–दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त–दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	पष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।
3. चलित चक्र की भावमध्य अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।
4. तालिका में ग्रहों की भाव मध्य पर एप्पलाइड दिखाई गई है।

।। केपी संधि पर दृष्टि ।।

	1 45 35	2 70 3	3 93 13	4 118 53	5 150 17	6 187 50	7 225 35	8 250 3	9 273 13	10 298 53	11 330 17	12 7 50
सूर्य **126. 42**	..	..	..	..	..	तृती 2.43	..	पंच 1.32	..	सप्त 4.79	..	..
चंद्र **16. 23**	..	..	..	..	..	सप्त 4.3	..	..	..	..	..	..
मंगल **168. 40**	..	..	..	..	..	..	तृती 1.46	..	..	..	..	..
बुध **118. 16**	..	..	..	युति 9.59	..	..	..	..	..	सप्त 9.59	..	..
गुरू **93. 54**	..	..	..	..	तृती 1.19	चतुर्थ 1.03	..	..	सप्त 9.55	..	..	..
शुक्र **172. 40**	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
शनि **129. 57**	..	..	..	..	..	तृती 1.94	चतुर्थ 0.19	पंच 2.95	..	सप्त 2.62	..	..
राहु **154. 33**	..	..	..	..	..	..	पंचा 0.03	चतुर्थ 0.25	पंच 2.33	..	सप्त 7.15	..
केतु **334. 33**	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
अरूण **199. 15**	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
वरूण **231. 58**	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..
यम **171. 19**	..	..	..	..	..	..	तृती 0.13	..	..	..	..	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त–दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त–दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।
3. निरयन भाव चलित (केपी चक्र) के भाव प्रारम्भ अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।
4. तालिका में ग्रहों की केपी भाव प्रारम्भ पर एप्पलाइड दृष्टि दिखाई गई है।

।। अष्टकवर्ग तालिका ।।

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	5	5	5	2	4	5	2	4	3	1	5	7
चन्द्र	3	5	6	5	0	2	7	3	2	7	6	3
मंगल	4	5	5	3	2	3	3	2	4	1	4	3
बुध	5	7	6	5	2	5	3	4	6	3	4	4
गुरू	4	6	4	5	5	4	8	3	4	4	5	4
शुक्र	4	7	5	5	3	3	2	6	5	3	3	6
शनि	1	4	6	3	4	2	2	3	3	2	6	3
योग	26	39	37	28	20	24	27	25	27	21	33	30

अष्टकवर्ग चार्टः

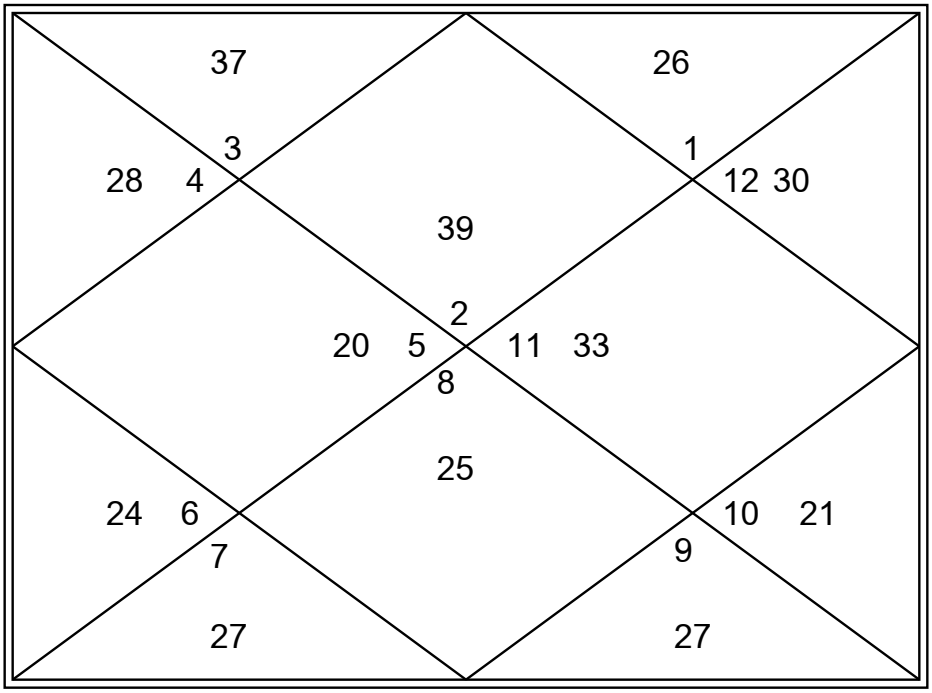

।। प्रस्तरअष्टकवर्ग तालिका ।।

सूर्य

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
चन्द्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बुध	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	7
गुरू	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	3
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
राहू	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
योग	5	5	5	2	4	5	2	4	3	1	5	7	

चन्द्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
चन्द्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरू	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
राहू	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
योग	3	5	6	5	0	2	7	3	2	7	6	3	

मंगल

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	5
चन्द्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरू	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
राहू	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
योग	4	5	5	3	2	3	3	2	4	1	4	3	

बुध

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	5
चन्द्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बुध	1	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	8
गुरू	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
राहू	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
योग	5	7	6	5	2	5	3	4	6	3	4	4	

गुरू

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	9
चन्द्र	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
गुरू	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
शुक्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	6
शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
राहू	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
योग	4	6	4	5	5	4	8	3	4	4	5	4	

शुक्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	3
चन्द्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	5
गुरू	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	9
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
राहू	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
योग	4	7	5	5	3	3	2	6	5	3	3	6	

शनि

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
चन्द्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
गुरू	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
राहू	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
योग	1	4	6	3	4	2	2	3	3	2	6	3	

Disclaimer

We want to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report is provided as-is and we provides no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case any disputes the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).

पता:

ए-139, सेक्टर 63, नोएडा (उत्तर प्रदेश) 201303. भारत

संपर्क करें:

फोन: +91 95606 70006, 120 4138503

ईमेल: query@astrosage.com

वेब: www.AstroSage.com